श्री
जिनसहस्त्रनाम विधान

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री जिनसहस्त्रनाम विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम
कवर-पृष्ठ	:	प्राची जैन शिवपुरी
प्रसंग	:	२२वाँ चातुर्मास २०२०
		शिवपुरी (म. प्र.)
लागत मूल्य	:	५०/-
प्रकाशक एवं		
प्राप्ति स्थान	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
		सम्पर्क—९४२५१२८८१७
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

स्व. श्रीमती कमलादेवी की स्मृति एवं व्रत उद्यापन में
बा. ब्र. अमिता दीदी (प्रतिभास्थली) की प्रेरणा से
श्री मांगीलाल-श्रीमती रामकली जैन
श्री अक्षयकुमार-श्रीमती योगिता जैन, शिवपुरी
श्रीमती अंजू-श्री दिनेशकुमार जैन (मुरैना)
श्रीमती अल्पना-श्री रविकुमार जैन (मुरैना)
श्रीमती शिखा-श्री राहुलकुमार जैन (अम्बाह)

अन्तर्भाव

पुण्यफला अर्हंता।

इस गाथा वाक्य से परमपूज्य आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने अपने लेखन कार्य के पूर्व अपने इष्ट आराध्य स्वरूप अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठियों को नमस्कार पूर्वक स्मरण किया। उन सिद्ध प्रभु एवं समस्त सृष्टि के बारे में देखने और बताने वाले अरिहन्त परमेष्ठी होते हैं जिनकी समवसरण में दिव्यध्वनि के माध्यम से हम सब यह जानते हैं। एसे अरिहन्त प्रभु की भक्ति आचार्य जिनसेन महाराज ने एक हजार आठ नामों के माध्यम से की। इसीलिए उन अरिहन्तों की भक्ति करने का एक नया सोपान **श्री जिनसहस्त्रनाम विधान** की रचना हुई है। **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य जिनशासन प्रभावक, अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत **मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज** ने इस विधान की रचना करके हम सभी साधकों एवं श्रावकों के लिए अरिहन्तों की सहस्त्रनाम के साथ भक्ति करने का नया आयाम दिया है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पूज्य मुनिश्री के इस आशीर्वाद को पाकर आप और हम सभी विधान के माध्यम से अरिहन्तों की आराधना करके अतिशयकारी लाभ को प्राप्त करेंगे।

मेरे द्वारा विधान की संयोजना करने में मुद्रण आदि की जो कुछ भी त्रुटियाँ रह गईं हों तो क्षमायाचना पूर्वक निवेदन करता हूँ कि पाठकगण उन्हें आगमानुसार समझकर धर्मध्यान करें तथा इस कृत की संयोजना में जिन लोगों ने प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया है, उन सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद एवं साधुवाद।

जय-जिनेन्द्र!

बा. ब्र. संजय, मुरैना

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।

जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४

(जोगीरासा)

जय जय जिनवर! जय जय जिनवर!! जय जय जिनवर स्वामी।
तीनलोक में तीनकाल में, पूजित अंतर्यामी॥
जिनके नाम मात्र से चलता, जिनशासन सुखधामी।
जिनचरणों में करके नमोऽस्तु, हम सादर प्रणमामि॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४॥
जिनके चरण-शरण को पाकर, इस दुनिया के प्राणी।
भवसागर से पार उतरते, बन जाते कल्याणी॥
व्यसन बुराई पाप कर्म तो, जिनसे नित घबराएँ।
अतः नाम जिनवर के भजकर, हम भी पुण्य कमाए॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४॥
जिन सहस्त्रनाम स्त्रोत्र से, जो भी जिनवर ध्याएँ।
नाम जाप के ध्यान भजन कर, मनवांछित फल पाएँ॥
स्मरण शक्ति पवित्र वे करके, दुख-दरिद्र सब नाशें।
और कहें क्या अधिक मुक्ति के, योग्य नगर में वासें॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४॥
तेरा मंगल, मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कणकण मंगल क्षणक्षण, मंगल जनजन मंगल होवे।
सहस्त्रनाम को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रस्तावना

(अर्ध ज्ञानोदय)

नाथ! आपने निज को निज में, निजद्वारा ही प्रकट किया।
अचिंत्य महिमावान स्वयंभू, तुमको हमने नमन किया ॥१॥
जगत और लक्ष्मी के स्वामी, विद्वानों में उत्तम हो।
तुम्हें नमन तुम वक्ताओं में, नाथ! पूज्य परमोत्तम हो ॥२॥
कर्मशत्रु के हर्त्ता प्रभु को, इन्द्र पूजते मुकुट झुका।
ऐसा ज्ञानी तुमको कहते, हम तो पूजें शीश झुका ॥३॥
सघन घातिया महावृक्ष पर, ध्यान हथौड़ा चला-चला।
छिन्न-भिन्न कर भव क्षय करके, अनन्तजित बन करो भला ॥४॥
त्रय लोकों को जीत लिया सो, अपराजित अभिमानी हो।
मृत्युराज पर जय मृत्युंजय, तुम्हें नमन जिनस्वामी हो ॥५॥
निज-पर के सब भव-बन्धन के, भेदक! भव्य-बन्धु तुम हो।
जन्म जरा मृतु नाशक प्रभु को, वन्दन! त्रिपुरारि तुम हो ॥६॥
तीन काल के तत्त्व-भेद सब, केवलज्ञान-नयन में हैं।
तब ही जिनवर त्रिनेत्र तुम हो, हम सब चरण-शरण में हैं ॥७॥
तुम्ही अन्धकान्तक हो क्योंकि, हरे मोह-अन्धासुर को।
तुम्हें नमन तुम घाति रहित सो, तुम्हीं अर्धनारीश्वर हो ॥८॥
रहो मोक्ष में सो तुम शिव हो, पाप हरो सो तुम हर हो।
दे आनन्द बनें तुम शंकर, तुम ही शम्भव सुखघर हो ॥९॥
जगत् श्रेष्ठ सो तुम्हीं वृषभ हो, महा गुणोदय सो पुरु हो।
नाभिपुत्र नाभेय तुम्हीं हो, इक्ष्वाकु-कुल-नन्दन हो ॥१०॥
पुरुषस्कंध द्वय नेत्र जगत् के, तुम ही त्रिज्ञान धारक हो।
रत्नत्रय शिव-पथ ज्ञाता तुम, त्रिज्ञ जिनेश्वर नायक हो ॥११॥

पंचब्रह्म परमेष्ठी रूप तुम, चतुरस्रधी हो शुद्ध तुम्हीं।
चार शरण की मंगल मूरत, करो हमें भी शुद्ध तुम्हीं ॥१२॥
सुर से उतरे पुनः न जन्मो, सद्योजातात्मा तुम हो।
जन्माभिषेक पर सुन्दर पाए, वामदेव को वन्दन हो ॥१३॥
प्रशमभाव को प्राप्त केवली, सर्वशक्ति मय ईश्वर हो।
प्रशान्तमुद्रा के धारक प्रभु, तुम्हें नमन झुक-झुककर हो ॥१४॥
आप सिद्ध होंगे भविष्य में, सिद्ध दशा के पात्र रहे।
तुम्हें नमन तुम वर्तमान में, सिद्ध दशा को धार रहे ॥१५॥
ज्ञानावरण कर्म के क्षय से, अनन्तज्ञानी आप बने।
कर्म-दर्शनावरण हरण कर, जग-दृष्टा को नमन घने ॥१६॥
दर्शनमोह कर्म क्षय करके, क्षायिक समकित हुए सुखी।
चरितमोह हर वीतराग हो, तुम्हें नमन ओ! ओजस्वी ॥१७॥
अनन्तदर्शन अनन्तसुख मय, अनन्तशक्ति के धारी हो।
लोकालोक जानते हो प्रभु, तुम्हें नमन बहुबारी हो ॥१८॥
अनन्तदर्शन अनन्तसुख मय, अनन्तभोगों के भोक्ता।
वन्दन तुमको तुम हो अनन्त, उपभोगों के उपभोक्ता ॥१९॥
जो चौरासी लाख योनियाँ, उनके दुख से रहित तुम्हीं।
परम ध्यान मय परमशुद्ध हो, परमऋषी हो पूज्य तुम्हीं ॥२०॥
तुम्हीं परम विद्यारूपी हो, अन्य मतों के नाशक हो।
परमतत्त्वमय परमात्मा हो, तुमको वन्दन झुक-झुक हो ॥२१॥
अतिशय सुन्दर अति तेजस्वी, परम मोक्षपथ रूप तुम्हीं।
परमेष्ठी पद में थित तुमको, नमस्कार हो घडीं-घडीं ॥२२॥
परमऋद्धि मय अति ओजस्वी, परमज्योति के पुंज रहे।
अन्ध रहित आतम मय तुमको, तेज-पुंज हम पूज रहे ॥२३॥

मोहकर्म का कर्मबन्ध का, सब दोषों का हनन किया।
कर्मकलंक क्षीण कर डाले, हमने तुमको नमन किया ॥२४॥
शोभनीय गति सिद्ध प्राप्त कर, ज्ञान अतीन्द्रिय सुख पाए।
आतम रूप अतीन्द्रिय वाले, तुम्हें पूजने हम आए ॥२५॥
तन-बन्धन बिन देह रहित तुम, योग रहित उत्तमयोगी।
आप प्रमुख हो नमन आपको करके देह शुद्ध होगी ॥२६॥
वेद रहित तुम तुम्हें नमन हो, हीन कषायों से तुम हो।
महा योगियों से वन्दित हैं, तो चरणों को वन्दन हो ॥२७॥
परम भेदविज्ञान रूप तुम, संयम रूपी नमन तुम्हें।
परमारथ के ज्ञाता-दृष्टा, बार-बार हो नमन तुम्हें ॥२८॥
रहित अशुभ लेश्याओं से तुमये अंश शुक्ल लेश्या के हो।
भव्याभव्य दशा बिन शिवमय, तुम्हें नमन झुक-झुक के हो ॥२९॥
संज्ञी दशा असंज्ञी बिन तुम, शुद्धातम हो तुम्हें नमन।
रहित सकल संज्ञाओं से तुम, क्षायिक समदृष्टि भगवन ॥३०॥
हो आहार रहित तेजस्वी, निर्दोषी हो तृप्त परम।
भवसागर के पार तुम्हीं हो, तुम को बारम्बार नमन ॥३१॥
जन्म बुढ़ापा मृत्यु रहित हो, आप अचल हो जिनवर जी।
भावभक्ति से नमन आपको, आप रहे अविनश्वर जी ॥३२॥
अनन्त गुण हैं नाथ! आपके, उनका वर्णन कौन करे।
नाम तुम्हारे सुमरण करके, भक्त खोलते मौन अरे ॥३३॥
परम भक्ति से प्रभु जो ऐसा, बुद्धिमान गुणगान करें।
एक हजार आठ नामों का, पाठ करे सब पाप हरें ॥३४॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री जिनसहस्त्रनाम पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

श्री जिनसेनाचार्य गुरु ने, सहस्त्रनाम स्तोत्र रचा।
एक हजार आठ नामों का, तीर्थंकर संस्तोत्र रचा॥
आओ! हम भी प्रभु नामों का, पूजन पाठ भजन कर लें।
मन-मंदिर के उच्चासन पर, प्रभु का आह्वानन कर लें॥

(दोहा)

हृदय वेदिका पर वसें, तीर्थंकर के नाम।
नमोऽस्तु कर हम पूज लें, चित् चैत्यालय धाम॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्त्र-नामधारी-श्री जिनसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जनम-मरण के दुख हरें, करें आत्म उद्धार।
सहस्त्रनाम को नमोऽस्तु कर, दें प्रासुक जल धार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्त्र-नामधारी-श्रीजिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

भव-भव का तपना हरें, पाएँ शान्ति अपार।
सहस्त्रनाम को नमोऽस्तु कर, दें चंदन की धार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्त्र-नामधारी-श्रीजिनाय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

राग-द्वेष भय को हरें, चलें जगत के पार।
सहस्त्रनाम को नमोऽस्तु कर, हों अक्षत उपहार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्त्र-नामधारी-श्रीजिनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

काम-भोग पीड़ा हरें, कर लें ब्रह्म विहार।
सहस्त्रनाम को नमोऽस्तु कर, भेंट पुष्प का हार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्त्र-नामधारी-श्रीजिनाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जड़-पुद्गल के रस तजें, हो अपना आहार।
सहस्त्रनाम को नमोऽस्तु कर, सौपें चरु रसदार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्त्र-नामधारी-श्रीजिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अँधेरा हर सकें, दीवाली त्यौहार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, करें दीप उजयार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-श्रीजिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों के संग्राम में, करने जय-जयकार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, खे लें धूप बहार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-श्रीजिनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अपने-अपने कर्म के, फल भोगे संसार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, मिले मोक्षफल सार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-श्रीजिनाय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

पाप रूप ब्रह्माण्ड है, सुख-दुख का विस्तार।
सहस्रनाम को नमोऽस्तु कर, अर्घ्य भेंट सुख द्वार॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-श्रीजिनाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सहस्रनाम के नाथ के, कल्याणक त्यौहार।
अर्घ्य चढ़ा हम पूज लें, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक-प्राप्त-अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-श्रीजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र :

ॐ ह्रीं श्री जिनाय नमः। अथवा **ॐ ह्रीं अर्हं नमः।**

जयमाला

(दोहा)

सहस्रनाम का कर सकें, हम भी पथ स्वीकार।
सो जयमाला कह करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(हाकलिका)

सहस्रनाम स्तोत्र रहा, जिनवर का संस्तोत्र महा।
प्रभु तीर्थेश नाम-माला, प्यारी पूज्य भजन-माला॥१॥

समवसरण में प्रभु बैठें, चरणों में सुर नर लेटें।
तब सौधर्म-इन्द्र आके, सहस्रनाम के गुण गाके॥२॥
करे निवेदन नत होकर, हो विहार प्रभु धरती पर।
आवेदन स्वीकार हुआ, प्रभु का भव्य-विहार हुआ॥३॥
भक्तों का उद्धार हुआ, ऐसा बारम्बार हुआ।
सहस्रनाम तब से सबको, प्यारा न्यारा भक्तों को॥४॥
इसकी महिमा सुख वाली, करे दशहरा दीवाली।
रोग शोक दुख कष्ट हरे, ऋद्धि-सिद्धि समृद्ध करे॥५॥
जग के सुख का क्या कहना, मोक्ष राज्य का दे गहना।
अतः मनन चिंतन कर लो, पूजन पाठ भजन कर लो॥६॥
जिससे दुख संकट ना हों, नहीं कष्ट दुर्घटना हों।
रोग शोक भय वैर टलें, लोग शान्ति की राह चलें॥७॥
प्रभु सम नाम कमाओ रे, 'सुव्रत' काम बनाओ रे।
प्रभु को नहीं भुलाओ रे, प्रभु जैसे बन जाओ रे॥८॥

(सोरठा)

प्रभु का सहस्रनाम, पढ़ें सुनें अर्चन करें।
पाने आतम राम, नमोऽस्तु कर वन्दन करें॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-श्रीजिनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सहस्रनाम स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सहस्रनाम जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

प्रथम अर्घ्यावली (दोहा)

अंतरंग बहिरंग की, लक्ष्मी से धनवान
प्रथम नाम श्रीमान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीमान-जिनाय अर्घ्यं...॥१॥

बिन गुरु के उपदेश के, कर लेते कल्याण।
पूज्य स्वयंभू नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभू-जिनाय अर्घ्यं...॥२॥

धर्म रूप जिन ऋषभ है, दे धर्मामृत दान।
पूज्य वृषभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभ-जिनाय अर्घ्यं...॥३॥

स्वर्ग मोक्ष सुख जो भरे, आतम सुख दे दान।
शम्भव सब सम्भव करें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शम्भव-जिनाय अर्घ्यं...॥४॥

इन्द्रिय सुख से दूर हो, करे आत्म रसपान।
अतीन्द्रियशंभू नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्रियशंभू-जिनाय अर्घ्यं...॥५॥

किए आत्म पुरुषार्थ जो, पाए आतमज्ञान।
पूज्य आत्मभू नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मभू-जिनाय अर्घ्यं...॥६॥

कोटि सूर्य से तेज है, जिनका केवलज्ञान।
पूज्य स्वयंप्रभ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥७॥

जग की प्रभुता प्राप्त कर, पूज्य हुए भगवान।
सार्थक प्रभु जिन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभु-जिनाय अर्घ्यं...॥८॥

पर भावों को त्याग कर, किया आत्म का ध्यान।
निज भोक्ता प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भोक्ता-जिनाय अर्घ्यं...॥९॥

तीन लोक त्रय काल में, व्यापक जिनका ज्ञान।
पूज्य विश्व भू नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वभू-जिनाय अर्घ्यं...॥१०॥

पुनर्जन्म जो ले नहीं, करके जन्म महान।
अपुनर्भव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अपुनर्भव-जिनाय अर्घ्यं...॥११॥

विश्वरूप आतम किए, कर आतम सम्मान।
विश्वात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥१२॥

विश्व लोक के ईश हैं, विश्व तत्त्व दे दान।
पूज्य विश्व लोकेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वलोकेश-जिनाय अर्घ्यं...॥१३॥

केवलदर्शन चक्षु से, देखे सकल जहान।
पूज्य विश्वतश्चक्षु को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वतश्चक्षु-जिनाय अर्घ्यं...॥१४॥

जिनका कभी न नाश हो, क्षरण रहित भगवान।
प्रभु के अक्षर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अक्षर-जिनाय अर्घ्यं...॥१५॥

छह द्रव्यों के विश्व को, जाने जिनका ज्ञान।
पूज्य विश्ववित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्ववित्-जिनाय अर्घ्यं...॥१६॥

हर विद्या के ईश है, गणधर के भगवान।
पूज्य विश्वविद्येश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वविद्येश-जिनाय अर्घ्यं...॥१७॥

उपदेशक हर वस्तु के,उत्पत्ति के स्थान।
विश्वयोनि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वयोनि-जिनाय अर्घ्यं...॥१८॥

अविनश्वर निज रूप है, स्वरूप का न हान।
पूज्य अनश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥१९॥

लोकालोक निहार के, हुए स्वस्थ भगवान।
पूज्य विश्वदृश्वा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वदृश्वा-जिनाय अर्घ्यं...॥२०॥

विश्व व्याप्त हैं केवली, जग तारे धनवान।
परमपूज्य विभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विभु-जिनाय अर्घ्यं...॥२१॥

चउ गतियों को तार के, देते मोक्ष स्थान।
प्रभु के धाता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धाता-जिनाय अर्घ्यं...॥२२॥

सकल चराचर विश्व के, जो स्वामी भगवान।
परम पूज्य विश्वेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वेश-जिनाय अर्घ्यं...॥२३॥

सबको सुख की राह दें, जो हैं नेत्र समान।
पूज्य विश्वलोचन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वलोचन-जिनाय अर्घ्यं...॥२४॥

कण-कण में जो व्याप्त हैं, पाकर केवलज्ञान।
विश्वव्यापी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वव्यापी-जिनाय अर्घ्यं...॥२५॥

मोह कर्म हर कर उगा, सूरज केवलज्ञान।
जिनवर के विधि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विधि-जिनाय अर्घ्यं...॥२६॥

धर्म मंत्र जग को दिया, मोक्षमार्ग दे दान।
प्रभु के वेधा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वेधा-जिनाय अर्घ्यं...॥२७॥

विद्यमान रहते सदा, क्षण भंगुर ना जान।
प्रभु के शाश्वत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शाश्वत-जिनाय अर्घ्यं...॥२८॥

चतुर्मुखी के दर्श से, होते नीर समान।
पूज्य विश्वतोमुख जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वतोमुख-जिनाय अर्घ्यं...॥२९॥

दुखद कर्म हरने दिया, षट्कर्मों का ज्ञान।
पूज्य विश्वकर्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वकर्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥३०॥

जग में सबसे श्रेष्ठ हैं, अरिहन्ता भगवान।
जगज्येष्ठ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगज्येष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥३१॥

अनन्त गुण मय आप हैं, जग में पूज्य महान।
विश्वमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वमूर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥३२॥

कर्मजयी इन्द्रीजयी, भक्तों के भगवान।
पूज्य जिनेश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥३३॥

सकल विश्व प्रभु देखते, फिर भी निज का ध्यान।
पूज्य विश्वदृक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वदृक-जिनाय अर्घ्यं...॥३४॥

जग जन के ईश्वर तुम्हीं, लक्ष्मी के स्थान।
पूज्य विश्वभूतेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वभूतेश-जिनाय अर्घ्यं...॥३५॥

करो प्रकाशित विश्व को, पाकर सम्यग्ज्ञान।
विश्वज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वज्योति-जिनाय अर्घ्यं...॥३६॥

कौन आपका ईश है, तुम सबके भगवान।
पूज्य अनीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनीश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥३७॥

कर्म शत्रु को जीत के, इन्द्री लगा लगाम।
परम पूज्य जिन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जिन-जिनाय अर्घ्यं...॥३८॥

कर्म शत्रु को जीतना, जिनको है आसान।
पूज्य जिष्णु जिन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जिष्णु-जिनाय अर्घ्यं...॥३९॥

जिनकी गणना कठिन है, अनन्त जिन का ज्ञान।
पूज्य अमेयात्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमेयात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥४०॥

जो धरती के देवता, पृथ्वी के भगवान।
विश्वरीश प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वरीश-जिनाय अर्घ्यं...॥४१॥

तीन लोक के नाथ हो, भक्तों के श्रद्धान।
पूज्य जगत्पति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगत्पति-जिनाय अर्घ्यं...॥४२॥

अनन्त भव को जीतके, चले मोक्ष के धाम।
अनन्तजित प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तजित-जिनाय अर्घ्यं...॥४३॥

प्रभु का चिंतन कर सके, यहाँ कौन बलवान।
पूज्य अचिंत्यात्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अचिंत्यात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥४४॥

भव्यों का उपकार तुम, करते आत्म समान।
भव्यबन्धु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भव्यबन्धु-जिनाय अर्घ्यं...॥४५॥

बंधन में बँधते नहीं, बंधन से अनजान।
पूज्य अबंधन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अबन्धन-जिनाय अर्घ्यं...॥४६॥

शुभ युग युग प्रारंभ में, जन्म लिए भगवान।
युगादिपुरुष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री युगादिपुरुष-जिनाय अर्घ्यं...॥४७॥

ब्रह्म तत्त्व विकसित हुए, जब प्रकटा निज ज्ञान।
पूज्य ब्रह्म प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्म-जिनाय अर्घ्यं...॥४८॥

परमेष्ठी के रूप हो, पाकर पंचम ज्ञान।
पंच-ब्रह्ममय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पंचब्रह्ममय-जिनाय अर्घ्यं...॥४९॥

रहते परमानन्द में, करते जग कल्याण।
परम पूज्य शिव नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शिव-जिनाय अर्घ्यं...॥५०॥

अपने आश्रित जीव को, पहुँचाते शिव धाम।
परम पूज्य पर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पर-जिनाय अर्घ्यं...॥५१॥

उपदेशक प्रभु धर्म के, सबसे श्रेष्ठ महान।
प्रभु के परतर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परतर-जिनाय अर्घ्यं...॥५२॥

जान सके ना इन्द्रियाँ, जाने केवलज्ञान।
पूज्य सूक्ष्म प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्म-जिनाय अर्घ्यं...॥५३॥

इन्द्राधिक से पूज्य हो, स्थित परम स्थान।
परमेष्ठी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परमेष्ठी-जिनाय अर्घ्यं...॥५४॥

तीनों कालों में रहो, जिनवर विराजमान।
पूज्य सनातन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सनातन-जिनाय अर्घ्यं...॥५५॥

स्वयं प्रकाशित आप है, जग में सूर्य समान।
स्वयंज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वयंज्योति-जिनाय अर्घ्यं...॥५६॥

जग में ना उत्पन्न हो, जन्म रहित भगवान।
परम पूज्य अज नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अज-जिनाय अर्घ्यं...॥५७॥

कभी देह ना धारते, ना हो गर्भाधान।
पूज्य अजन्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अजन्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥५८॥

ब्रह्म रूप परमात्मा, रत्नत्रय के खान।
ब्रह्मयोनि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मयोनि-जिनाय अर्घ्यं...॥५९॥

चौरासी लख योनियाँ, तज पाए निर्वाण।
पूज्य अयोनिज नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अयोनिज-जिनाय अर्घ्यं...॥६०॥

मोह कर्म रिपु जय किए, हम सबके श्रद्धान।
मोहारि विजयी जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मोहारिविजयी-जिनाय अर्घ्यं...॥६१॥

रहन सहन सबसे भला, जग करता सम्मान।
प्रभु के जेता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जेता-जिनाय अर्घ्यं...॥६२॥

प्रभु पथ में आगे चलें, जो दें धार्मिक ज्ञान।
पूज्य धर्मचक्री जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धमचक्री-जिनाय अर्घ्यं...॥६३॥

दया ध्वजा फहरा रहे, दयालु दया निधान।
पूज्य दयाध्वज नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दयाध्वज-जिनाय अर्घ्यं...॥६४॥

कर्म शत्रु को शान्त कर, करे चिदातम ध्यान।
प्रशान्तारि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तारि-जिनाय अर्घ्यं...॥६५॥

अनन्त गुणों को धारते, नष्ट न हों भगवान।
पूज्य अनन्तात्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥६६॥

सकल योग का निरोध कर, योगी बने महान।
प्रभु के योगी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री योगी-जिनाय अर्घ्यं...॥६७॥

गणधर आदिक आप को, पूजा कर श्रद्धान।
योगिश्वार्चित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री योगिश्वार्चित-जिनाय अर्घ्यं...॥६८॥

अपने ब्रह्म स्वरूप का, पाया सम्यग्ज्ञान।
पूज्य ब्रह्मवित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मवित्-जिनाय अर्घ्यं...॥६९॥

कामदेव हर पा लिया, आत्मब्रह्म परिज्ञान।
पूज्य ब्रह्मतत्त्वज्ञ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मतत्त्वज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥७०॥

ब्रह्मतत्त्व को जानकर, निज विद्या पहचान।
ब्रह्मोद्यावित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मोद्यावित-जिनाय अर्घ्यं...॥७१॥

यतियों के यतिराज हैं, रत्नत्रय भगवान।
पूज्य यतीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री यतीश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥७२॥

सकल कषायों से रहित, किया आत्म सम्मान।
पूज्य शुद्ध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शुद्ध-जिनाय अर्घ्यं...॥७३॥

सकल चराचर जानते, फिर भी निज का ध्यान।
पूज्य बुद्ध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री बुद्ध-जिनाय अर्घ्यं...॥७४॥

निज स्वरूप को जानकर, जानो सकल जहान।
प्रबुद्धात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रबुद्धात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥७५॥

उपदेशक पुरुषार्थ के, सिद्ध अर्थ के धाम।
परम पूज्य सिद्धार्थ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धार्थ-जिनाय अर्घ्यं...॥७६॥

जिनमत पूर्ण प्रसिद्ध है, जिससे सब हैरान।
पूज्य सिद्धशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धशासन-जिनाय अर्घ्यं...॥७७॥

अष्ट कर्म को नष्ट कर, बने सिद्ध भगवान।
पूज्य सिद्ध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्ध-जिनाय अर्घ्यं...॥७८॥

निज ध्यानी हो पा गये, द्वादशांग का ज्ञान।
सिद्धांतवित् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धांतवित्-जिनाय अर्घ्यं...॥७९॥

योगी के योगीश हो, लक्ष्य प्रयोजन ज्ञान।
पूज्य ध्येय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥॥
ॐ ह्रीं श्री ध्येय-जिनाय अर्घ्यं...॥८०॥

मुनियों के आराध्य हो, देवों के भगवान।
सिद्धसाध्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाध्य-जिनाय अर्घ्यं...॥८१॥

आप जगत का हित करो, हम पर भी दो ध्यान।
पूज्य जगद्हित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगद्हित-जिनाय अर्घ्यं...॥८२॥

सहनशील प्रभु आप हो, समता के भगवान।
सहिष्णु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सहिष्णु-जिनाय अर्घ्यं...॥८३॥

निज स्वरूप से च्युत नहीं, होते हैं भगवान।
अच्युत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अच्युत-जिनाय अर्घ्यं...॥८४॥

गिन न सकें न अंत हों, अनन्त गुण की खान।
अनन्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्त-जिनाय अर्घ्यं...॥८५॥

अनन्त प्रभाव है आपका, हो अनन्त बलवान।
प्रभविष्णु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभविष्णु-जिनाय अर्घ्यं...॥८६॥

जन्म मरण की हर क्रिया, सार्थक जन्म महान।
भवोद्भव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भवोद्भव-जिनाय अर्घ्यं...॥८७॥

स्वाभाविक परिणत हुए, इन्द्रों के भगवान।
प्रभूष्णु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभुष्णु-जिनाय अर्घ्यं...॥८८॥

अर्धमृतक सम वृद्धपन, दूर किए भगवान।
अजर अमर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अजर-जिनाय अर्घ्यं...॥८९॥

जीर्ण नहीं जर-जर नहीं, पूर्ण तरुण भगवान।
अजर्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अजर्य-जिनाय अर्घ्यं...॥९०॥

कोटि सूर्य व चन्द्र से, ज्यादा प्रकाशमान।
भ्राजिष्णु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भ्राजिष्णु-जिनाय अर्घ्यं...॥९१॥

पूर्ण ज्ञान के ईश हो, सबसे बुद्धिमान।
धीश्वर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धीश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥९२॥

अधिक नहीं कम भी नहीं, उचित-उचित परिमाण।
अव्यय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अव्यय-जिनाय अर्घ्यं...॥९३॥

धर्मामृत वर्षा रहे, विभाव है हैरान।
पूज्य विभावसु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विभावसु-जिनाय अर्घ्यं...॥९४॥

जग में जन्म न ले सको, पाई नई पहचान।
असंभूष्णु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री असंभूष्णु-जिनाय अर्घ्यं...॥९५॥

स्वयं प्रकाशित हो रहे, स्वयं प्रकट भगवान।
स्वयंभूष्णु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वयंभूष्णु-जिनाय अर्घ्यं...॥९६॥

अनादिकाल से सिद्ध हैं, रखें हमारा ध्यान।
पूज्य पुरातन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुरातन-जिनाय अर्घ्यं...॥९७॥

परम-परम उत्कृष्ट हो, परमेष्ठी के नाम।
परमात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥९८॥

मोक्षमार्ग दर्शा रहे, भक्तों को लें थाम।
परमज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परमज्योति-जिनाय अर्घ्यं...॥९९॥

त्रय जग में उत्कृष्ट हैं, त्रय जग के भगवान।
त्रिजगत् परमेश्वर जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिजगत्परमेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥१००॥

पूर्णार्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

एक हजार आठ लक्षण जो, नाथ! दिव्यध्वनि के पाएँ।
एक हजार आठ नामों से, इष्ट सिद्धि को गुण गाएँ॥१॥
प्रभु श्रीमान स्वयंभू धर्मी, भोक्ता सुखी प्रकाशित हो।
जन्म रहित परमेष्ठी शंभू, जगव्यापी जगवंदित हो॥२॥
विश्वात्मा अविनाशी अक्षर, विश्व चक्षु लोकेश परम।
जग-ज्ञाता सब विद्यापति तुम, जग उपदेशक तुम्हें नमन॥३॥
नाथ! विश्वदृश्वा विभुधाता, हो विश्वेश विश्व लोचन।
आप विश्वव्यापी विधि वेधा, शाश्वत चारमुखी भगवन॥४॥
जगज्जेष्ठ हो, विश्वमूर्ति तुम, तुम्हीं विश्वकर्मा जिनवर।
आप विश्वभूतेश विश्वदृग, विश्वज्योति हो अन्-ईश्वर॥५॥

विश्वरीश जिन जिष्णु जगत्पति, आप अमेयात्मा निर्बन्ध।
भव्यबंधु हो अनन्तजित तुम, तुम्ही अचिंत्यात्मा जग वंद्य॥६॥
युगादि-पुरुष ब्रह्म परमेष्ठी, पर, शिव, परतर आप रहे।
पंचब्रह्ममय सूक्ष्म सनातन, तुम्हें झुका हम माथ रहे॥७॥
स्वयं ज्योति अज आप अजन्मा, ब्रह्मयोनि हो अयोनिजा।
मोहशत्रु-विजयी तुम जेता, धर्मचक्रि हो दयाध्वजा॥८॥
प्रशान्तारि हो अनन्त आत्मा, योगीश्वर योगी-अर्चित।
आप ब्रह्मतत्त्वज्ञ ब्रह्मविद्, यतीश्वर ब्रह्मो-द्यावित्॥९॥
सिद्ध बुद्ध तुम प्रबुद्ध आत्मा, सिद्धार्थ सिद्धशासन हो।
तुम सिद्धान्तवित्-ध्येय जगद्धित, सिद्ध साध्य को वन्दन हो॥१०॥
तुम अच्युत हो अनन्त सहिष्णु, अजर भवोद्भव प्रभविष्णु।
अव्यय अजर्य धीश्वर तुम को, वन्दन तुम हो, भ्राजिष्णु॥११॥
असंभूष्णु तुम विभावसु हो, स्वयंभूष्णु परमातम हो।
परम् ज्योति त्रिजगत्परमेश्वर, वन्दन तुम्हीं, पुरातन हो॥१२॥

(जोगीरासा)

श्रीमद्-आदि शतक पूज कर, सौ सौ अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु के सौ-सौ नाम जाप कर, 'सुव्रत' पुण्य कमाए॥
श्री जिनसहस्रनाम मंत्रों से, पाप नशे सुख होवे।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीमदादि-शतकजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(पुष्पांजलिं...)

===

द्वितीय अर्घ्यावली (दोहा)

दिव्य ध्वनि के नाथ हो, धर्मरत्न दो दान।
दिव्यभाषापति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यभाषापति-जिनाय अर्घ्यं...॥१०१॥

अतिशय सुन्दर आप हो, पूज्य मनोहर धाम।
पूज्य दिव्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्य-जिनाय अर्घ्यं...॥१०२॥

जिनवाणी निर्दोष है, हरे सभी संग्राम।
पूतवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पूतवाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥१०३॥

जिनमत अति पावन रहा, भक्त करो भगवान।
पूज्य पूतशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पूतशासन-जिनाय अर्घ्यं...॥१०४॥

करते जगत पवित्र हो, हो पवित्र भगवान।
पूतात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पूतात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥१०५॥

उज्ज्वल सर्वोत्कृष्ट हो, पाकर केवलज्ञान।
परमज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री परमज्योति-जिनाय अर्घ्यं...॥१०६॥

अधिकारी हो धर्म के, देते धार्मिक ज्ञान।
धर्माध्यक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धर्माध्यक्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥१०७॥

इन्द्रियों का करके दमन, ईश्वर हुए महान।
पूज्य दमीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दमीश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥१०८॥

जड़-चेतन में उच्च हो, मोक्ष लक्ष्मी धाम।
श्रीपति प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीपति-जिनाय अर्घ्यं...॥१०९॥

आप महाज्ञानी रहे, ज्ञानवान धनवान।
परम पूज्य भगवान् को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भगवान्-जिनाय अर्घ्यं...॥११०॥

परमपूज्य हो जगत में, जगत करे सम्मान।
अर्हन् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अर्हन्-जिनाय अर्घ्यं...॥१११॥

कर्मों की रज हर चुके, कर्मजयी भगवान।
अरजा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अरजा-जिनाय अर्घ्यं...॥११२॥

हरो कर्ममल भव्य के, पाप रहित भगवान।
विरजा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विरजा-जिनाय अर्घ्यं...॥११३॥

ब्रह्मचर्य पालन करो, निर्मल हो गुणवान।
परमपूज्य शुचि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शुचि-जिनाय अर्घ्यं...॥११४॥

धर्म तीर्थ कर्त्ता! तुम्हीं, द्वादशांग के स्थान।
पूज्य तीर्थकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥११५॥

नाथ! आप में शोभते, दर्शन केवलज्ञान।
पूज्य केवली नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री केवली-जिनाय अर्घ्यं...॥११६॥

अनन्त बल संपन्न हो, सबसे शक्तिमान।
ईशान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ईशान-जिनाय अर्घ्यं...॥११७॥

पूजा के हो योग्य तुम, श्रद्धा के श्रद्धान।
प्रभु के पूजार्ह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पूजार्ह-जिनाय अर्घ्यं...॥११८॥

घातिकर्म नाशक तुम्हीं, पाकर पूरण ज्ञान।
स्नातक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्नातक-जिनाय अर्घ्यं...॥११९॥

धातु और उपधातु के, मल का करके हान।
पूज्य अमल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमल-जिनाय अर्घ्यं...॥१२०॥

अनन्त केवलज्ञान से, होते कान्तिमान।
अनन्तदीप्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तदीप्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥१२१॥

ज्ञान स्वरूपी आप हो, ज्ञान-ज्ञान बस ज्ञान।
ज्ञानात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥१२२॥

मोक्षमार्ग में चल पड़े, पाकर बिन गुरु ज्ञान।
स्वयंबुद्ध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वयंबुद्ध-जिनाय अर्घ्यं...॥१२३॥

त्रय जग के स्वामी रहे, जग पालक भगवान।
पूज्य प्रजापति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रजापति-जिनाय अर्घ्यं...॥१२४॥

मुक्त रहे संसार से, कर्मों से अनजान।
पूज्य मुक्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मुक्त-जिनाय अर्घ्यं...॥१२५॥

जग में आप समर्थ हो, अनन्त शक्तिमान।
पूज्य शक्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शक्त-जिनाय अर्घ्यं...॥१२६॥

आप रहे बाधा रहित, दुख से रहित महान।
निराबाध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निराबाध-जिनाय अर्घ्यं...॥१२७॥

देह सहित दुनियाँ रही, देह रहित भगवान।
निष्कल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निष्कल-जिनाय अर्घ्यं...॥१२८॥

तीन भुवन के ईश हो, करो भक्त कल्याण।
भुवनेश्वर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भुवनेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥१२९॥

कर्मकालिमा हर चुके, चमक उठे भगवान।
पूज्य निरंजन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरंजन-जिनाय अर्घ्यं...॥१३०॥

जगत प्रकाशित कर रहे, मोक्षमार्ग दे ज्ञान।
जगज्ज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगज्ज्योति-जिनाय अर्घ्यं...॥१३१॥

जिनका नहीं विरोध हो, जिनके वचन प्रमाण।
निरुक्तोक्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरुक्तोक्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥१३२॥

रोग पसीना से रहित, रोग हरें भगवान।
पूज्य अनामय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनामय-जिनाय अर्घ्यं...॥१३३॥

आप अचल रहते सदा, गये अचल स्थान।
अचलस्थिति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अचलस्थिति-जिनाय अर्घ्यं...॥१३४॥

शान्ति भंग कितनी हुई, किन्तु क्षोभ ना जान।
अक्षोभ्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अक्षोभ्य-जिनाय अर्घ्यं...॥१३५॥

नित्य रहो जग के शिखर, पर हो विराजमान।
कूटस्थ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कूटस्थ-जिनाय अर्घ्यं...॥१३६॥

गमनागमन विमुक्त हो, निज में मग्न महान।
स्थाणु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्थाणु-जिनाय अर्घ्यं...॥१३७॥

कभी नहीं क्षय हो सके, रहते एक समान।
अक्षय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अक्षय-जिनाय अर्घ्यं...॥१३८॥

तीन लोक में मुख्य हो, हरते सब अपमान।
पूज्य अग्रणी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रणी-जिनाय अर्घ्यं...॥१३९॥

महा मोक्षपद पा लिया, करके जग कल्याण।
पूज्य ग्रामणी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ग्रामणी-जिनाय अर्घ्यं...॥१४०॥

जगत चलाते धर्म को, देकर शिक्षा ज्ञान।
नेता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नेता-जिनाय अर्घ्यं...॥१४१॥

आप स्वयं निर्ग्रन्थ हो, रचो ग्रन्थ का ज्ञान।
पूज्य प्रणेता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणेता-जिनाय अर्घ्यं...॥१४२॥

प्रमाण नय के रूप के, वक्ता देते ज्ञान।
न्यायशास्त्रकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री न्यायशास्त्रकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥१४३॥

हितोपदेशी आप हो, रखते सबका ध्यान।
शास्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शास्ता-जिनाय अर्घ्यं...॥१४४॥

रत्नत्रय की नाव हो, दस धर्मों के यान।
पूज्य धर्मपति नाम को हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मपति-जिनाय अर्घ्यं...॥१४५॥

धर्मस्वरूपी आप हो, अधर्म है हैरान।
पूज्य धर्म्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्म्य-जिनाय अर्घ्यं...॥१४६॥

धर्मवृद्धि के फल तुम्हीं, हो धार्मिक सोपान।
धर्मात्मा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥१४७॥

धर्म प्रवर्तक तीर्थ हो, पार करो भवि-यान।
धर्मतीर्थकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥१४८॥

धर्मध्वजा फहरा रहे, धर्म चिह्न के नाम।
वृषध्वज प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृषध्वज-जिनाय अर्घ्यं...॥१४९॥

नाथ अहिंसा धर्म के, तुम हो दया निधान।
वृषाधीश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृषाधीश-जिनाय अर्घ्यं...॥१५०॥

प्रसिद्ध करके धर्म की, अलग किए पहचान।
वृषकेतु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृषकेतु-जिनाय अर्घ्यं...॥१५१॥

कर्म शत्रु को नाशने, धारा धर्म कृपाण।
पूज्य वृषायुध नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृषायुध-जिनाय अर्घ्यं...॥१५२॥

धर्म वृष्टि से हर लिया, दुख का रेगिस्तान।
परम पूज्य वृष नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृष-जिनाय अर्घ्यं...॥१५३॥

नायक हो तुम धर्म के, करो पाप का हान।
वृषपति प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृषपति-जिनाय अर्घ्यं...॥१५४॥

हम सबके स्वामी रहे, भक्तों के भगवान।
भर्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भर्ता-जिनाय अर्घ्यं...॥१५५॥

वृषभ चिह्न से शोभते, हम सबकी पहचान।
परम पूज्य वृषभाक् को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभाक् -जिनाय अर्घ्यं...॥१५६॥

वृषभ स्वप्न माँ को दिया, फिर जन्मे भगवान।
वृषोद्भव प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृषोद्भव-जिनाय अर्घ्यं...॥१५७॥

नाभिराय के पुत्र हो, नाभि स्वर्ण समान।
हिरण्यनाभि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हिरण्यनाभि-जिनाय अर्घ्यं...॥१५८॥

जग में आप यथार्थ हो, अविनाशी शिवधाम।
भूतात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भूतात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥१५९॥

जीवों की रक्षा करो, करते हो कल्याण।
पूज्य भूतभृत नाम को हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भूतभृत-जिनाय अर्घ्यं...॥१६०॥

श्रेष्ठ भावना रूप हो, मंगलमय भगवान।
पूज्य भूतभावन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भूतभावन-जिनाय अर्घ्यं...॥१६२॥

प्रशंसनीय प्रभु जन्म है, कुलदीपक भगवान।
पूज्य प्रभव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभव-जिनाय अर्घ्यं...॥१६२॥

आप रहित संसार हो, निज के वैभववान।
पूज्य विभव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विभव-जिनाय अर्घ्यं...॥१६३॥

स्वामी केवलज्ञान से, होते प्रकाशमान।
भास्वान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भास्वान-जिनाय अर्घ्यं...॥१६४॥

समय-समय में आप में, हो उत्पाद् महान।
परम पूज्य भव नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भव-जिनाय अर्घ्यं...॥१६५॥

आत्म भाव में लीन हो, किन्तु नहीं नादान।
पूज्य भाव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भाव-जिनाय अर्घ्यं...॥१६६॥

भ्रमण तजा संसार का, पाया मोक्ष महान।
पूज्य भवांतक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भवांतक-जिनाय अर्घ्यं...॥१६७॥

गर्भ वास के समय में, वर्षा स्वर्ण समान।
हिरण्यगर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हिरण्यगर्भ-जिनाय अर्घ्यं...॥१६८॥

गर्भ समय में माँ हुई, लक्ष्मी शोभामान।
परम पूज्य श्रीगर्भ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीगर्भ-जिनाय अर्घ्यं...॥१६९॥

अनन्त विभूति आप की, जिससे हो धनवान।
प्रभूतविभव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभूतविभव-जिनाय अर्घ्यं...॥१७०॥

जन्म रहित प्रभु आप हो, भव से हो अनजान।
पूज्य अभवप्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अभव-जिनाय अर्घ्यं...॥१७१॥

निज में आप समर्थ हो, हो आत्मिक बलवान।
पूज्य स्वयंप्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभु-जिनाय अर्घ्यं...॥१७२॥

निज आतम में व्याप्त हो, पाकर केवलज्ञान।
पूज्य प्रभूतात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभूतात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥१७३॥

स्वामी हो हर जीव के, दो हमको कुछ ज्ञान।
भूतनाथ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भूतनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥१७४॥

स्वामी हो त्रय लोक के, करो जगत कल्याण।
पूज्य जगत्प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगत्प्रभु-जिनाय अर्घ्यं...॥१७५॥

आप प्रथम हो पूज्य हो, जग के हो सम्मान।
सर्वादि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वादि-जिनाय अर्घ्यं...॥१७६॥

लोकालोक निहारते, निज से ना अंजान।
पूज्य सर्वदृक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वदृक-जिनाय अर्घ्यं...॥१७७॥

हित का दे उपदेश तुम, करते जग कल्याण।
पूज्य सार्व प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सार्व-जिनाय अर्घ्यं...॥१७८॥

तीन लोक त्रय काल का, जानो सारा ज्ञान।
परम पूज्य सर्वज्ञ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥१७९॥

सम्यग्दर्शन धार के, सबको देते ज्ञान।
पूज्य सर्वदर्शन प्रभु, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वदर्शन-जिनाय अर्घ्यं...॥१८०॥

सबको प्रिय लगते तुम्हीं, तुम बिन क्या कल्याण।
सर्वात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥१८१॥

त्रय जग के स्वामी तुम्हीं, प्राणी के हो प्राण।
पूज्य सर्वलोकेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकेश-जिनाय अर्घ्यं...॥१८२॥

हर पदार्थ को जानते, रखते निज का ध्यान।
पूज्य सर्ववित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्ववित्-जिनाय अर्घ्यं...॥१८३॥

सर्व लोक को जीतते, करो नहीं हैरान।
सर्व लोकजित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकजित्-जिनाय अर्घ्यं...॥१८४॥

चारों गतियाँ तज हुए, पंचम विराजमान।
पूज्य सुगति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुगति-जिनाय अर्घ्यं...॥१८५॥

स्वामी बहुत प्रसिद्ध हो, रखो शास्त्र का ज्ञान।
सुश्रुत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुश्रुत-जिनाय अर्घ्यं...॥१८६॥

सुनो भक्त की प्रार्थना, रखो भक्त का ध्यान।
सुश्रुत् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुव्रत्-जिनाय अर्घ्यं...॥१८७॥

सप्त भंग मय वचन है, देते हित का ज्ञान।
सुवाक् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुवाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥१८८॥

गुरुवर हो संसार के, हम सबके भगवान।
पूज्य सूरि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सूरि-जिनाय अर्घ्यं...॥१८९॥

शास्त्र पारगामी हुए, पाकर अनन्तज्ञान।
बहुश्रुत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत-जिनाय अर्घ्यं...॥१९०॥

स्वामी जगत प्रसिद्ध हो, शास्त्र सके न जान।
विश्रुत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्रुत-जिनाय अर्घ्यं...॥१९१॥

किरणें केवलज्ञान की, फैलें सकल जहान।
विश्वतःपाद नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वतःपाद-जिनाय अर्घ्यं...॥१९२॥

तीन लोक के शिखर पर, रहते विराजमान।
विश्वशीर्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वशीर्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥१९३॥

दोष सहित तज ज्ञान को, पाया निर्मल ज्ञान।
शुचिश्रवा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान
ॐ ह्रीं श्री शुचिश्रवा-जिनाय अर्घ्यं...॥१९४॥

अनन्तसुख प्रभु आप हो, दुख का करके हान।
सहस्रशीर्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सहस्रशीर्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥१९५॥

आत्म स्वरूपी आप हो, लोकालोक सुजान।
क्षेत्रज्ञ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेत्रज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥१९६॥

अनन्तदर्शी आप हो, देखो निज स्थान।
सहस्राक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्राक्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥१९७॥

अनन्तवीर्य प्रभु धारते, हो अनन्त बलवान।
सहस्रपात् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रपात्-जिनाय अर्घ्यं...॥१९८॥

स्वामी हो त्रय काल के, किन्तु न काल समान।
भूत-भव्य-भवद्भर्ता को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भूत-भव्य-भवद्भर्ता-जिनाय अर्घ्यं...॥१९९॥

प्रभु हो केवलज्ञान के, विद्या के भगवान।
विश्व विद्या महेश्वर को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वविद्यामहेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥२००॥

पूर्णार्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

दिव्य दिव्यभाषापति धर्माध्यक्ष दमेश्वर पूतातम।
परम ज्योतिपूतवाक् तुम्हीं हो, तुम्हें पूतशासन वन्दन॥१॥
श्रीपति तुम्हीं तीर्थकृत् अर्हन, अरजा विरजा शुचि भगवान।
अमल केवली स्नातक हो, पूजा योग्य तुम्हीं ईशान॥२॥
हो अनन्त दीप्ति ज्ञानात्मा, स्वयंबुद्ध भुवनेश्वर तुम।
मुक्त शक्त हो निराबाध हो, प्रजापति हो निष्कल तुम॥३॥
जगज्ज्योति अक्षोभ्य निरंजन, निरक्तोक्ति तुम हो अक्षय।
अचलस्थित कूटस्थ निरामय, तुम स्थाणु तुम्हारी जय॥४॥
धर्म अग्रणी न्यायशास्त्रकृत, धर्मतीर्थकृत धरमातम।
धर्मपति ग्रामणी प्रणेता, नेता शास्ता को वन्दन॥५॥

वृषध्वज वृषाधीश वृषकेतु, वृष वृषपती वृषायुध हो।
हो वृषभांक वृषोद्भव भर्त्ता, नमन आपको झुक-झुक हो॥६॥
हिरण्यनाभि भाव भवान्तक, प्रभव विभव भव भूतातम।
भास्वान् तुम्हीं भूतभृत तुम हो, तुमको नमन भूतभावन॥७॥
हिरण्यगर्भ श्रीगर्भ स्वयंप्रभु, अभव प्रभूत-विभव हो तुम।
भूतनाथ हो आप जगत्प्रभु, वन्दन, तुम्हीं प्रभुतातम॥८॥
सार्व सर्वदृक् तुम सर्वादि, तुम सर्वज्ञ सर्वदर्शन।
तुम्हीं सर्वलोकेश सर्ववित्, सर्वलोकजित सर्वातम॥९॥
सुगति सुवाक् हो सुश्रुत्-सुश्रुत, बहुश्रुत सूरि विश्रुत हो।
विश्वत पाद शुचिश्रव तुम हो, विश्वशीर्ष हो अर्चित हो॥१०॥
सहस्रशीर्ष हो सहस्र-अक्ष हो, सहस्रपात् क्षेत्रज्ञ तुम्हीं।
भूतभव्य भवद्भर्ता हो, विश्वविद्या महेश्वर तुम्हीं॥११॥

(जोगीरासा)

श्री दिव्यादि शतक पूज कर, सौ-सौ अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु के सौ-सौ नाम जाप कर, 'सुव्रत' पुण्य कमाए॥
श्री जिनसहस्रनाम मंत्रों से, पाप नशे सुख होवे।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीदिव्यादि-शतकजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(पुष्पांजलिं...)

===

तृतीय अर्घ्यावली (दोहा)

सद्गुण से भूषित तुम्हीं, दो सबको स्थान।
स्थविष्ठ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ट-जिनाय अर्घ्यं...॥२०१॥

अंत रहित सौ वृद्ध हो, वृद्ध हुए पा ज्ञान।
स्थविर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्थविर-जिनाय अर्घ्यं...॥२०२॥

स्वामी तुम तो मुख्य हो, हम बच्चे नादान।
ज्येष्ठ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥२०३॥

सबके अग्रेसर तुम्हीं, प्रथम पूज्य स्थान।
पूज्य पृष्ट प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पृष्ट-जिनाय अर्घ्यं...॥२०४॥

सबके प्रिय अत्यंत हो, तुम बिन लगे न ध्यान।
पूज्य प्रेष्ठ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रेष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥२०५॥

अतिशय बुद्धि धारते, अतिशय बुद्धिमान।
वरिष्ठधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वरिष्ठधी-जिनाय अर्घ्यं...॥२०६॥

स्थिर प्रभु अत्यंत हो, अविनाशी भगवान।
परम पूज्य स्थेष्ठ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्थेष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥२०७॥

सबके गुरु अत्यंत हो, गुरुवर गरिमावान।
गरिष्ठ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥२०८॥

अनेक स्वरूपी हो प्रभु, हो अनन्त गुणवान।
परम पूज्य बंहिष्ठ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री बंहिष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥२०९॥

प्रशंसनीय प्रभु आप हो, गुण समूह की खान।
पूज्य श्रेष्ठ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥२१०॥

स्वामी अतिशय सूक्ष्म हो, तुम्हें न जाने ज्ञान।
अणिष्ठ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अणिष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥२११॥

जिनवाणी जगपूज्य है, दे शुद्धातम ज्ञान।
गरिष्ठगी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठगी-जिनाय अर्घ्यं...॥२१२॥

चतुर्गति संसार के, हर्ता हो बलवान।
पूज्य विश्वभृट् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वभृट्-जिनाय अर्घ्यं...॥२१३॥

सम्यक् चर्या के धनी, विधि का करो विधान।
पूज्य विश्वसृट् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्रीविश्वसृट्-जिनाय अर्घ्यं...॥२१४॥

त्रिभुवन के स्वामी तुम्हीं, सकल विश्व के धाम।
परम पूज्य विश्वेट् को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वेट्-जिनाय अर्घ्यं...॥२१५॥

जग की रक्षा तुम करो, करते रक्षित प्राण।
पूज्य विश्वभुक् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वभुक्-जिनाय अर्घ्यं...॥२१६॥

सब के स्वामी आप हो, हम भक्तों की शान।
पूज्य विश्वनायक जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वनायक-जिनाय अर्घ्यं...॥२१७॥

योग्य रहे विश्वास के, कण-कण में स्थान।
विश्वासी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वासी-जिनाय अर्घ्यं...॥२१८॥

विश्व रूप है आत्मा, विश्व रूप है ज्ञान।
विश्व-रूपात्मा को सदा, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वरूपात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥२१९॥

विश्व विजेता आप हो, दो हमको जय यान।
पूज्य विश्वजित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वजित-जिनाय अर्घ्यं...॥२२०॥

कालबली को जीतकर, गये नहीं श्मसान।
विजितान्तक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विजितान्तक-जिनाय अर्घ्यं...॥२२१॥

मनोविकार कुछ भी नहीं, नाशा खोटा ध्यान।
पूज्य विभव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विभव-जिनाय अर्घ्यं...॥२२२॥

हरो हमारे सप्त भय, आप नहीं भयवान।
पूज्य विभय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विभय-जिनाय अर्घ्यं...॥२२३॥

लक्ष्मी के स्वामी तुम्हीं, हो अतिशय बलवान।
पूज्य वीर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वीर-जिनाय अर्घ्यं...॥२२४॥

शोक रहित प्रभु आप हो, हरो शोक स्थान।
पूज्य विशोक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विशोक-जिनाय अर्घ्यं...॥२२५॥

जरा बुढ़ापे से रहित, करो जरा का हान।
पूज्य विजर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विजर-जिनाय अर्घ्यं...॥२२६॥

अनादिकाल से आप हो, नहीं नवीन पहचान।
पूज्य जरन् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जरन्-जिनाय अर्घ्यं...॥२२७॥

राग रहित प्रभु आप हो, वीतराग विज्ञान।
पूज्य विराग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विराग-जिनाय अर्घ्यं...॥२२८॥

तुम तो विषय विरक्त हो,काम न ये आसान
पूज्य विरत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विरत-जिनाय अर्घ्यं...॥२२९॥

परिग्रह से सम्बन्ध ना, ना ही उसका ध्यान।
असंग प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री असंग-जिनाय अर्घ्यं...॥२३०॥

एकाकी प्रभु आप हो, अलग-अलग पहचान।
विविक्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विविक्त-जिनाय अर्घ्यं...॥२३१॥

ईर्ष्यालु प्रभु हो नहीं, गये देव अभिमान।
पूज्य वीत्मत्सर जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वीत्मत्सर-जिनाय अर्घ्यं...॥२३२॥

विनम्र जनता को दिए, भक्त-बन्धु वरदान।
विनेयजनताबंधु को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विनेयजनताबन्धु-जिनाय अर्घ्यं...॥२३३॥

कर्मकालिमा हर चुके, हरो पाप अज्ञान।
विलीनाशेष-कल्मष प्रभु, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विलीनाशेष-कल्मष जिनाय अर्घ्यं...॥२३४॥

पर में कुछ संयोग ना, योग हरे कर ध्यान।
पूज्य वियोग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वियोग-जिनाय अर्घ्यं...॥२३५॥

णमोकार जिन योग दो, योगों के विद्वान।
पूज्य योगवित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री योगवित्-जिनाय अर्घ्यं...॥२३६॥

पण्डित के पण्डित महा, मण्डित पूरण ज्ञान।
परम पूज्य विद्वान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विद्वान-जिनाय अर्घ्यं...॥२३७॥

धर्मसृष्टि करतार हो, जग के गुरु महान।
पूज्य विधाता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विधाता-जिनाय अर्घ्यं...॥२३८॥

प्रशंसनीय प्रभु आपका, क्रियाकांड अनुष्ठान।
पूज्य सुविधि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुविधि-जिनाय अर्घ्यं...॥२३९॥

बुद्धि के सम्राट हो, अतिशय प्रज्ञावान।
पूज्य सुधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुधी-जिनाय अर्घ्यं...॥२४०॥

प्रभु धारो उत्तम-क्षमा, हरो क्रोध अभिमान।
क्षान्तिभाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षान्तिभाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥२४१॥

सहनशील प्रभु आप हो, पृथ्वी मात समान।
पृथिवीमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पृथिवीमूर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥२४२॥

सब अशान्तियाँ हर चुके, करो शान्ति रसपान।
शान्तिभाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिभाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥२४३॥

शुद्ध करो विधि मल हरो, निर्मल नीर समान।
सलिलात्मक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सलिलात्मक-जिनाय अर्घ्यं...॥२४४॥

बँधते ना सम्बन्ध में, बहते पवन समान।
वायुमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वायुमूर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥२४५॥

संग रहित निस्संग हो, फिर भी हो धनवान।
पूज्य असंगात्मक जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री असंगात्मक-जिनाय अर्घ्यं...॥२४६॥

कर्मकाष्ट को भस्म कर, प्रज्ज्वल अग्नि समान।
वह्निमूर्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वह्निमूर्त-जिनाय अर्घ्यं...॥२४७॥

धर्मामृत वर्षा रहे, हर अधर्म अज्ञान।
अधर्मधृक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अधर्मधृक्-जिनाय अर्घ्यं...॥२४८॥

ध्यान अग्नि के कुंड में, करो कर्म का होम।
पूज्य सुयज्वा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुयज्वा-जिनाय अर्घ्यं...॥२४९॥

निज मंदिर में कर रहे, भावार्चन निज ज्ञान।
यजमानात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री यजमानात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥२५०॥

परम परम आनन्द में, नहा रहे भगवान।
सुत्वा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुत्वा-जिनाय अर्घ्यं...॥२५१॥

इंद्र पूज्य प्रभु आप हो, शत इन्द्रों के प्राण।
सुत्रामपूजित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुत्रामपूजित-जिनाय अर्घ्यं...॥२५२॥

ध्यान अग्नि से कर्म हर, यज्ञ रूप कर ज्ञान।
ऋत्विक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ऋत्विक-जिनाय अर्घ्यं...॥२५३॥

मुखिया हो उस यज्ञ के, जहाँ होम है ज्ञान।
पूज्य यज्ञपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री यज्ञपति-जिनाय अर्घ्यं...॥२५४॥

पूज्यों के भी पूज्य हो, भक्त करें सम्मान।
पूज्य याज्यप्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री याज्य-जिनाय अर्घ्यं...॥२५५॥

धर्म यज्ञ के हेतु हो, यज्ञों के सामान।
परम पूज्य यज्ञांग को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री यज्ञांग-जिनाय अर्घ्यं...॥२५६॥

भव त्यागे त्यागे मरण, करो सुखामृत पान।
अमृत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमृत-जिनाय अर्घ्यं...॥२५७॥

निज आतम में लीन हो, छोड़ा सकल जहान।
परम पूज्य हवि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हवि-जिनाय अर्घ्यं...॥२५८॥

आप सर्व व्यापी हुए, निर्मल गगन समान।
व्योममूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री व्योममूर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥२५९॥

चित रूपी सो क्या रहा, रूप रंग का ज्ञान।
पूज्य अमूर्तात्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमूर्तात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥२६०॥

कर्म लेप से हो रहित, स्वाभाविक भगवान।
परम पूज्य निर्लेप को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्लेप-जिनाय अर्घ्यं...॥२६१॥

मल-मूत्रादिक से रहित, राग-द्वेष ना मान।
निर्मल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मल-जिनाय अर्घ्यं...॥२६२॥

आप सदा स्थिर रहो, ऊँचे मेरु समान।
पूज्य अचल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अचल-जिनाय अर्घ्यं...॥२६३॥

शान्त सुशोभित आप हो, शीतल चन्द्र समान।
सोममूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सोममूर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥२६४॥

आतम छवि अति सौम्य है, मन मोहक मुस्कान।
सुसौम्यात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुसौम्यात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥२६५॥

परम प्रतापी तेजमय, चमको सूर्य समान।
सूर्यमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यमूर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥२६६॥

परम प्रभावी केवली, अतिशय प्रतिभावान।
पूज्य महाप्रभ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥२६७॥

मंत्रों के ज्ञाता तुम्हीं, मंत्रों के विद्वान।
पूज्य मंत्रवित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मंत्रवित्-जिनाय अर्घ्यं...॥२६८॥

मंत्रों के कर्त्ता तुम्हीं, दो मंत्रों का ज्ञान।
पूज्य मंत्रकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मंत्रकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥२६९॥

मंत्रों की कर मंत्रणा, करते आतम ध्यान।
मंत्री प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मंत्री-जिनाय अर्घ्यं...॥२७०॥

मंत्र स्वरूपी आप हो, हमें मंत्र दो दान।
मंत्रमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मंत्रमूर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥२७१॥

अनन्त वस्तुएँ जानते, पाकर अनन्तज्ञान।
अनन्तग प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तग-जिनाय अर्घ्यं...॥२७२॥

आतम ना परतंत्र है, पराधीन ना जान।
स्वतंत्र प्रभु के नाम को,हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वतंत्र-जिनाय अर्घ्यं...॥२७३॥

कर्त्ता हो सिद्धांत के, तंत्रों की हो शान।
पूज्य तंत्रकृत् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तंत्रकृत्-जिनाय अर्घ्यं...॥२७४॥

अंतःकरण पवित्र है, पवित्रता दो दान।
पूज्य स्वन्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वन्त-जिनाय अर्घ्यं...॥२७५॥

यम के तुम यमराज हो, त्याग दिया श्मशान।
कृतान्तान्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतान्तान्त-जिनाय अर्घ्यं...॥२७६॥

पुण्य बृद्धि के हेतु हो, हरो पाप ज्ञान।
पूज्य कृतान्तकृत् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतान्तकृत्-जिनाय अर्घ्यं...॥२७७॥

देवों के भी देव हो, पुण्यफला भगवान।
पूज्य कृति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृति-जिनाय अर्घ्यं...॥२७८॥

महा मोक्ष पुरुषार्थ को, सिद्ध किए भगवान।
कृतार्थ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतार्थ-जिनाय अर्घ्यं...॥२७९॥

प्रशंसनीय पुण्यात्मा हो, सब करते सम्मान।
परम पूज्य सत्कृत्य को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्कृत्य-जिनाय अर्घ्यं...॥२८०॥

कर डाले कर्तव्य सब, सब में सफल महान।
परम पूज्य कृतकृत्य को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतकृत्य-जिनाय अर्घ्यं...॥२८१॥

भस्म कर्म नोकर्म कर, पूर्ण यज्ञ तप ध्यान।
कृतकृतु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतकृतु-जिनाय अर्घ्यं...॥२८२॥

अविनाशी प्रभु आप हो, शाश्वत पुण्य निधान।
पूज्य नित्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नित्य-जिनाय अर्घ्यं...॥२८३॥

मृत्यु विजेता आप हो, मौत से न भयवान।
मृत्युंजय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मृत्युंजय-जिनाय अर्घ्यं...॥२८४॥

आत्मा कभी न मर सके, मरे ना दर्शन-ज्ञान।
अमृत्यु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमृत्यु-जिनाय अर्घ्यं...॥२८५॥

मरण रहित अमृत रहे, दो अमृत का दान।
अमृतात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमृतात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥२८६॥

अविनश्वर प्रभु हो गये, करो मोक्ष का दान।
अमृतोद्भव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमृतोद्भव-जिनाय अर्घ्यं...॥२८७॥

आत्मब्रह्म में लीन हो, ब्रह्म रूप विज्ञान।
ब्रह्मनिष्ठ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मनिष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥२८८॥

ब्रह्म ज्ञान उत्कृष्ठ है, पंचम केवलज्ञान।
परमब्रह्म प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परमब्रह्म-जिनाय अर्घ्यं...॥२८९॥

ब्रह्म स्वरूपी आत्मा, सुखदा दर्शन-ज्ञान।
ब्रह्मात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥२९०॥

आत्म-ब्रह्म को पा लिया, हुआ ब्रह्म जब ज्ञान।
पूज्य ब्रह्मसम्भव जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मसम्भव-जिनाय अर्घ्यं...॥२९१॥

ब्रह्म रूप गणधर रहे, जिनके हो भगवान।
महाब्रह्मपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाब्रह्मपति-जिनाय अर्घ्यं...॥२९२॥

सामान्य केवली आपका, करते हैं गुणगान।
परम पूज्य ब्रह्मेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मेश-जिनाय अर्घ्यं...॥२९३॥

समवसरण या मोक्ष के, ब्रह्म रूप भगवान।
महाब्रह्मपदेश्वर को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाब्रह्मपदेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥२९४॥

भक्तों को आनन्द दो, रहते सदा प्रसन्न।
सुप्रसन्न प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुप्रसन्न-जिनाय अर्घ्यं...॥२९५॥

द्रव्य भाव नौ कर्म के, मल से रहित प्रसन्न।
प्रसन्नात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रसन्नात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥२९६॥

इन्द्रीजय को तप किया, पाया धार्मिक ज्ञान।
ज्ञानधर्मदम-प्रभु को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानधर्मदमप्रभु-जिनाय अर्घ्यं...॥२९७॥

किया कषायों को प्रशम, उद्घाटित निज ज्ञान।
प्रशमात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशमात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥२९८॥

परम शान्त प्रभु रूप हैं, देते शान्ति महान।
प्रशान्तात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥२९९॥

आप शलाका पुरुष में, उत्तम हुए महान।
पुराण-पुरुषोत्तम नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुराणपुरुषोत्तम-जिनाय अर्घ्यं...॥३००॥

पूर्णार्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

जयेष्ठ स्थविर प्रष्ठ वरिष्ठधी, प्रेष्ठ स्थविष्ठ श्रेष्ठ रहे।
अणिष्ठ गरिष्ठ स्थेष्ठ गरिष्ठगी, नमन तुम्हें बंहिष्ठ रहे॥१॥
विश्वभुट् विश्वसृड् विश्वेड् तुम हो, विश्वभुक् विश्वनायक हो।
विश्व रूपात्मा विश्वासी तुम, विश्वजित् विजितांतक हो॥२॥
विभव विभय तुम वीर विजर हो, विरत जरन् तुम रहे विशोक।
तुम विराग असंग विविक्त हो, तुम्हें वीतमत्सर है धोक॥३॥
विनेयजनताबन्धु योगवित्, सुधी विधाता तुम विद्वान।
तुम विलीन अशेष कल्मष हो, सुविधि वियोग तुम्हीं भगवान॥४॥
क्षान्तिभाक हो शान्तिभाक हो, सलिलात्मक पृथिवीमूर्ति।
वह्निमूर्ति हो अधर्मधृक् हो, असंगात्मा वायुमूर्ति॥५॥

याज्य सुयज्वा यजमानात्मा, सुत्वा हवि पूजित हत्राम।
ऋत्विक यज्ञपती अमृत हो, तुम यज्ञांग नमन के धाम॥६॥
व्योममूर्ति हो अमूर्त आत्मा, सौम्यात्मा निर्लेप तुम्हीं।
सोममूर्ति हो सूर्यमूर्ति हो, अचल महाप्रभ रूप तुम्हीं॥७॥
मंत्रवित् मंत्रमूर्ति मंत्रकृत, मंत्री अंतग स्वंत स्वतंत्र।
तुम हो कृतांतांत तंत्रकृत, कृतांतकृत दो सुख का मंत्र॥८॥
कृती कृतार्थ सत्कृत्य कृतकृतु, मृत्युंजय अमृत-आतम।
अमृत-उद्भव नित्य अमृत्यु, तुम कृत्कृत्य तुम्हें वन्दन॥९॥
ब्रह्मनिष्ठ हो परम्ब्रह्म हो, महाब्राह्मपति ब्रह्मातम।
ब्रह्मेट महाब्रह्मपदेश्वर, तुम्हें ब्रह्मसम्भव वन्दन॥१०॥
सुप्रसन्न हो प्रसन्न-आत्मा, ज्ञान धर्मदम प्रभु तुम हो।
प्रशमात्मा हो प्रशान्त-आत्मा, पुराण पुरुषोत्तम तुम हो॥११॥

(जोगीरासा)

श्री स्थविष्ठादि शतक पूज कर, सौ-सौ अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु के सौ-सौ नाम जाप कर, 'सुव्रत' पुण्य कमाए॥
श्री जिनसहस्रनाम मंत्रों से, पाप नशे सुख होवे।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ठादि-शतकजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(पुष्पांजलिं...)

===

चतुर्थ अर्घ्यावली (दोहा)

अशोक तरु के चिह्न से, जिनवर की पहचान।
महाअशोकध्वज नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाअशोकध्वज-जिनाय अर्घ्यं...॥३०१॥

शोक रहित प्रभु आप हो, हरो आर्त दुख ध्यान।
अशोक प्रभु जिननाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अशोक-जिनाय अर्घ्यं...॥३०२॥

हम सबके तुम हो पिता, देते हो सुख दान।
परम पूज्य क नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री क-जिनाय अर्घ्यं...॥३०३॥

स्वर्ग घुमाते हो हमें, देकर स्वर्ग विमान।
स्रष्टा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्रष्टा-जिनाय अर्घ्यं...॥३०४॥

कमलासन पर शोभते है, खिलते पद्म समान।
पूज्य पद्मविष्टर जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मविष्टर-जिनाय अर्घ्यं...॥३०५॥

लक्ष्मी के स्वामी तुम्हीं, हो सबसे धनवान।
परम पूज्य पद्मेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मेश-जिनाय अर्घ्यं...॥३०६॥

गमन समय चरणों तले, पंकज स्वर्ण समान।
पूज्य पद्मसंभूति को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मसंभूति-जिनाय अर्घ्यं...॥३०७॥

सुन्दर सी काया रही, नाभि कमल समान।
पद्मनाभि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाभि-जिनाय अर्घ्यं...॥३०८॥

समाधान उत्तर तुम्हीं, हम सब तो हैं प्रश्न।
पूज्य अनुत्तर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनुत्तर-जिनाय अर्घ्यं...॥३०९॥

पद्माकृति की योनि से, हुए आप उत्पन्न।
पद्मयोनि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मयोनि-जिनाय अर्घ्यं...॥३१०॥

इस जग में उत्पन्न हो, करो जगत उत्पन्न।
जगद्योनि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगद्योनि-जिनाय अर्घ्यं...॥३११॥

ज्ञान गम्य सो इत्य हो, करते सब गुणगान।
पूज्य इत्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री इत्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३१२॥

स्तुति के ईश्वर रहे, चरण शरण दो दान।
स्तुतीश्वर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्तुतीश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥३१३॥

स्तुति के प्रभु योग्य हैं, हम गुण करें बखान।
स्तुत्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्तुत्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३१४॥

स्तुति के प्रभु पात्र हैं, पूज्य भेद विज्ञान।
स्तवनार्ह प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्तवनार्ह-जिनाय अर्घ्यं...॥३१५॥

इन्द्रियों को वश में किए, एसे हो बलवान।
हृषीकेश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हृषीकेश-जिनाय अर्घ्यं...॥३१६॥

कौन तुम्हें जीते यहाँ, तुम जीते मद मान।
जितजेय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जितजेय-जिनाय अर्घ्यं...॥३१७॥

योग्य क्रियाएँ कर चुके, पा शुद्धातम ज्ञान।
कृतक्रिय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतक्रिय-जिनाय अर्घ्यं...॥३१८॥

बारह बारह गण सभा, अधिपति है भगवान।
पूज्य गणाधिप नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गणाधिप-जिनाय अर्घ्यं...॥३१९॥

सकल संघ के मुख्य हो, गण में ज्येष्ठ महान।
परम पूज्य गणज्येष्ठ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गणज्येष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥३२०॥

गुण गण के स्वामी रहे, अनन्त गुण भगवान।
पूज्य गण्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गण्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३२१॥

पवित्र हो सो पुण्य हो, दिए सातिशय पुण्य।
पूज्य पुण्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३२२॥

गण के अग्रेसर बड़े, हम को करो महान।
गणाग्रणी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गणाग्रणी-जिनाय अर्घ्यं...॥३२३॥

हम सब को गुण बाँटते, सकल गुणों की खान।
पूज्य गुणाकर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुणाकर-जिनाय अर्घ्यं...॥३२४॥

गुण के भरे समुद्र हो, रखो गुणों का ज्ञान।
गुणांभोधि प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुणांभोधि-जिनाय अर्घ्यं...॥३२५॥

आप स्वयं गुणवान हो, रखो गुणों का ज्ञान।
गुणज्ञ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुणज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥३२६॥

गुण गण के नायक रहे, हरो दोष अज्ञान।
गुणनायक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुणनायक-जिनाय अर्घ्यं...॥३२७॥

गुण समूह की कर विनय, बन बैठे गुणवान।
पूज्य गुणादरी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुणादरी-जिनाय अर्घ्यं...॥३२८॥

अवगुण के उच्छेद कर, प्रकटाया गुण-ज्ञान।
पूज्य गुणोच्छेदी जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुणोच्छेदी-जिनाय अर्घ्यं...॥३२९॥

वैभाविक गुण जब मिटे, प्रकटे स्वभाव ज्ञान।
निर्गुण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्गुण-जिनाय अर्घ्यं...॥३३०॥

पवित्र गुणों को धारते, पुण्यफला परिणाम।
पूज्य पुण्यगी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यगी-जिनाय अर्घ्यं...॥३३१॥

आप शुद्ध गुण रूप हो, गुण गण के संस्थान।
परम पूज्य गुण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुण-जिनाय अर्घ्यं...॥३३२॥

हम सब की प्रभु हो शरण, चरण शरण दो दान।
शरण्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शरण्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३३३॥

वचन आपके पुण्य हैं, हरें वचन संग्राम
पुण्यवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यवाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥३३४॥

स्वामी परम पवित्र हो,पावन करो जहान
पूज्य पूत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पूत-जिनाय अर्घ्यं...॥३३५॥

जग में सबसे श्रेष्ठ हो, सबको दो वरदान।
वरेण्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वरेण्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३३६॥

स्वामी हो तुम पुण्य के, पुण्यफला भगवान।
पूज्य पुण्यनायक जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यनायक-जिनाय अर्घ्यं...॥३३७॥

तुम गणना के पात्र हो, अनगिन गुण परिणाम।
अगण्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अगण्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३३८॥

पुण्य बुद्धि को धारते, हरो पाप अज्ञान।
पूज्य पुण्यधी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यधी-जिनाय अर्घ्यं...॥३३९॥

समवसरण के योग्य हो, हम सबके कल्याण।
पूज्य गुण्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुण्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३४०॥

करता हो तुम पुण्य के, हरता पाप महान।
पूज्य पुण्यकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥३४१॥

पुण्य रूप जिनमार्ग हो, हरो कुपथ नादान।
पूज्य पुण्यशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यशासन-जिनाय अर्घ्यं...॥३४२॥

सम्यक धर्म समूह हो, आतम के आराम।
जिनवर धर्माराम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्माराम-जिनाय अर्घ्यं...॥३४३॥

गुण समूह अरिहन्त हो,गुण गण के निर्वाण।
परम पूज्य गुणग्राम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुणग्राम-जिनाय अर्घ्यं...॥३४४॥

पुण्य पाप को रोकते, निज में कर विश्राम।
पुण्यापुण्यनिरोधक को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यापुण्यनिरोधक-जिनाय अर्घ्यं...॥३४५॥

हिंसादिक हर पाप को, दूर किए भगवान।
अर्हत पापापेत को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पापापेत-जिनाय अर्घ्यं...॥३४६॥

सकल पाप से हो रहित, पापों का क्या काम।
पूज्य विपापात्मा जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विपापात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥३४७॥

पाप कर्म को भस्म कर, खिला पुण्य उद्यान।
पूज्य विपात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विपात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥३४८॥

वीत गया कल्मष करम, खिला भेद विज्ञान।
पूज्य वीतकल्मष जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वीतकल्मष-जिनाय अर्घ्यं...॥३४९॥

परिग्रह करता द्वन्द्व है, यही त्याग दुख खान।
परम पूज्य निर्द्वन्द्व को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्द्वन्द्व-जिनाय अर्घ्यं...॥३५०॥

सकल दोष के कोश को, वह त्यागा मदमान।
निर्मद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मद-जिनाय अर्घ्यं...॥३५१॥

शान्त कषायों को किया, तजे उपाधि नाम।
पूज्य शान्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्त-जिनाय अर्घ्यं...॥३५२॥

निज मोही से काँपता, मोह महा बलवान।
परम पूज्य निर्मोही को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मोही-जिनाय अर्घ्यं...॥३५३॥

दूर उपद्रव से हुए, हरो उपद्रव शाम।
निरुपद्रव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरुपद्रव-जिनाय अर्घ्यं...॥३५४॥

पलक न झपकें आपकी, भक्त तके दिन रैन।
निर्निमेष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्निमेष-जिनाय अर्घ्यं...॥३५५॥

कवलाहार न तुम करो, तजा भोज्य रसपान।
निराहार प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निराहार-जिनाय अर्घ्यं...॥३५६॥

जगत क्रियाएँ तज चुके, जिनवर आतमराम।
निष्क्रिय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निष्क्रिय-जिनाय अर्घ्यं...॥३५७॥

हुए संकटों से रहित, संकट मोचन नाम।
निरुपप्लव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरुपप्लव-जिनाय अर्घ्यं...॥३५८॥

कर्म कलंकों से रहित, निर्मल उज्ज्वल धाम।
निष्कलंक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निष्कलंक-जिनाय अर्घ्यं...॥३५९॥

पापों की रैना गई, चहकी मैना पुण्य।
पूज्य निरस्तैना जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरस्तैना-जिनाय अर्घ्यं...॥३६०॥

प्रज्ञा के अपराध के, जला दिए बागान।
अर्हम् निर्धूतांग को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्धूतांग-जिनाय अर्घ्यं...॥३६१॥

रोका आस्रव कर्म का, नौका चली महान।
पूज्य निरास्रव नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरास्रव-जिनाय अर्घ्यं...॥३६२॥

तुम तो बड़े विशाल हो, हमको करो महान।
विशाल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विशाल-जिनाय अर्घ्यं...॥३६३॥

सूर्य चाँद से भी अधिक, ज्योतित केवलज्ञान।
विपुलज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विपुलज्योति-जिनाय अर्घ्यं...॥३६४॥

अतुलनीय अनुपम रहे, तुल न सके भगवान।
पूज्य अतुल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अतुल-जिनाय अर्घ्यं...॥३६५॥

अचिंत्य वैभव आपका, कौन कर सके ध्यान।
अचिंत्यवैभव नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अचिंत्यवैभव-जिनाय अर्घ्यं...॥३६६॥

गणधर शिष्यों से सदा, वेष्टित हो भगवान।
सुसंवृत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुसंवृत-जिनाय अर्घ्यं...॥३६७॥

गुप्त आत्मा को किया, किया गुप्ति मय ध्यान।
सुगुप्तात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुगुप्तात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥३६८॥

उत्तम ज्ञाता आप हो, हो पुंगव विद्वान।
पूज्य सुभृत् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुभृत्-जिनाय अर्घ्यं...॥३६९॥

सकल विकल नय जानते, बोलो सम्यग्ज्ञान।
सुनयतत्त्ववित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुनयतत्त्ववित्-जिनाय अर्घ्यं...॥३७०॥

अध्यातम विद्या धरो, धारो केवलज्ञान।
एकविद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री एकविद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३७१॥

अनेक विद्याएँ धरो, आप महा विद्वान।
महाविद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाविद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३७२॥

मन से रहते मौन जो, धारो प्रत्यक्ष ज्ञान।
परम पूज्य मुनि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मुनि-जिनाय अर्घ्यं...॥३७३॥

तपस्वियों के ईश हो, साधक संत प्रधान।
जिनवर परिवृढ़ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परिवृढ़-जिनाय अर्घ्यं...॥३७४॥

सब जग की रक्षा करो, सबको दो स्थान।
परम पूज्य पति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पति-जिनाय अर्घ्यं...॥३७५॥

बुद्धि के तुम ईश हो, बाँटो धी धीमान।
पूज्य धीश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धीश-जिनाय अर्घ्यं...॥३७६॥

विद्या के सागर तुम्हीं, विद्या के हो ज्ञान।
परम पूज्य विद्यानिधि, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विद्यानिधि-जिनाय अर्घ्यं...॥३७७॥

जानो सब प्रत्यक्ष तुम, तज परोक्ष अज्ञान।
साक्षी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री साक्षी-जिनाय अर्घ्यं...॥३७८॥

मोक्षमार्ग दिखला रहे, परमत का हर ज्ञान।
पूज्य विनेता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विनेता-जिनाय अर्घ्यं...॥३७९॥

हरण मरण का कर चुके, जय हो करुणावान।
विहितान्तक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विहितान्तक -जिनाय अर्घ्यं...॥३८०॥

संरक्षक तुम हो पिता, हम तेरी संतान।
पूज्य पिता प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पिता-जिनाय अर्घ्यं...॥३८१॥

गुरुओं के भी हो गुरु, दादा गुरु महान।
पूज्य पितामह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पितामह-जिनाय अर्घ्यं...॥३८२॥

पालनहारे जग प्रभु, रक्षक हो भगवान।
पाता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पाता-जिनाय अर्घ्यं...॥३८३॥

तुम तो पूर्ण पवित्र हो, त्यागा नाम निशान।
पवित्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पवित्र-जिनाय अर्घ्यं...॥३८४॥

सबको करते शुद्ध तुम, चिदानन्द भगवान।
पावन प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पावन-जिनाय अर्घ्यं...॥३८५॥

ज्ञान स्वरूपी आप हो, गमनागमन ना जान।
परम पूज्य गति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गति-जिनाय अर्घ्यं...॥३८६॥

रक्षक हो भक्षक नहीं, ज्ञान चेतनावान।
त्राता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्राता-जिनाय अर्घ्यं...॥३८७॥

रोग हरें जिनवैद्य सब, जपो जाप जिननाम।
पूज्य भिषग्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भिषग्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥३८८॥

कौन आप सा है यहाँ, जग में श्रेष्ठ महान।
पूज्य वर्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वर्य-जिनाय अर्घ्यं...॥३८९॥

स्वर्ग मोक्ष दाता तुम्हीं, हो साँचे वरदान।
पूज्य वरद प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वरद-जिनाय अर्घ्यं...॥३९०॥

मनोकामना पूर्ण तुम, दिए मोक्ष का दान।
पूज्य परम प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परम-जिनाय अर्घ्यं...॥३९१॥

पावन हो पावन करो, करते हो कल्याण।
पुमान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुमान-जिनाय अर्घ्यं...॥३९२॥

छन्द शास्त्र व्याकरण से, करो निरूपित ज्ञान।
परम पूज्य कवि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कवि-जिनाय अर्घ्यं...॥३९३॥

पुरुषों में उत्तम रहे, गाते वेद पुराण।
पुराणपुरुष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुराणपुरुष-जिनाय अर्घ्यं...॥३९४॥

स्वामी अतिशय वृद्ध हो, फिर भी रहे जवान।
वर्षीयान् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वर्षीयान्-जिनाय अर्घ्यं...॥३९५॥

ज्ञान चेतना के धनी, रखो वृषभ निज ज्ञान।
पूज्य वृषभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभ-जिनाय अर्घ्यं...॥३९६॥

आदि देव पुरुदेव हो, सबसे बड़े महान।
परम पूज्य पुरु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुरु-जिनाय अर्घ्यं...॥३९७॥

जगत प्रतिष्ठा आपकी, भक्त हुए जगमान्य।
प्रतिष्ठाप्रसव नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठाप्रसव-जिनाय अर्घ्यं...॥३९८॥

भवसागर के सेतु हो, हेतु मोक्ष मुकाम।
पूज्य हेतु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री हेतु-जिनाय अर्घ्यं...॥३९९॥

त्रय जग के रक्षक तुम्हीं, मुमुक्षु के निर्वाण।
भुवनैकपितामह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भुवनैकपितामह-जिनाय अर्घ्यं...॥४००॥

पूर्णार्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

महा-अशोक ध्वज-अशोक तुम हि, स्रष्टा क पद्मविष्टर हो।
पद्मनाभि पद्मेश तुम्हीं हो, पद्मसम्भूति अनुत्तर हो॥१॥
पद्मयोनि हो जगत्योनि हो, इत्य स्तुत्य स्तुतीश्वर हो।
हृषीकेश जितजेय कृतक्रिय, स्तवनार्ह जिनेश्वर हो॥२॥
गणज्येष्ठ हो गण्य गणाधिप, पुण्य गणाकर गणाग्रणी।
गुणाम्भोधि गुणज्ञ गुणनायक, तुम्हें नमन कर बनूँ गुणी॥३॥
गुणादरी निर्गुण शरण्य गुण, पूत गुणोच्छेदी तुम हो।
पुण्यवाक् पुण्यगी वरेण्य तुम, नमन पुण्यनायक तुम हो॥४॥
अगण्य पुण्यधि गुण्य पुण्यकृत, धर्माराम पुण्यशासन।
पुण्यापुण्य निरोधक तुम हो, गुणग्राम तुमको वन्दन॥५॥

पापापेत विपापात्मा हो, विपात्मा वीतकल्मष हो।
निरूपद्रव निर्मोह शान्त हो, तुम्हीं निर्द्वन्द्व निर्मद हो॥६॥
निर्निमेष हो निराहार हो, निष्क्रिय हो निरुपप्लव हो।
निर्धूतांग निरस्तैना हो, निष्कलंक निरास्रव हो॥७॥
विपुलज्योति हो अतुल सुभुत हो, अचिंत्य वैभव आप विशाल।
सुनय-तत्ववित् सुगुप्तात्मा हो, सुसंवृत तुमको नत भाल॥८॥
एकविद्य मुनि महाविद्यपति, धीश विनेता परिवृढ हो।
विद्यानिधि साक्षी विहतान्तक, नमन आपको झुक-झुक हो॥९॥
पिता पितामह पाता पावन, पवित्र-गति हो परम पुमान।
वर्य भिषग्वर त्राता हो तुम, तुम्हीं वरद हो तुम्हें प्रणाम॥१०॥
कवि पुरु पुराण पुरुष वृषभ हो, हेतु पितामह हो भुवनैक।
वर्षीयान् प्रतिष्ठा प्रसव हो, तुमको वन्दन हो सिर टेक॥११॥

(जोगीरासा)

श्री महादि शतक पूज कर, सौ-सौ अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु के सौ-सौ नाम जाप कर, 'सुव्रत' पुण्य कमाए॥
श्री जिनसहस्रनाम मंत्रों से, पाप नशे सुख होवे।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं श्री महादि-शतकजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(पुष्पांजलिं...)

===

पंचम अर्घ्यावली (दोहा)

अशोक तरुतल शोभते, धार्मिक हो श्रीमान।
श्रीवृक्षलक्षण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीवृक्षलक्षण-जिनाय अर्घ्यं...॥४०१॥

श्री से आलिंगित रहे, यह लक्षण जिन चिह्न।
श्लक्षण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री श्लक्षण-जिनाय अर्घ्यं...॥४०२॥

जिन लक्षण से सहित हो, जिनशासन की शान।
लक्षण्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री लक्षण्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४०३॥

श्रेष्ठ एक सौ आठ हैं, शुभ लक्षण पहचान।
शुभलक्षण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शुभलक्षण-जिनाय अर्घ्यं...॥४०४॥

अक्ष इन्द्रियों से रहित, मिला अतीन्द्रिय ज्ञान।
निरक्ष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निरक्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥४०५॥

लोचन हैं राजीव सम, सुन्दर कमल समान।
पुण्डरीकाक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्डरीकाक्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥४०६॥

वृद्धिंगत प्रभु हो रहे, पुष्ट करो सुख ज्ञान।
पुष्कल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्कल-जिनाय अर्घ्यं...॥४०७॥

सुन्दर-सुन्दर कमल दल, जैसे नयन महान।
पुष्करेक्षण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्करेक्षण-जिनाय अर्घ्यं...॥४०८॥

मोक्ष सिद्धि दाता तुम्हीं, देते हो निर्वाण।
सिद्धिद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धिद-जिनाय अर्घ्यं...॥४०९॥

हुए मनोरथ सफल सब, सफल करो सब काम।
सिद्धसंकल्प प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धसंकल्प-जिनाय अर्घ्यं...॥४१०॥

पूर्ण रूप से सिद्ध हो, आदि अंत अवसान।
सिद्धात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥४११॥

मोक्षमार्ग साधन तुम्हीं, करते सिद्ध महान।
पूज्य सिद्धसाधन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाधन-जिनाय अर्घ्यं...॥४१२॥

बुद्धिमान जानें तुम्हें, जानें सम्यग्ज्ञान।
बुद्धबोध्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री बुद्धबोध्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४१३॥

प्रशंसनीय अत्यंत हैं, बोधि समाधि ज्ञान।
महाबोधि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाबोधि-जिनाय अर्घ्यं...॥४१४॥

पूज्यपना अतिशय हुआ, हुआ कर्म का हान।
वर्धमान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान-जिनाय अर्घ्यं...॥४१५॥

महा ऋद्धियों के धनी, ऋद्धि-सिद्धि दो दान।
पूज्य महर्धिक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महर्धिक-जिनाय अर्घ्यं...॥४१६॥

चार-चार अनुयोग के, जानो वेद पुराण।
परम पूज्य वेदाङ्ग को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वेदाङ्ग-जिनाय अर्घ्यं...॥४१७॥

भेद-ज्ञान जानो तुम्हीं, समक्ष वेद विज्ञान।
पूज्य वेदविद् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वेदविद्-जिनाय अर्घ्यं...॥४१८॥

ऋषियों द्वारा जानने, योग्य आप भगवान।
पूज्य वेद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वेद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४१९॥

हुए दिगम्बर जन्म से, यथाजात भगवान।
जातरूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जातरूप-जिनाय अर्घ्यं...॥४२०॥

विद्वानों से श्रेष्ठ हो, ज्ञानी के हो ज्ञान।
पूज्य विदाम्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विदाम्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥४२१॥

तुम्हें जानते केवली, या फिर वेद-पुराण।
वेदवेद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वेदवेद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४२२॥

तुम तो अनुभव गम्य हो, स्वानुभूति के धाम।
स्वसंवेद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वसंवेद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४२३॥

वेद रहित हो क्या तुम्हें, जानें वेद पुराण।
विवेद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विवेद-जिनाय अर्घ्यं...॥४२४॥

वक्ताओं में श्रेष्ठ हो, आगम वचन प्रमाण।
वदतांवर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वदतांवर-जिनाय अर्घ्यं...॥४२५॥

आदि अंत से हो रहित, शुद्धातम परिमाण।
अनादिनिधन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधन-जिनाय अर्घ्यं...॥४२६॥

प्रतिभाषित हो ज्ञान से, व्यक्त रूप भगवान।
पूज्य व्यक्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री व्यक्त-जिनाय अर्घ्यं...॥४२७

बोधगम्य प्रभु वचन हैं, समझे सकल जहान।
व्यक्तवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री व्यक्तवाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥४२८॥

जिन आज्ञा सब मानते,विरोध रहित श्रुत ज्ञान।
पूज्य व्यक्तशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री व्यक्तशासन-जिनाय अर्घ्यं...॥४२९॥

युग के आदि में दिए, षट्कर्मों का ज्ञान।
युगादिकृत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री युगादिकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥४३०॥

युग-युग के आधार हो, करते युग उत्थान।
युगाधार प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री युगाधार-जिनाय अर्घ्यं...॥४३१॥

युग के आदि में हुए, भक्तों के भगवान।
युगादि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री युगादि-जिनाय अर्घ्यं...॥४३२॥

कर्मभूमि जग आदि में, आप हुए उत्पन्न।
जगदादिज प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगदादिज-जिनाय अर्घ्यं...॥४३३॥

स्वामी इंद्र नरेन्द्र के, हम सबके सम्मान।
अतीन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्र-जिनाय अर्घ्यं...॥४३४॥

इन्द्रिय गोचर हो नहीं, तुमको जाने कौन।
अतीन्द्रिय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्रिय-जिनाय अर्घ्यं...॥४३५॥

शुक्ल ध्यान कर हो गये, परमातम भगवान।
पूज्य धीन्द्र प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धीन्द्र-जिनाय अर्घ्यं...॥४३६॥

इन्द्रों से ज्यादा रहे, प्रभु संपत्तिवान।
महेन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेन्द्र-जिनाय अर्घ्यं...॥४३७॥

इन्द्रिय मन से दूर भी, जानो पदार्थ ज्ञान।
अतीन्द्रयार्थ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्रयार्थ-जिनाय अर्घ्यं...॥४३८॥

पुद्गल इन्द्रियों से रहित, आप शुद्ध चैतन्य।
अनिन्द्रिय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनिन्द्रिय-जिनाय अर्घ्यं...॥४३९॥

अहमिन्द्रों से पूज्य हो, जग में पूज्य महान।
अहमिन्द्राचार्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अहमिन्द्राचार्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४४०॥

बड़े-बड़े सुर इंद्र से, पूजित हो भगवान।
महेन्द्रमहित प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रमहित-जिनाय अर्घ्यं...॥४४१॥

जग में सबसे पूज्य हो, सबसे उच्च महान।
महान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महान-जिनाय अर्घ्यं...॥४४२॥

जन्म-मरण से रहित हो, अरिहन्तों का जन्म।
उद्भव प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री उद्भव-जिनाय अर्घ्यं...॥४४३॥

कारण हो तुम मोक्ष के, पहुँचाते शिवधाम।
कारण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कारण-जिनाय अर्घ्यं...॥४४४॥

शुद्ध भाव कर्त्ता तुम्हीं, हरो शुभाशुभ ध्यान।
कर्त्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कर्त्ता-जिनाय अर्घ्यं...॥४४५॥

आप पारगामी रहे, पार करो भव-धाम।
पारक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पारक-जिनाय अर्घ्यं...॥४४६॥

भवसागर के तीर तक, करो भव्य का यान।
भवतारक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भवतारक-जिनाय अर्घ्यं...॥४४७॥

कौन आपको छू सके, ग्राह्य नहीं भगवान।
अग्राह्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्राह्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४४८॥

वीतराग विज्ञान को, सभी सकें ना जान।
पूज्य गहन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गहन-जिनाय अर्घ्यं...॥४४९॥

परम रहस्यमय आप हो, गुप्त रूप भगवान।
पूज्य गुह्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुह्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४५०॥

उत्तम वैभव के धनी, महा पूज्य भगवान।
पराघ्र्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पराघ्र्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४५१॥

मुक्तिवल्लभा आप हो, परमेश्वर भगवान।
परमेश्वर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परमेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥४५२॥

धारो अनन्त ऋद्धियाँ, ऋद्धीश्वर भगवान।
अनन्तर्धि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तर्धि-जिनाय अर्घ्यं...॥४५३॥

अपरिमित येश्वर्य धरो, सबसे महिमावान।
अमेयर्धि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमेयर्धि-जिनाय अर्घ्यं...॥४५४॥

अचिंत्य सम्पत्ति धरो, जिसका ना परिमाण।
अचिंत्यर्धि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अचिंत्यर्धि-जिनाय अर्घ्यं...॥४५५॥

सकल जानने के लिए, सम्पूरण है ज्ञान।
समग्रधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री समग्रधी-जिनाय अर्घ्यं...॥४५६॥

सब में होते मुख्य हो, मुख्य बिना ना काम।
प्राग्रय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्राग्रय-जिनाय अर्घ्यं...॥४५७॥

सबमें पाई श्रेष्ठता, तजा अधम अभिमान।
प्राग्रहर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्राग्रहर-जिनाय अर्घ्यं...॥४५८॥

सब में होते श्रेष्ठ हो, श्रेष्ठ बिना क्या काम।
अभ्यग्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अभ्यग्र-जिनाय अर्घ्यं...॥४५९॥

प्रति-प्रति तुम अग्र हो, सबसे हो बलवान।
प्रत्यग्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्यग्र-जिनाय अर्घ्यं...॥४६०॥

स्वामी होने से हुए, भक्त पुकारे नाम।
अग्रय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रय-जिनाय अर्घ्यं...॥४६१॥

सबके अग्रेसर रहे, तुम्हीं सर्व प्रधान।
अग्रिम प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रिम-जिनाय अर्घ्यं...॥४६२॥

आप बड़े सबसे रहे, तुमसे हो शुभ काम।
अग्रज प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्रज-जिनाय अर्घ्यं...॥४६३॥

तपश्चरण करके कठिन, पाया मोक्ष मुकाम।
महातपा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महातपा-जिनाय अर्घ्यं...॥४६४॥

तेजस्वी सबसे अधिक, चमका सकल जहान।
महातेजा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महातेजा-जिनाय अर्घ्यं...॥४६५॥

तप का फल ऐसा मिला, अक्षय केवलज्ञान।
महोदर्क प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महोदर्क-जिनाय अर्घ्यं...॥४६६॥

महापुण्य के उदय से, हुआ प्रतापी नाम।
पूज्य महोदय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महोदय-जिनाय अर्घ्यं...॥४६७॥

महा यशस्वी आप हो, यश फैले हर धाम।
महायशा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महायशा-जिनाय अर्घ्यं...॥४६८॥

महा धाम में वस रहे, अतिशय प्रकाशमान।
महाधामा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाधामा-जिनाय अर्घ्यं...॥४६९॥

महाशौर्य से युक्त हो, महा महा बलवान।
महासत्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महासत्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४७०॥

धीर-वीर-गंभीर हो, अतिशय हो गुणवान।
महाधृति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाधृति-जिनाय अर्घ्यं...॥४७१॥

आकुल व्याकुल व्यग्र ना, धरो धैर्य महान।
महाधैर्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाधैर्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४७२॥

महा वीर्य से युक्त हो, अतिशय सामर्थ्य महान।
महावीर्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४७३॥

समवसरण वैभव धरा, हो सम्पत्तिवान।
पूज्य महासंपत जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महासंपत-जिनाय अर्घ्यं...॥४७४॥

महाबली बाहुबली, हो अतिशय बलवान।
पूज्य महाबल नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाबल-जिनाय अर्घ्यं...॥४७५॥

महा शक्ति तुम भारती, अनन्त शक्तिमान।
महाशक्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाशक्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥४७६॥

चमक रहे दिन रात हो, अतिशय कान्तिमान।
महाज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाज्योति-जिनाय अर्घ्यं...॥४७७॥

मिला पंचकल्याणक विभव, पूजे जिसे जहान।
महाभूति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाभूति-जिनाय अर्घ्यं...॥४७८॥

सूर्य चाँद जिन दरश से, होते लज्जावान।
महाद्रुति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाद्रुति-जिनाय अर्घ्यं...॥४७९॥

अनन्त मति जिनकी रही, अतिशय बुद्धिमान।
महामति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामति-जिनाय अर्घ्यं...॥४८०॥

नीति न्याय जिससे मिले, न्यायाधीश महान।
महानीति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महानीति-जिनाय अर्घ्यं...॥४८१॥

क्षमा मूर्ति प्रभु आप हो, अतिशय क्षमावान।
महाक्षांति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाक्षांति-जिनाय अर्घ्यं...॥४८२॥

महा दयालु आप हो, सबके दयानिधान।
पूज्य महादय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महादय-जिनाय अर्घ्यं...॥४८३॥

स्वामी बड़े प्रवीण हो, अतिशय प्रज्ञावान।
महाप्राज्ञ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाप्राज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥४८५॥

बड़े भाग्यशाली रहे, भाग्यवान भगवान।
महाभाग्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाभाग्य-जिनाय अर्घ्यं...॥४८६॥

भक्तों को आनन्द दो, निजानन्द के धाम।
महानन्द प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महानन्द-जिनाय अर्घ्यं...॥४८६॥

कवियों के हो महाकवि, सम्यक आगम ज्ञान।
महाकवि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकवि-जिनाय अर्घ्यं...॥४८७॥

तेजस्वी तुम हो महा, तुम सा कौन महान।
महा-महा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामहा-जिनाय अर्घ्यं...॥४८८॥

जग की क्रम पड़ती चमक, रचते कीर्तिमान।
महाकीर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकीर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥४८९॥

महाकान्ति से युक्त हो, मनमोहक छविमान।
महाकान्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकान्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥४९०॥

अतिशय सुन्दर देह है, विदेह के स्थान।
महावपु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महावपु-जिनाय अर्घ्यं...॥४९१॥

बहुत बड़े दानी रहे, दानतीर्थ के धाम।
महादान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महादान-जिनाय अर्घ्यं...॥४९२॥

क्षुद्र ज्ञान सब जा चुके, धारो केवलज्ञान।
महाज्ञान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाज्ञान-जिनाय अर्घ्यं...॥४९३॥

महायोग योगी तुम्हीं, धरते आतम ध्यान।
महायोग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महायोग-जिनाय अर्घ्यं...॥४९४॥

महा-महा गुण धारते, अनन्त गुण के धाम।
पूज्य महागुण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महागुण-जिनाय अर्घ्यं...॥४९५॥

मिली महापूजा तुम्हें, हुए पंचकल्याण।
महामहपति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामहपति-जिनाय अर्घ्यं...॥४९६॥

गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान के, मोक्ष पाँच कल्याण।
प्राप्तमहाकल्याणपञ्चक, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्राप्तमहाकल्याणपञ्चक-जिनाय अर्घ्यं...॥४९७॥

महा प्रभावी आप हो, स्वामी बड़े महान।
पूज्य महाप्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाप्रभु-जिनाय अर्घ्यं...॥४९८॥

प्रातिहार्य से शोभते, हो वैभव सम्पन्न।
महाप्रातिहार्याधीश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महाप्रातिहार्याधीश-जिनाय अर्घ्यं...॥४९९॥

स्वामी हो शत इंद्र के, महा महेश्वर धाम।
महा महेश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री महेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥५००॥

पूर्णार्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

श्री वृक्षलक्षण तुम्हीं श्लक्ष्ण, लक्षण्य शुभ लक्षण हो।
निरीक्ष पुण्डरीकाक्ष पुष्कल, पुष्करेक्षण हर क्षण हो॥१॥
सिद्धि सिद्ध संकल्प सिद्धात्मा, बुद्ध बोध्य सिद्धसाधक हो।
महाबोधि हो वर्धमान हो, आप महर्धिक भगवन हो॥२॥
तुम वेदांग विद विद्वेद्य हो, जात रूप विदाम्बर हो।
वेदवेद्य स्वसंवेद्य तुम्हीं हो, विवेक वदताम्बर हो॥३॥
अनादिनिधन व्यक्त व्यक्तवाक्, व्यक्तशासन योगादिकृत हो।
युगाधार युगादि जगदादिज, तुम ही भक्त नमस्कृत हो॥४॥
अतीन्द्र अतीन्द्रिय धीन्द्र हो, महेन्द्र अतीन्द्रियार्थदृक हो।
तुम अनिन्द्रिय अहमिन्द्रार्च्य हो, महेन्द्र महित महान तुम हो॥५॥

उद्भव कारण कर्त्ता पारग, भवतारक अगाह्य तुम हो।
गहन गुह्य परार्घ्य परमेश्वर, तुमको नमोस्तु अर्पण हो॥६॥
अनन्तर्द्धि हो अमेयर्द्धि हो, अचिन्त्यर्द्धि समग्रधी हो।
प्राग्रय प्राग्रहर अभ्यग्र प्रत्यग्र, अग्रय अग्रिम अग्रज हो॥७॥
महातपा हो महातेज हो, महोदर्क हो महायशा।
महाधाम हो महासत्व हो, महाधृति हो महोदया॥८॥
महाधैर्य हो महावीर्य हो, महाशक्ति हो महाज्योति।
महासम्पत् महाबल आप हो, महामूर्ति हो महाद्युति॥९॥
महामति हो महानीति हो, महादया हो महाक्षान्ति।
महाप्राज्ञ हो महाभाग हो, महानन्द हो महाकवि॥१०॥
महामहा हो महाकीर्ति हो, महाकान्ति हो महादान।
महावपु हो महायोग हो, महागुणा हो महाज्ञान॥११॥
प्राप्त महाकल्याणक पंचक, आप महामहपति अहो।
तुम महाप्रातिहार्याधीश हो, आप महेश्वर महाप्रभो॥१२॥

(जोगीरासा)

श्री वृक्षादि शतक पूजकर, सौ-सौ अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु के सौ-सौ नाम जाप कर, 'सुव्रत' पुण्य कमाए॥
श्री जिनसहस्रनाम मंत्रों से, पाप नशे सुख होवे।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं श्री वृक्षादि-शतकजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(पुष्पांजलिं...)

===

षष्टम् अर्घ्यावली (दोहा)

मुनियों में उत्तम रहे, मुनियों के भगवान।
महामुनि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामुनि-जिनाय अर्घ्यं...॥५०१॥

दिव्या देशना दो मगर, अंतस से हो मौन।
महामौनी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामौनी-जिनाय अर्घ्यं...॥५०२॥

महा ध्यान करके करो, परमानन्दी ध्यान।
महाध्यानी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाध्यानी-जिनाय अर्घ्यं...॥५०३॥

विषय कषायों का दमन, करते शक्तिमान।
पूज्य महादम नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महादम-जिनाय अर्घ्यं...॥५०४॥

महा क्रोधि को भी दिए, क्षमादान भगवान।
पूज्य महाक्षम नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाक्षम-जिनाय अर्घ्यं...॥५०५॥

महा ब्रह्म में लीन हैं, शील युक्त भगवान।
महाशील प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाशील-जिनाय अर्घ्यं...॥५०६॥

ज्ञान अग्नि में कर रहे, महा यज्ञ भगवान।
महायज्ञ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महायज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥५०७॥

महा पूज्य जग में रहे, त्यागे सब अपमान।
पूज्य महामख नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामख-जिनाय अर्घ्यं...॥५०८॥

महा व्रतों के हो प्रभु, हरो पाप अज्ञान।
पूज्य महाव्रतपति जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाव्रतपति-जिनाय अर्घ्यं...॥५०९॥

महापूज्य होकर हुए, आत्मलीन भगवान।
पूज्य मह्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मह्य-जिनाय अर्घ्यं...॥५१०॥

तेज कान्ति अतिशय धरें, रौशन करें जहान।
महाकान्तिधर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकान्तिधर-जिनाय अर्घ्यं...॥५११॥

जग रक्षक अधिपति रहे, सबके हो भगवान।
पूज्य अधिप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अधिप-जिनाय अर्घ्यं...॥५१२॥

सबसे रखते मित्रता, मैत्री भाव महान।
महामैत्रीमय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामैत्रीमय-जिनाय अर्घ्यं...॥५१३॥

तुम्हें नापने का नहीं, तंत्र मंत्र विज्ञान।
अमेय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमेय-जिनाय अर्घ्यं...॥५१४॥

महामोक्ष पाने तुम्हीं, हो उपाय आसान।
महोपाय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महोपाय-जिनाय अर्घ्यं...॥५१५॥

मंगलमय मंगलकरन, वीतराग विज्ञान।
पूज्य महोमय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महोमय-जिनाय अर्घ्यं...॥५१६॥

आप महाकरुणा करो, करुणा कृपा निधान।
महाकारुणिक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकारुणिक-जिनाय अर्घ्यं...॥५१७॥

सकल द्रव्यगुण जानते, जानो निज पर ज्ञान।
मंता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मंता-जिनाय अर्घ्यं...॥५१८॥

जानो मानो रच रहे, मंत्रों के विज्ञान।
महामंत्र प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामंत्र-जिनाय अर्घ्यं...॥५१९॥

यतियों के यतिराज हो, करो आत्म संधान।
पूज्य महायति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महायति-जिनाय अर्घ्यं...॥५२०॥

महा दिव्य ध्वनि गूँजती, मेघनाद सम वान।
महानाद प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महानाद-जिनाय अर्घ्यं...॥५२१॥

सिंहनाद ओंकार मय, महाघोष जिन-वान।
महाघोष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाघोष-जिनाय अर्घ्यं...॥५२२॥

महाजनों से पूज्य हो, महाज्ञान के धाम।
महेज्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेज्य-जिनाय अर्घ्यं...॥५२३॥

तेजो से अति तेज हो, सम्यक् शीतल धाम।
महसांपति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महसांपति-जिनाय अर्घ्यं...॥५२४॥

महा अहिंसा व्रत धरो, चारण-चरण महान।
महाध्वरधर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाध्वरधर-जिनाय अर्घ्यं...॥५२५॥

धर्म धुरंधर नाम को, धर्म धुरी लो थाम।
पूज्य धुर्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धुर्य-जिनाय अर्घ्यं...॥५२६॥

हो उदार अपनी निधि, लुटा रहे दिन रैन।
महोदार्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महोदार्य-जिनाय अर्घ्यं...॥५२७॥

हित मित प्रिय वाणी रही, सब करते सम्मान।
महेष्टवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेष्टवाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥५२८॥

महा आत्मा आपकी, अंतर बाह्य न जान।
पूज्य महात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥५२९॥

सारे तेज प्रकाश से, ऊँचा है स्थान।
महासांधाम प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महासांधाम-जिनाय अर्घ्यं...॥५३०॥

हर ऋद्धि को प्राप्त हो, हर गुण से सम्पन्न।
महर्षि प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महर्षि-जिनाय अर्घ्यं...॥५३१॥

पुण्योदय से आप हो, तीर्थंकर भगवान।
महितोदय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महितोदय-जिनाय अर्घ्यं...॥५३२॥

क्लेशों के अंकुश तुम्हीं, संकटमोचक नाम।
महाक्लेशांकुश जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाक्लेशांकुश-जिनाय अर्घ्यं...॥५३३॥

घाति कर्म रिपु जय किए, हरा दिए बलवान।
पूज्य शूर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शूर-जिनाय अर्घ्यं...॥५३४॥

गणधर चक्री इंद्र जो, उनके भी भगवान।
महाभूतपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाभूतपति-जिनाय अर्घ्यं...॥५३५॥

अन्ध हरें ज्योतित करें, देकर धार्मिक ज्ञान।
परम पूज्य गुरु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गुरु-जिनाय अर्घ्यं...॥५३६॥

विजित पराक्रम में हुए, किया न कुछ संग्राम।
महापराक्रम नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महापराक्रम-जिनाय अर्घ्यं...॥५३७॥

अंत रहित प्रभु आत्मा, अंत रहित गुण ज्ञान।
अनन्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्त-जिनाय अर्घ्यं...॥५३८॥

क्रोध शत्रु जग का रहा, आप क्रोध के जान।
महाक्रोधरिपु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाक्रोधरिपु-जिनाय अर्घ्यं...॥५३९॥

इन्द्रियों को वश में किया, वश कर डाला काम।
पूज्य वशी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वशी-जिनाय अर्घ्यं...॥५४०॥

नभ तारे उतने नहीं, तारे जितने यान।
महाभवाब्धिसंतारी को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाभवाब्धिसंतारी-जिनाय अर्घ्यं...॥५४१॥

मोह अचल भेदन किया, किया विजित शिवधाम।
महामोहाद्रिसूदन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महामोहाद्रिसूदन-जिनाय अर्घ्यं...॥५४२॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान गुण, महाचरित गुणखान।
महागुणाकर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महागुणाकर-जिनाय अर्घ्यं...॥५४३॥

शान्त कषायों को किया, अपराधों का हान।
पूज्य क्षांत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षांत-जिनाय अर्घ्यं...॥५४४॥

महा योगियों के प्रभु, ज्ञानी के हो ज्ञान।
महायोगीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महायोगीश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥५४५॥

परम सुखी कर्मक्षयी, परम शान्ति के धाम।
पूज्य शमी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शमी-जिनाय अर्घ्यं...॥५४६॥

शुक्ल ध्यान में रमण कर, करो निजातम ध्यान।
महाध्यानपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाध्यानपति-जिनाय अर्घ्यं...॥५४७॥

धर्म अहिंसा ध्यान से, करो स्व-पर कल्याण।
ध्यातमहाधर्म नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ध्यातमहाधर्म-जिनाय अर्घ्यं...॥५४८॥

पंच महाव्रत धारते, व्रतियों के भगवान।
पूज्य महाव्रत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाव्रत-जिनाय अर्घ्यं...॥५४९॥

कर्म शत्रु को मार के, हो अरिहत महान।
पूज्य महाकर्मारिहा, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महाकर्मारिहा-जिनाय अर्घ्यं...॥५५०॥

निज आतम में लीन हो, कर आतम का ज्ञान।
परम पूज्य आत्मज्ञ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आत्मज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥५५१॥

देवों के भी देव हो, महापूज्य भगवान।
महादेव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महादेव-जिनाय अर्घ्यं...॥५५२॥

अद्वितीय येश्वर्य को, धरें ईश भगवान।
महेशिता प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेशिता-जिनाय अर्घ्यं...॥५५३॥

तन मन के संक्लेश हर, हुए शुद्ध भगवान।
सर्वक्लेशापह जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वक्लेशापह-जिनाय अर्घ्यं...॥५५४॥

रत्नत्रय को सिद्ध कर, हुए साधु भगवान।
पूज्य साधु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री साधु-जिनाय अर्घ्यं...॥५५५॥

हरो भव्य के दोष सब, दोष रहित भगवान।
सर्वदोषहर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषहर-जिनाय अर्घ्यं...॥५५६॥

अनेक जन्मों में हुए, हरो पाप अज्ञान।
परम पूज्य हर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हर-जिनाय अर्घ्यं...॥५५७॥

असंख्यात गुण धारते, दोषों का क्या काम।
असंख्येय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री असंख्येय-जिनाय अर्घ्यं...॥५५८॥

जिसका कोई पार ना, सीमा का क्या काम।
अप्रमेयात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रमेयात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥५५९॥

परम शान्त स्वरूप हो, हमें शान्ति दो दान।
पूज्य शमात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शमात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥५६०॥

शान्ति मूर्ति प्रभु आप हो, प्रशम करो परिणाम।
प्रशमाकर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशमाकर-जिनाय अर्घ्यं...॥५६१॥

सभी योगियों के तुम्हीं, ईश्वर हो भगवान।
पूज्य सर्व योगीश्वरा, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वयोगीश्वरा-जिनाय अर्घ्यं...॥५६२॥

जग के चिंतन से रहे, दूर तुम्हारा ज्ञान।
अचिंत्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अचिंत्य-जिनाय अर्घ्यं...॥५६३॥

सकल वाङ्मय रूप है, चिदानन्द श्रुत ज्ञान।
पूज्य श्रुतात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रुतात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥५६४॥

तीन लोक को जानते, बाँटो आतम ज्ञान।
विस्तरश्रवा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विस्तरश्रवा-जिनाय अर्घ्यं...॥५६५॥

मन इन्द्रियाँ वश में किए, दो शिक्षा का दान।
दान्तात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दान्तात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥५६६॥

मन इन्द्रियों के दमन के, तीर्थों के भगवान।
दमतीर्थेश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दमतीर्थेश-जिनाय अर्घ्यं...॥५६७॥

योग रूप आतम रही, पर न योग न ध्यान।
योगात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री योगात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥५६८॥

रहो ज्ञान से हर जगह, मन में करो मुकाम।
पूज्य ज्ञानसर्वग जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानसर्वग-जिनाय अर्घ्यं...॥५६९॥

निज ध्यायो एकाग्र हो, मन मंदिर के प्राण।
प्रधान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रधान-जिनाय अर्घ्यं...॥५७०॥

ज्ञान स्वरूपी आत्मा, ज्ञान आत्म के प्राण।
आत्मा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आत्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥५७१॥

समवसरण के हो धनी, सहज करो कल्याण।
प्रकृति प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रकृति-जिनाय अर्घ्यं...॥५७२॥

परम-परम उत्कृष्ट हो, परम लक्ष्मी धाम।
पूज्य परम प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परम-जिनाय अर्घ्यं...॥५७३॥

परम उदय धारण करो, परम करो कल्याण।
परमोदय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परमोदय-जिनाय अर्घ्यं...॥५७४॥

कर्म बंध क्षय कर चुके, क्षीण किया अज्ञान।
प्रक्षीणबंध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रक्षीणबन्ध-जिनाय अर्घ्यं...॥५७५॥

कामदेव के शत्रु हो, सुशील आतमराम।
कामारि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कामारि-जिनाय अर्घ्यं...॥५७६॥

करते जग कल्याण हो, शान्ति सुधा दो दान।
पूज्य क्षेमकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥५७७॥

शान्ति रूप उपदेश है, शान्ति रूप निज ज्ञान।
क्षेमशासन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमशासन-जिनाय अर्घ्यं...॥५७८॥

आप स्वयं ओंकार हो, ओम् रूप निज ज्ञान।
प्रणव प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणव-जिनाय अर्घ्यं...॥५७९॥

जीव मात्र के मित्र हो, हम सबके प्रिय धाम।
प्रणय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणय-जिनाय अर्घ्यं...॥५८०॥

प्रियवर तुम बिन क्या जिएँ, हम सब के तुम प्राण।
प्राण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्राण-जिनाय अर्घ्यं...॥५८१॥

प्राणदान हमको दिया, हो दयालु भगवान।
प्राणद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्राणद-जिनाय अर्घ्यं...॥५८२॥

नत इन्द्रों के नाथ हो, भव्यों के भगवान।
प्रणतेश्वर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणतेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥५८३॥

प्रमाण नय मय हैं वचन, आतम लोक प्रमाण।
प्रमाण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रमाण-जिनाय अर्घ्यं...॥५८४॥

योगी की चिंतन निधि, हो मर्मज्ञ महान।
प्रणधि प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रणधि-जिनाय अर्घ्यं...॥५८५॥

मोक्ष प्राप्ति में दक्ष हो, समक्ष सामर्थवान।
दक्ष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दक्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥५८६॥

सरल सहज समभाव हो, दक्षिण भाव समान।
दक्षिण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दक्षिण-जिनाय अर्घ्यं...॥५८७॥

ज्ञान यज्ञ में कर रहे, पाप कर्म का होम।
अध्वर्यु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अध्वर्यु-जिनाय अर्घ्यं...॥५८८॥

दिग्दर्शक सन्मार्ग के,करो आत्म-विश्राम।
अध्वर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अध्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥५८९॥

हमको परमानन्द के, दो आनन्द निधान।
आनन्द प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आनन्द-जिनाय अर्घ्यं...॥५९०॥

हम सब को आनन्द दो, सुखनन्दन श्री धाम।
नन्दन प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दन-जिनाय अर्घ्यं...॥५९१॥

स्वयं रूप आनन्द हो, नन्द छंद आनन्द।
नन्द प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नन्द-जिनाय अर्घ्यं...॥५९२॥

जगत वंद्य स्तुत्य हो, पग में झुके जहान।
पूज्य वंद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वंद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥५९३॥

दोष अठारह से रहित, निन्दा का क्या काम।
अनिंद्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनिंद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥५९४॥

अभिनन्दन जिनका करें, आनन्दों के धाम।
अभिनन्दन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन-जिनाय अर्घ्यं...॥५९५॥

कामदेव को जय किए, करके काम तमाम।
पूज्य कामहा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कामहा-जिनाय अर्घ्यं...॥५९६॥

भव्य प्राणियों के करो, इच्छा पूरण काम।
पूज्य कामदा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कामदा-जिनाय अर्घ्यं...॥५९७॥

बहुत मनोहर आप हो, चाहे तुम्हें जहान।
पूज्य काम्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री काम्य-जिनाय अर्घ्यं...॥५९८॥

मनवांछित वस्तु दिए, किए भक्त के काम।
कामधेनु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री कामधेनु-जिनाय अर्घ्यं...॥५९९॥

रागादिक अरि के जयी, मन में करो मुकाम।
अरिञ्जय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अरिञ्जय-जिनाय अर्घ्यं...॥६००॥

पूर्णार्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

महामुनि हो महामौनि हो, महाध्यानि हो महादमा।
महाक्षमा हो महाशील हो, महायज्ञ हो महामखा॥१॥
आप महाव्रत पति मह्य हो, महाकान्तिधर अधिप रहे।
महामैत्रिमय अमेय हो तुम, महोपाय महोमया रहे॥२॥
महाकारुणिक महामंत्र हो, महानाद हो महायति।
महाघोष हो महेज्य हो तुम, हो मन्ता महसाम्पति॥३॥
धुर्य महाध्वर महौदार्य हो, महिष्ठवाक् महात्मा हो।
महसांधाम महर्षि हो तुम, महितोदय परमात्मा हो॥४॥
महाक्लेश-अंकुश गुरुवर हो, महाभूतपति शूर तुम्हीं।
महापराक्रम अनन्त हो तुम, महाक्रोधरिपुवशी तुम्हीं॥५॥

महाभावाब्धि संतारी हो, महा मोहाद्रि-सूदन हो।
महागुणाकर क्षान्त शमी हो, आप महायोगीश्वर हो॥६॥
महाध्यानपति महादेव हो, ध्यात महाधर्मा आत्मज्ञ।
महाकर्मारिहा महाव्रत, महेशिता हो हे! सर्वज्ञ॥७॥
साधु सर्वक्लेशापह हो, सर्व दोषहर तुम हो हर।
असंख्येय प्रमेयात्मा हो, तुम्हीं शमात्मा प्रशमाकर॥८॥
अचिन्त्य सर्व योगीश्वर हो तुम, विष्टरश्रवा श्रुतात्मा हो।
दमतीर्थेश ज्ञानसर्वग हो, दान्तात्मा योगात्मा हो॥९।
प्रधान-आत्मा प्रकृति परम हो, क्षेमशासन परमोदय हो।
प्रक्षीणबन्ध कामारिक्षेमकृत्, नाथ! तुम्हारी जय-जय हो॥१०॥
प्रणव प्रणत हो प्रमाण प्राणद, प्रणिधिर्दक्ष प्राण अध्वर।
प्रणतेश्वर हो आप युरध्वर, दक्षिण तुम हो हे! ईश्वर॥११॥
तुम आनन्द नन्द नन्दन हो, वन्द्य अनिद्य अभिनन्दन।
काम्य कामहा कामद हो तुम, कामधेनु अरिंजय तुम॥१२॥

(जोगीरासा)

श्री महामुन्यादि शतक पूजकर, सौ-सौ अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु के सौ-सौ नाम जाप कर, 'सुव्रत' पुण्य कमाए॥
श्री जिनसहस्रनाम मंत्रों से, पाप नशे सुख होवे।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं श्री महामुन्यादि-शतकजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(पुष्पांजलिं...)

===

सप्तम् अर्घ्यावली (दोहा)

बिना किसी संस्कार के, सुन्दर हो भगवान।
असंस्कृतसुसंस्कार को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री असंस्कृतसुसंस्कार-जिनाय अर्घ्यं...॥६०१॥

नग्न दिगम्बर हो अतः, प्रकृति से उत्पन्न।
प्राकृत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्राकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥६०२॥

रागादिक का अंत कर, चखे भेद-विज्ञान।
वैकृतान्तकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वैकृतान्तकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥६०३॥

जन्म मरण का अंत कर, सुगम करो शिवधाम।
पूज्य अंतकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अंतकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥६०४॥

वाणी सुन्दर कान्ति है, हम तो करें प्रणाम।
कान्तगु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कान्तगु-जिनाय अर्घ्यं...॥६०५॥

परमौदारिक देह है, अतिशय कान्तिमान।
पूज्य कान्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कान्त-जिनाय अर्घ्यं...॥६०६॥

चिन्तामणि के समान हो, दो इच्छित वरदान।
चिन्तामणि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि-जिनाय अर्घ्यं...॥६०७॥

दाता इष्ट पदार्थ के, स्वर्ग मोक्ष दो दान।
पूज्य अभीष्टद नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अभीष्टद-जिनाय अर्घ्यं...॥६०८॥

काम क्रोध इत्यादि से, अजित रहे भगवान।
पूज्य अजित प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अजित-जिनाय अर्घ्यं...॥६०९॥

ब्रह्म विहारी हो चुके, विजित किया जब काम।
जितकामारि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जितकामारि-जिनाय अर्घ्यं...॥६१०॥

अनन्त ज्ञानादिक रहे, अमित गुणों की खान।
पूज्य अमित प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमित-जिनाय अर्घ्यं...॥६११॥

अनन्त है मिट न सके, जिनशासन जिन नाम।
पूज्य अमितशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमितशासन-जिनाय अर्घ्यं...॥६१२॥

क्रोध विजेता आप हो, हमें क्षमा दो दान।
जितक्रोध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जितक्रोध-जिनाय अर्घ्यं...॥६१३॥

कर्म विजेता आप हो, भक्त मित्र भगवान।
जितामित्र प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जितामित्र-जिनाय अर्घ्यं...॥६१४॥

क्लेश विजेता आप हो, हरो क्लेश संग्राम।
जितक्लेश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जितक्लेश-जिनाय अर्घ्यं...॥६१५॥

यम अंतक जीता अतः, जीत गये मैदान।
पूज्य जितान्तक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जितान्तक-जिनाय अर्घ्यं...॥६१६॥

गणधर मुनिवर आदि के, जिन है इंद्र महान।
जिनेन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र-जिनाय अर्घ्यं...॥६१७॥

परम परम आनन्द हो, परमेष्ठी भगवान।
परमानन्द प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परमानन्द-जिनाय अर्घ्यं...॥६१८॥

मुनियों के प्रभु इंद्र है, मुनि दीक्षा दो दान।
मुनीन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मुनीन्द्र-जिनाय अर्घ्यं...॥६१९॥

दिव्या देशना आपकी, दुंदुभि के है समान।
दुंदुभिस्वन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दुंदुभिस्वन-जिनाय अर्घ्यं...॥६२०॥

इंद्र महेन्द्रों से रहे, वंदित जिन भगवान।
महेन्द्रवंद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रवंद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥६२१॥

महा योगियों के रहे, इंद्र जिनेन्द्र महान।
योगेन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री योगेन्द्र-जिनाय अर्घ्यं...॥६२२॥

यतियों के प्रभु इंद्र हैं, महायत्न के धाम।
यतीन्द्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री यतीन्द्र-जिनाय अर्घ्यं...॥६२३॥

नाभि के नन्दन तुम्हीं, जग के पिता समान।
नाभिनन्दन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नाभिनन्दन-जिनाय अर्घ्यं...॥६२४॥

नाभिराज के पुत्र हो, हम तेरी संतान।
नाभेय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नाभेय-जिनाय अर्घ्यं...॥६२५॥

नाभिराज के वंश में, हुए आप उत्पन्न।
नाभिज प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नाभिज-जिनाय अर्घ्यं...॥६२६॥

जन्म रहित जन्मे तुम्हीं, कुलदीपक भगवान।
अजात प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अजात-जिनाय अर्घ्यं...॥६२७॥

अपने व्रत सुव्रत किए, मुनिसुव्रत दो दान।
सुव्रत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुव्रत-जिनाय अर्घ्यं...॥६२८॥

कर्मभूमि का सच दिया, मोक्षमार्ग का ज्ञान।
मनु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मनु-जिनाय अर्घ्यं...॥६२९॥

उत्तम के उत्तम रहे, दोष रहित गुणधाम।
उत्तम प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री उत्तम-जिनाय अर्घ्यं...॥६३०॥

नाथ! आपका कोई भी, भेद सके न नाम।
अभेद्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अभेद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥६३१॥

नाश रहित अविनाश हो, शाश्वत हो भगवान।
अनत्यय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनत्यय-जिनाय अर्घ्यं...॥६३२॥

तपश्चरण करते महा, रुके न हुई थकान।
अनाश्वान प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनाश्वान-जिनाय अर्घ्यं...॥६३३॥

पूज्य रहे सबसे अधिक, वीतराग भगवान।
अधिक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अधिक-जिनाय अर्घ्यं...॥६३४॥

सर्वोत्तम उपदेश दे, करते गुरु कल्याण।
अधिगुरु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अधिगुरु-जिनाय अर्घ्यं...॥६३५॥

गौ माता जैसी रही, जिनवाणी जिननाम।
सुगी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुगी-जिनाय अर्घ्यं...॥६३६॥

अद्भुत मेधा धार के, बाँटो सम्यग्ज्ञान।
पूज्य सुमेधा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुमेधा-जिनाय अर्घ्यं...॥६३७॥

महापराक्रम कर रहे, करो कर्म का हान।
विक्रमी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विक्रमी-जिनाय अर्घ्यं...॥६३८॥

निज-पर के स्वामी तुम्हीं, दो यथार्थ का ज्ञान।
स्वामी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वामी-जिनाय अर्घ्यं...॥६३९॥

कौन आपका कर सके, पूर्ण निवारण काम।
दुराधर्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दुराधर्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥६४०॥

जग में कुछ उत्साह ना, करते आतम ध्यान।
निरुत्सुक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरुत्सुक-जिनाय अर्घ्यं...॥६४१॥

जग में आप विशेष हो, मंगलमय भगवान।
विशिष्ट प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विशिष्ट-जिनाय अर्घ्यं...॥६४२॥

शिष्ट जनों को पालते, सज्जन के भगवान।
पूज्य शिष्टभुक् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शिष्टभुक्-जिनाय अर्घ्यं...॥६४३॥

सब दोषों से हो रहित, इष्ट रहे भगवान।
शिष्ट प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शिष्ट-जिनाय अर्घ्यं...॥६४४॥

प्रत्यय हो प्रत्यय नहीं, बाँटो आतमज्ञान।
प्रत्यय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्यय-जिनाय अर्घ्यं...॥६४५॥

रम्य मनोहर रूप है, कामन हो ना काम।
कामन प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कामन-जिनाय अर्घ्यं...॥६४६॥

पाप रहित पुण्यात्मा, पुण्यवान भगवान।
अनघ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनघ-जिनाय अर्घ्यं...॥६४७॥

क्षमारूप दुख क्रोध हर, पाए मोक्ष मुकाम।
क्षेमी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमी-जिनाय अर्घ्यं...॥६४८॥

क्षेमंकर कल्याण कर, सबको किए प्रसन्न।
क्षेमंकर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकर-जिनाय अर्घ्यं...॥६४९॥

कभी नहीं क्षय हो सको, अक्षय हो भगवान।
अक्षय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अक्षय-जिनाय अर्घ्यं...॥६५०॥

मंगलकारी आप हो, जिनशासन के प्राण।
क्षेमधर्मपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमधर्मपति-जिनाय अर्घ्यं...॥६५१॥

हरो क्रोध की आग तुम, खिले आत्म बागान।
क्षमी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षमी-जिनाय अर्घ्यं...॥६५२॥

इन्द्रियों के अग्राह्य हो, जाने ना अज्ञान।
अग्राह्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अग्राह्य-जिनाय अर्घ्यं...॥६५३॥

मिथ्याज्ञान न जानता, जाने निश्चय ज्ञान।
ज्ञाननिग्राह्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञाननिग्राह्य-जिनाय अर्घ्यं...॥६५४॥

आप नमोऽस्तु योग्य हो, जान सके बस ध्यान।
ध्यानगम्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ध्यानगम्य-जिनाय अर्घ्यं...॥६५५॥

उत्तर का उत्तर रहे, किन्तु निरुत्तर नाम।
पूज्य निरुत्तर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरुत्तर-जिनाय अर्घ्यं...॥६५६॥

पुण्यवान दो पुण्य को, सुकृत के वरदान।
सुकृती प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुकृती-जिनाय अर्घ्यं...॥६५७॥

शब्दों के भण्डार हो, धातु शब्द की खान।
पूज्य धातु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धातु-जिनाय अर्घ्यं...॥६५८॥

तुम ही पूजा योग्य हो, पूज्य करो भगवान।
इज्यार्ह प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री इज्यार्ह-जिनाय अर्घ्यं...॥६५९॥

सभी नयों को जानते, प्रमाण को रख ध्यान।
सुनय प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुनय-जिनाय अर्घ्यं...॥६६०॥

एकमुखी होकर दिखो ,चतुर्मुखी भगवान।
चतुरानन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री चतुरानन-जिनाय अर्घ्यं...॥६६१॥

दोनों लक्ष्मी के रहे, प्रभु निवास स्थान।
श्रीनिवास प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीनिवास-जिनाय अर्घ्यं...॥६६२॥

समवसरण में एक मुख, दिखते चारों धाम।
चतुर्वक्त्र प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्वक्त्र-जिनाय अर्घ्यं...॥६६३॥

चार-चार मुख दिख रहे, एकमुखी भगवान।
चतुरास्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री चतुरास्य-जिनाय अर्घ्यं...॥६६४॥

दिखे चतुर्मुख चतुर के, अंतर्मुख भगवान।
पूज्य चतुर्मुख नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुख-जिनाय अर्घ्यं...॥६६५॥

सत्यस्वरूपी आत्मा, करते जग कल्याण।
सत्यात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥६६६॥

किया पराजित झूठ को, दिया सत्यविज्ञान।
पूज्य सत्यविज्ञान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यविज्ञान-जिनाय अर्घ्यं...॥६६७॥

सत्य सप्त भंगी वचन, दे यथार्थ विज्ञान।
सत्यवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यवाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥६६८॥

सत्यरूप शासन रहा, सत्यरूप भगवान।
पूज्य सत्यशासन जिन्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यशासन-जिनाय अर्घ्यं...॥६६९॥

प्रत्याशी हो सत्य के, फल दो आशावान।
सत्याशी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्याशी-जिनाय अर्घ्यं...॥६७०॥

सत्य प्रतिज्ञा बद्ध हो, करो सत्य संधान।
पूज्य सत्यसंधान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यसंधान-जिनाय अर्घ्यं...॥६७१॥

सत्यस्वरूपी मोक्ष हो, सत्यमयी भगवान।
पूज्य सत्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्य-जिनाय अर्घ्यं...॥६७२॥

पारंगत हो सत्य में, सत्य रूप हैं प्राण।
सत्यपरायण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सत्यपरायण-जिनाय अर्घ्यं...॥६७३॥

स्थायी अत्यंत हो, स्थिर हो भगवान।
स्थेयान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्थेयान-जिनाय अर्घ्यं...॥६७४॥

औदारिक स्थूल हो, दूर जगत से जान।
स्थवीयान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्थवीयान-जिनाय अर्घ्यं...॥६७५॥

भक्तों के तो पास हो, भक्तों के भगवान।
नेदीयान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नेदीयान-जिनाय अर्घ्यं...॥६७६॥

पापों से तो दूर हो, पुण्यों की हो खान।
दवियान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दवियान-जिनाय अर्घ्यं...॥६७७॥

भक्त दूर दर्शन करें, दर्शन दो भगवान।
दूरदर्शन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दूरदर्शन-जिनाय अर्घ्यं...॥६७८॥

अणुओं से भी सूक्ष्म हो, बहुत बड़े भगवान।
अणोरणीयान नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अणोरणीयान-जिनाय अर्घ्यं...॥६७९॥

सूक्ष्म नहीं हो आप सो, सूक्ष्म तत्त्व दो दान।
आनणु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आनणु-जिनाय अर्घ्यं...॥६८०॥

जगत गुरु सबसे बड़े, परम पूज्य भगवान।
आद्यगुरु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आद्यगुरु-जिनाय अर्घ्यं...॥६८१॥

सदा योग के रूप हो, योगीश्वर भगवान।
सदायोग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सदायोग-जिनाय अर्घ्यं...॥६८२॥

सदाभोग निज का करो, सदानन्द भगवान।
सदाभोग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सदाभोग-जिनाय अर्घ्यं...॥६८३॥

सदा तृप्त निज में रहो, संतोषी भगवान।
सदातृप्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सदातृप्त-जिनाय अर्घ्यं...॥६८४॥

सत्यशिवम् सुन्दर रहे, शिव स्वरूप भगवान।
सदाशिव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सदाशिव-जिनाय अर्घ्यं...॥६८५॥

चतुर्गति के दुख हरो, रहो सदा गतिज्ञान।
पूज्य सदागति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सदागति-जिनाय अर्घ्यं...॥६८६॥

अनन्त सुख में लीन हो, सुखस्वरूप भगवान।
सदासौख्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सदासौख्य-जिनाय अर्घ्यं...॥६८७॥

ज्ञान स्वरूपी हो सदा, विद्यमान भगवान।
सदाविद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सदाविद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥६८८॥

सदा उदय रूपी रहे, हरो उदय के धाम।
पूज्य सदोदय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सदोदय-जिनाय अर्घ्यं...॥६८९॥

वचन शब्द सुन्दर रहे, दिव्यघोष के नाम।
सुघोष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुघोष-जिनाय अर्घ्यं...॥६९०॥

सुन्दर मुखड़ा चाँद सा, चन्द्रमुखी भगवान।
सुमुख प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुमुख-जिनाय अर्घ्यं...॥६९१॥

आकर्षक हो शान्त हो, करते शान्ति प्रदान।
सौम्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सौम्य-जिनाय अर्घ्यं...॥६९२॥

सुख बाँटो सुख से रहो, हरो दुखों की खान।
सुखद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुखद-जिनाय अर्घ्यं...॥६९३॥

जगतहितैषी आप हो, हित-मित-प्रिय भगवान।
सुहित प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुहित-जिनाय अर्घ्यं...॥६९४॥

हितकारी निर्मल रहे, हिय में विराजमान।
सुहृत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुहृत-जिनाय अर्घ्यं...॥६९५॥

मिथ्यादृष्टि आपको, कभी सकें ना जान।
सुगुप्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुगुप्त-जिनाय अर्घ्यं...॥६९६॥

पालन करके गुप्तियाँ, गुप्त हुए भगवान।
पूज्य गुप्तिभृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गुप्तिभृत-जिनाय अर्घ्यं...॥६९७॥

पापों से खुद गुप्त हो, करते गुप्त जहान।
गोप्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री गोप्ता-जिनाय अर्घ्यं...॥६९८॥

त्रय जग के अध्यक्ष हो, लोक निहारे ज्ञान।
लोकाध्यक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री लोकाध्यक्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥६९९॥

इन्द्रिय-मन का दमन कर, तप से लगा लगाम।
पूज्य दमीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दमीश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥७००॥

पूर्णार्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

आप असंस्कृत सुसंस्कार हो, प्राकृत वैकृतांतकृत हो।
कान्त अंतकृत कान्तुग हो तुम, चिंतामणि अभीष्ट तुम हो॥१॥
अजित अमित हो जितकामारि, तुम्हीं अमितशासन जितक्रोध।
जितामित्र जितक्लेश जितान्तक, भक्तों को दो आतम बोध॥२॥
परमानन्द महेन्द्र वंद्य हो, हो जिनेन्द्र मुनीन्द्र योगीन्द्र।
तुम्हीं दुंदुभिस्वन भगवन हो, नाभिनन्दन तुम्हीं यतीन्द्र॥३॥
तुम नाभिज नाभेय सुगी हो, अजात सुव्रत मनु उत्तम।
अधिक अनत्यय अभेद्य हो तुम, अनाश्वान् अधिगुरु हो तुम॥४॥
तुम्हीं सुमेधा तुम्हीं विक्रमी, स्वामी अनघ निरुत्सुक हो।
शिष्ट शिष्टभुक विशिष्ट प्रत्यय, दुराधर्ष कामन तुम हो॥५॥

क्षेमी क्षेमंकर अक्षय हो, क्षमी ज्ञान निग्राह्य तुम्हीं।
क्षेमधर्मपति तुम्हीं निरुत्तर, ध्यानगम्य अग्राह्य तुम्हीं॥६॥
सुकृती धातु इज्यार्ह हो, तुम्हीं सुनय चतुरानन हो।
श्री निवास हो चतुर्वक्त्र हो, तुम चतुराष्य चतुर्मुख हो॥७॥
सत्य-विज्ञान सत्यात्मा हो, सत्यवाक् सत्यशासन हो।
सत्यसंधान सत्याशी हो, सत्य सत्य परायण हो॥८॥
स्थेयान् स्थवीयान् नेदीयान्, दवीयान् दूरदर्शन हो।
अणोरणीयान् अनणुर्गुरु हो, आद्य गरीयसाम् तुम हो॥९॥
सदायोग हो सदाभोग हो, सदातृप्त हो सदाशिवा।
सदागति हो सदासौख्य हो, सदाविद्य हो सदोदया॥१०॥
सुघोष सुमुख सौम्य सुहृत् हो, सुखद सुहित सुगुप्त तुम हो।
लोकाध्यक्ष गुप्ति भृद् गोप्ता, आप दमीश्वर भगवन हो॥११॥

(जोगीरासा)

श्री असंस्कृतादि शतक पूजकर, सौ-सौ अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु के सौ-सौ नाम जाप कर, 'सुव्रत' पुण्य कमाए॥
श्री जिनसहस्रनाम मंत्रों से, पाप नशे सुख होवे।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं श्री असंस्कृतादि-शतकजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(पुष्पांजलिं...)

===

अष्टम अर्घ्यावली (दोहा)

इन्द्रों के गुरुवर तुम्हीं, ज्ञानी के हो ज्ञान।
वृहद्वृहस्पति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वृहद्वृहस्पति-जिनाय अर्घ्यं...॥७०१॥

हर त्रस तो वक्ता रहा, आप विलक्षण ज्ञान।
वाग्मी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वाग्मी-जिनाय अर्घ्यं...॥७०२॥

जिनवाणी के नाथ तुम, स्वामी ज्ञान निधान।
वाचस्पति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वाचस्पति-जिनाय अर्घ्यं...॥७०३॥

उदार बुद्धि है आपकी, रखते सबके ध्यान।
उदारधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री उदारधी-जिनाय अर्घ्यं...॥७०४॥

महा मनीषी आप हो, सबसे बुद्धिमान।
पूज्य मनीषी नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मनीषी-जिनाय अर्घ्यं...॥७०५॥

चिंता से अति दूर हो, चिंतन ये सम्पन्न।
धिषण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धिषण-जिनाय अर्घ्यं...॥७०६॥

चतुर विवेकी आप हो, बुद्धिमान विद्वान।
धीमान् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धीमान्-जिनाय अर्घ्यं...॥७०७॥

स्वामी हो धी बुद्धि के, चित चैतन्य मुकाम।
शेमुशीष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शेमुशीष-जिनाय अर्घ्यं...॥७०८॥

हर भाषा को जानते, ज्ञानवान भगवान।
गिराम्पति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गिराम्पति-जिनाय अर्घ्यं...॥७०९॥

अनेकान्त स्याद्वाद के, रूप रहे भगवान।
नैकरूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नैकरूप-जिनाय अर्घ्यं...॥७१०॥

प्रमाण की धरती रही, नय है शिखर समान।
नयोतुंग प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नयोतुंग-जिनाय अर्घ्यं...॥७११॥

एक आत्मा आपकी, किन्तु नन्त गुणधाम।
नैकात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नैकात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥७१२॥

अनेकान्तमय धर्म है, दिया यही विज्ञान।
नैकधर्मकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नैकधर्मकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥७१३॥

साधारण से लोग जो, तुम्हें सके ना जान।
अविज्ञेय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अविज्ञेय-जिनाय अर्घ्यं...॥७१४॥

तर्क वितर्क सब शान्त हों, पाकर तेरा ज्ञान।
अप्रतर्क्यात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रतर्क्यात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥७१५॥

ज्ञाता के हर कृत्य के, कृतकृत्य भगवान।
कृतज्ञ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥७१६॥

सुलक्षणों से सहित हो, अद्भुत है पहचान।
कृतलक्षण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतलक्षण-जिनाय अर्घ्यं...॥७१७॥

तीन ज्ञान है गर्भ में, अंतरंग निज ज्ञान।
ज्ञानगर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगर्भ-जिनाय अर्घ्यं...॥७१८॥

गर्भ समय में भी हुए, जिनवर दया निधान।
दयागर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दयागर्भ-जिनाय अर्घ्यं...॥७१९॥

गर्भ समय के पूर्व से, रत्नवृष्टि हो धन्य।
रत्नगर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री रत्नगर्भ-जिनाय अर्घ्यं...॥७२०॥

प्रभावशाली लोक में, अतिशय दीप्तिमान।
प्रभास्वर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभास्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥७२१॥

पद्माकृति माँ गर्भ में, अवतारे भगवान।
पद्मगर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मगर्भ-जिनाय अर्घ्यं...॥७२२॥

जगत आपके गर्भ में, झलका ले निज ज्ञान।
जगत्-गर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगत्-गर्भ-जिनाय अर्घ्यं...॥७२३॥

गर्भ समय वर्षा हुई, निर्मल स्वर्ण समान।
हेम गर्भ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हेमगर्भ-जिनाय अर्घ्यं...॥७२४॥

सुन्दर जिनदर्शन रहा, सम्यग्दर्शन यान।
पूज्य सुदर्शन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन-जिनाय अर्घ्यं...॥७२५॥

समवसरण येश्वर्य से, सहित रहे धनवान।
लक्ष्मीवान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीवान-जिनाय अर्घ्यं...॥७२६॥

देवों के अध्यक्ष हो, इन्द्रों के भगवान।
त्रिदशाध्यक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिदशाध्यक्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥७२७॥

दृढ़ होकर व्रत पालते, भय से ना भयवान।
दृढ़ीयान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दृढ़ीयान-जिनाय अर्घ्यं...॥७२८॥

स्वामी हो सो आपको, इन कहते इन्सान।
इन प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री इन-जिनाय अर्घ्यं...॥७२९॥

तेज तपस्या की निधि, येश्वर्य से सम्पन्न।
ईशिता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ईशिता-जिनाय अर्घ्यं...॥७३०॥

भव्यों के मन हर रहे, चित्त चोर भगवान।
पूज्य मनोहर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मनोहर-जिनाय अर्घ्यं...॥७३१॥

सुन्दर तन मन अंग है, सुन्दर है प्रभु नाम।
मनोज्ञांग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञांग-जिनाय अर्घ्यं...॥७३२॥

बाधाओं से ना डरें, धैर्यवान भगवान।
धीर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धीर-जिनाय अर्घ्यं...॥७३३॥

धीर वीर गंभीर हैं, जिनशासन भगवान।
गंभीरशासन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गंभीरशासन-जिनाय अर्घ्यं...॥७३४॥

आप धर्मस्तम्भ हो, करो मोक्ष निर्माण।
धर्मयूप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मयूप-जिनाय अर्घ्यं...॥७३५॥

दयाजगत पर कर करो, दया यज्ञ भगवान।
दयायाग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दयायाग-जिनाय अर्घ्यं...॥७३६॥

श्रेष्ठ धर्म रथ की धुरा, थामे हो भगवान।
धर्मनेमि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनेमि-जिनाय अर्घ्यं...॥७३७॥

मुनियों के ईश्वर रहे, मुनिसुव्रत दो दान।
पूज्य मुनीश्वर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मुनीश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥७३८॥

धर्मचक्र हथियार ले, करते काम तमाम।
धर्मचक्रायुध नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रायुध-जिनाय अर्घ्यं...॥७३९॥

क्रीड़ा परमानन्द में, करते हो दिन रैन।
पूज्य देव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री देव-जिनाय अर्घ्यं...॥७४०॥

आप शुभाशुभ कर्म को, नष्ट करो भगवान।
पूज्य कर्महा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कर्महा-जिनाय अर्घ्यं...॥७४१॥

करो धर्म की घोषणा, जिससे सुख आसान।
धर्मघोषण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मघोषण-जिनाय अर्घ्यं...॥७४२॥

जिनवाणी को लांघना, कार्य असम्भव मान।
अमोघवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघवाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥७४३॥

जिन आज्ञा निष्फल नहीं, किन्तु करे कल्याण।
अमोघाज्ञ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघाज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥७४४॥

सभी तरह मल रहित हो, निर्मल दो स्थान।
निर्मल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मल-जिनाय अर्घ्यं...॥७४५॥

जिनशासक ना व्यर्थ हो,किन्तु मोक्ष दे दान।
अमोघशासन नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघशासन-जिनाय अर्घ्यं...॥७४६॥

शान्त राग रुचि रूप हो, रूपवान भगवान।
सुरूप प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुरूप-जिनाय अर्घ्यं...॥७४७॥

ज्ञानवान अतिशय रहे, क्षीण किया अज्ञान।
सभगप्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सभग-जिनाय अर्घ्यं...॥७४८॥

पर के त्यागी आप हो, देकर चारों दान।
त्यागी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्यागी-जिनाय अर्घ्यं...॥७४९॥

समय रूप जिनधर्म है, ज्ञाता हैं भगवान।
समयज्ञ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री समयज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥७५०॥

समाधान सिद्धांत के, आतम के हो ध्यान।
पूज्य समाहित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री समाहित-जिनाय अर्घ्यं...॥७५१॥

आप अचल निश्चल रहे, सुखरमणी के धाम।
सुस्थित प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुस्थित-जिनाय अर्घ्यं...॥७५२॥

निज में निश्चल स्वस्थ हो, दो निरोग स्थान।
स्वास्थ्यभाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वास्थ्यभाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥७५३॥

आतम में स्थित रहो, करते स्वस्थ जहान।
स्वस्थ्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वस्थ्य-जिनाय अर्घ्यं...॥७५४॥

कर्म धूल से रहित हो, नीरज हो भगवान।
नीरजस्क प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नीरजस्क-जिनाय अर्घ्यं...॥७५५॥

तुमरा स्वामी कोई न, तुम सबके भगवान।
निरुद्धव प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरुद्धव-जिनाय अर्घ्यं...॥७५६॥

कर्मलेप से रहित हो, जल में कमल समान।
अलेप प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अलेप-जिनाय अर्घ्यं...॥७५७॥

कर्म कलंकों से रहित, शुद्धातम भगवान।
निष्कलंकात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निष्कलंकात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥७५८॥

बीत गया है राग से, वीतराग विज्ञान।
वीतराग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वीतराग-जिनाय अर्घ्यं...॥७५९॥

इच्छा आशा से रहित, निस्पृह हो भगवान।
पूज्य गतस्पृह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गतस्पृह-जिनाय अर्घ्यं...॥७६०॥

इन्द्रियों को वश में किया, बने वीर भगवान।
वश्येन्द्रिय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वश्येन्द्रिय-जिनाय अर्घ्यं...॥७६१॥

जग बंधन से मुक्त हो, मुक्त करें भगवान।
विमुक्तात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विमुक्तात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥७६२॥

पतन भाव से रहित हो, देते उच्च स्थान।
निःसपत्न प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निःसपत्न-जिनाय अर्घ्यं...॥७६३॥

विजित इन्द्रियों को किया, मन पर लगा लगाम।
पूज्य जितेन्द्रिय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जितेन्द्रिय-जिनाय अर्घ्यं...॥७६४॥

राग द्वेष को शान्त कर, रहते सदा प्रसन्न।
प्रशान्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशान्त-जिनाय अर्घ्यं...॥७६५॥

अनन्त भव को त्याग कर, पाया अनन्त धाम।
अनन्तधाम प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तधाम-जिनाय अर्घ्यं...॥७६६॥

मंगलमय मंगल करण, विघ्न अमंगल हान।
मंगल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मंगल-जिनाय अर्घ्यं...॥७६७॥

पाप मलों को हर रहे, दो पुण्यों की खान।
मलहा प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मलहा-जिनाय अर्घ्यं...॥७६८॥

अघ पापों से दूर हो, पाप मुक्त भगवान।
अनघ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनघ-जिनाय अर्घ्यं...॥७६९॥

अन्य कोई भी है नहीं, जग में आप समान।
पूज्य अनीदृग नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनीदृग-जिनाय अर्घ्यं...॥७७०॥

सबके उपमा योग्य हो, चंदा सूर्य समान।
उपमाभूत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री उपमाभूत-जिनाय अर्घ्यं...॥७७१॥

महाभाग्यशाली रहे, प्रबल पुण्य वरदान।
दिष्टि प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दिष्टि-जिनाय अर्घ्यं...॥७७२॥

आप स्तुति योग्य हो, भाग्योदय भगवान।
पूज्य दैव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दैव-जिनाय अर्घ्यं...॥७७३॥

इन्द्रिय वचनों से तुम्हें, कोई सके न जान।
पूज्य अगोचर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अगोचर-जिनाय अर्घ्यं...॥७७४॥

आप देह से हो रहित, पर से रहित महान।
अमूर्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमूर्त-जिनाय अर्घ्यं...॥७७५॥

होकर पुरुषाकार हो, आप हुए भगवान।
मूर्तिमान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मूर्तिमान-जिनाय अर्घ्यं...॥७७६॥

अद्वितीय प्रभु आप हो, एक रूप भगवान।
एक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री एक-जिनाय अर्घ्यं...॥७७७॥

एक नहीं प्रभु आप हो, हो अनेक भगवान।
नैक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नैक-जिनाय अर्घ्यं...॥७७८॥

विश्व तत्त्व जानो मगर, करो न उनका ध्यान।
नानैकतत्त्वदृग नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नानैकतत्त्वदृग-जिनाय अर्घ्यं...॥७७९॥

जिन आगम अध्यात्म से, जाने संत महान।
अध्यात्मगम्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अध्यात्मगम्य-जिनाय अर्घ्यं...॥७८०॥

तुम्हें जगत के लोग तो, कभी सके ना जान।
अगम्यात्मा नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अगम्यात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥७८१॥

जानकार हो योग के, योगीश्वर भगवान।
पूज्य योगवित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री योगवित्-जिनाय अर्घ्यं...॥७८२॥

संत योगियों से रहे, वंदित भी भगवान।
योगिवंदित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री योगिवंदित-जिनाय अर्घ्यं...॥७८३॥

व्याप्त रहे सर्वत्र में, पाकर केवलज्ञान।
सर्वत्रग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वत्रग-जिनाय अर्घ्यं...॥७८४॥

विद्यमान रहते सदा, करके आतम ध्यान।
सदाभावी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सदाभावी-जिनाय अर्घ्यं...॥७८५॥

तीन काल त्रयलोक को, देख रहे भगवान।
त्रिकाल-विषयार्थदृक् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल-विषयार्थदृक्-जिनाय अर्घ्यं...॥७८६॥

शाश्वत सुखकर्ता तुम्हीं, हरते दुख तूफान।
शंकर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शंकर-जिनाय अर्घ्यं...॥७८७॥

यथार्थ सुख दर्शा रहे, बता रहे दे ज्ञान।
शंवद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शंवद-जिनाय अर्घ्यं...॥७८८॥

चंचल मन को दे सजा, सजा दिया निज ज्ञान।
पूज्य दांत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दांत-जिनाय अर्घ्यं...॥७८९॥

इन्द्रियों के व्यापार का, दमन किए भगवान।
पूज्य दमी प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दमी-जिनाय अर्घ्यं...॥७९०॥

क्षमा धर्म में हो निपुण, समता के भगवान।
क्षान्तिपरायण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षान्तिपरायण-जिनाय अर्घ्यं...॥७९१॥

अधिपति हो संसार के, ध्यानी के हो ध्यान।
पूज्य अधिप प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अधिप-जिनाय अर्घ्यं...॥७९२॥

डूबो परमानन्द में, सुखी-सुखी भगवान।
परमानन्द प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परमानन्द-जिनाय अर्घ्यं...॥७९३॥

निज पर के ज्ञाता तुम्हीं, हो विशुद्ध भगवान।
परात्मज्ञ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परात्मज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥७९४॥

जग में सबसे श्रेष्ठ हो, पर से हो अति भिन्न।
पूज्य परात्पर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री परात्पर-जिनाय अर्घ्यं...॥७९५॥

त्रैलोकों को हो प्रिय, हो सुन्दर छविमान।
त्रिजगद्वल्लभ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिजद्वल्लभ-जिनाय अर्घ्यं...॥७९६॥

पूज्यों के भी पूज्य हो, परम पूज्य भगवान।
पूज्य अभ्यर्च्य नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अभ्यर्च्य-जिनाय अर्घ्यं...॥७९७॥

त्रय जग का मंगल करो, मंगलमय भगवान।
त्रिजगन्-मंगलोदय तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिजगन्-मंगलोदय-जिनाय अर्घ्यं...॥७९८॥

इंद्र पूजते पद कमल, कमलासन भगवान।
त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रि को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रि-जिनाय अर्घ्यं...॥७९९॥

तीन लोक के हो शिखर, लोकाग्र विराजमान।
लोकाग्र शिखामणि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री लोकाग्रशिखामणि-जिनाय अर्घ्यं...॥८००॥

पूर्णार्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

वृहद् वृहस्पति वाग्मी हो तुम, वाचस्पति उदारधी हो।
धिषण मनीषी धीमान् हो तुम, शेमुशीष गिराम्पति हो॥१॥
नैकरूप नय उतुंग हो तुम, नैकात्मा नैक धर्मकृत हो।
अविज्ञेय अप्रक्र्यात्मा हो, कृतज्ञ हो कृतलक्षण हो॥२॥
ज्ञानगर्भ हो दयागर्भ हो, रत्नगर्भ हो प्रभास्वरा।
पद्मगर्भ हो जगद्गर्भ हो, हेमगर्भ हो सुदर्शना॥३॥
लक्ष्मीवान त्रिदशाध्यक्ष हो, ईशिता हो दृढ़ीयानिन।
मनोज्ञांग हो आप मनोहर, धीर हो गंभीरशासन॥४॥
धर्मयूप हो दयायाग हो, धर्मनेमि मुनीश्वर हो।
धर्मचक्रायुध देव कर्महा, नाथ! धर्म घोषण तुम हो॥५॥

अमोघवाक् अमोघयज्ञ हो, निर्मल अमोघशासन हो।
सुरूप सुभगस्त्यागी तुम हो, तुम समयज्ञ समाहित हो॥६॥
सुस्थिति स्वास्थ्यभाक् स्वस्थ्य हो, नीरजस्क निरुद्भव हो।
अलेप हो निष्कलंक आत्मा, वीतराग गतस्पृह हो॥७॥
वश्येन्द्रिय हो विमुक्त आत्मा, निःसपत्न जितेन्द्रिय हो।
प्रशान्त अनन्त हो धामर्षी हो, तुम मंगल मलहानय हो॥८॥
अनीदृग उपमाभूत आप हो, दिष्टिदेव अगोचर हो।
अमूर्त मूर्तिमानेक नेक हो, तुम नानैक-तत्वदृग हो॥९॥
अध्यात्मगम्य गम्यत्मा हो, योगविद् योगिवंदित हो।
आप सर्वत्रग सदाभावी हो, तुम त्रिकाल विषयार्थदृक हो॥१०॥
शंकर शंवद दान्त दमी हो, शान्ति परायण अधिप तुम्हीं।
परमानन्द परात्मज्ञ हो, सदा परात्पर रहे तुम्हीं॥११॥
त्रिजगद्वल्लभा अभ्यर्चि हो, त्रिजगन्मंगलोदय तुम हो।
त्रिजगत्पति पूज्यांघ्रि हो तुम, त्रिलोकाग्र शिखामणि हो॥१२॥

(जोगीरासा)

श्री वृहदादि शतक पूजकर, सौ-सौ अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु के सौ-सौ नाम जाप कर, 'सुव्रत' पुण्य कमाए॥
श्री जिनसहस्रनाम मंत्रों से, पाप नशे सुख होवे।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं श्री वृहदादि-शतकजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(पुष्पांजलिं...)

===

नवम अर्घ्यावली (दोहा)

भूत भविष्यत् आज के, ज्ञाता-दृष्टाराम।
त्रिकालदर्शि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकालदर्शि-जिनाय अर्घ्यं...॥८०१॥

तीन लोक के ईश हो, हम पर दो कुछ ध्यान।
लोकेश प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकेश-जिनाय अर्घ्यं...॥८०२॥

रक्षक हो इस लोक के, हमें शरण दो दान।
पूज्य लोकधाता तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकधाता-जिनाय अर्घ्यं...॥८०३॥

अपने व्रत सुव्रत किए, दृढ़ व्रत किए महान।
दृढ़व्रत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दृढ़व्रत-जिनाय अर्घ्यं...॥८०४॥

जग में सर्वोत्कृष्ट हो, लोक शिरोमणि धाम।
सर्वलोकातिग् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकातिग्-जिनाय अर्घ्यं...॥८०५॥

तुम तो पूजा योग्य हो, पूज्य न आप समान।
पूज्य पूज्यप्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पूज्य-जिनाय अर्घ्यं...॥८०६॥

निज गजरथ के सारथी, हम सब के हो प्राण।
सर्वलौकैककसारथि, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वलौकैककसारथि-जिनाय अर्घ्यं...॥८०७॥

तुम सबसे प्राचीन हो, रहे सनातन धाम।
पुराण प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुराण-जिनाय अर्घ्यं...॥८०८॥

समवसरण में शोभते, तृप्त पुरुष भगवान।
पूज्य पुरुष भगवान को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुरुष-जिनाय अर्घ्यं...॥८०९॥

हुआ न कोई पूर्व में, ना हो आप समान।
पूज्य पूर्व प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पूर्व-जिनाय अर्घ्यं...॥८१०॥

जिनवाणी विस्तार के, अंग पूर्व दो ज्ञान।
कृतपूर्वांगविस्तर तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृतपूर्वांगविस्तर-जिनाय अर्घ्यं...॥८११॥

सब देवों में मुख्य हो, आदि देव भगवान।
आदिदेव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आदिदेव-जिनाय अर्घ्यं...॥८१२॥

सभी पुराणों में प्रथम, है जिनेन्द्र का ज्ञान।
पुराणाद्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुराणाद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥८१३॥

तीर्थंकर हो तुम प्रथम, प्रथम देव भगवान।
परम पूज्य पुरुदेव को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुरुदेव-जिनाय अर्घ्यं...॥८१४॥

सबसे पहले देव हो, देवों के भगवान।
अधिदेवता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अधिदेवता-जिनाय अर्घ्यं...॥८१५॥

वर्तमान के समय के, युग के हो भगवान।
परम पूज्य युगमुख्य को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री युगमुख्य-जिनाय अर्घ्यं...॥८१६॥

इस युग में सबसे बड़े, तुम्ही ज्येष्ठ भगवान।
परम पूज्य युगज्येष्ठ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री युगज्येष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥८१७॥

कर्मभूमि आरंभ में, दिया धर्म का ज्ञान।
युगादिस्तिथिदेशक को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री युगादिस्तिथिदेशक-जिनाय अर्घ्यं...॥८१८॥

कल्याणी काया रही, चमके स्वर्ण समान।
कल्याणवर्ग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कल्याणवर्ग-जिनाय अर्घ्यं...॥८१९॥

प्रभु कल्याण स्वरूप हो, कल्याणों के धाम।
परम पूज्य कल्याण को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कल्याण-जिनाय अर्घ्यं...॥८२०॥

सुनो प्रार्थना भक्त की, करो जगत कल्याण।
पूज्य कल्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कल्य-जिनाय अर्घ्यं...॥८२१॥

मंगल स्वरूप आप हो, धारो गुण कल्याण।
कल्याणलक्षण नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कल्याणलक्षण-जिनाय अर्घ्यं...॥८२२॥

मंगलमय प्रकृति रही, स्वाभाव है कल्याण।
कल्याणप्रकृति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कल्याणप्रकृति-जिनाय अर्घ्यं...॥८२३॥

कल्याणी है आत्मा, रोशन करे जहान।
दीप्तकल्याणात्मा तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दीप्तकल्याणात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥८२४॥

कल्मष से अति दूर हो, पाप रहित भगवान।
पूज्य विकल्मष नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विकल्मष-जिनाय अर्घ्यं...॥८२५॥

कर्म कलंकों से रहित, करते काम तमाम।
विकलंक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विकलंक-जिनाय अर्घ्यं...॥८२६॥

कलाकार संसार है, कलातीत भगवान।
कलातीत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कलातीत-जिनाय अर्घ्यं...॥८२७॥

नाश किया हर पाप को, पुण्य निवास स्थान।
कलिलघ्न प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कलिलघ्न-जिनाय अर्घ्यं...॥८२८॥

धरो बहत्तर जग कला, करो आत्म कल्याण।
पूज्य कलाधर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कलाधर-जिनाय अर्घ्यं...॥८२९॥

नाम कर्म के देव जो, उनके भी भगवान।
देवदेव प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री देवदेव-जिनाय अर्घ्यं...॥८३०॥

आप जगत के नाथ हो, दीनानाथ महान।
जगन्नाथ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगन्नाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥८३१॥

तीन लोक के बन्धु हो, हितकारी भगवान।
जगद्बंधु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगद्बन्धु-जिनाय अर्घ्यं...॥८३२॥

तीन लोक के हो विभु, जगदीश्वर भगवान।
जगद्विभु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगद्विभु-जिनाय अर्घ्यं...॥८३३॥

हितकारी हो जगत के, सबका रखते ध्यान।
जगत्-हितैषी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगत्-हितैषी-जिनाय अर्घ्यं...॥८३४॥

ज्ञाता हो त्रयलोक के, करते आतम ध्यान।
परम पूज्य लोकज्ञ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥८३५॥

सभी जगह तो व्याप्त हो, पाकर केवलज्ञान।
सर्वग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वग-जिनाय अर्घ्यं...॥८३६॥

जग के तुम अग्रज रहे, जन्मे मुख्य स्थान।
जगदग्रज प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगदग्रज-जिनाय अर्घ्यं...॥८३७॥

सकल चराचर के गुरु, सबको देते ज्ञान।
पूज्य चराचरगुरु तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री चराचरगुरु-जिनाय अर्घ्यं...॥८३८॥

मन में स्थापित रहे, ऐसा है अरमान।
गोप्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गोप्य-जिनाय अर्घ्यं...॥८३९॥

गुप्त स्वरूपी आप हो, आतम के भगवान।
गूढ़ात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गूढ़ात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥८४०॥

गूढतत्व को जानते, दिए गूढ़ निज ज्ञान।
गूढ़गोचर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री गूढ़गोचर-जिनाय अर्घ्यं...॥८४१॥

जन्म लिए तत्काल में, एसे बाल समान।
सद्योजात प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सद्योजात-जिनाय अर्घ्यं...॥८४२॥

आप प्रकाश स्वरूप हो, आतम सूर्य समान।
प्रकाशात्मा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रकाशात्मा-जिनाय अर्घ्यं...॥८४३॥

उज्ज्वल देदीप्यमान हो, जलती आग समान।
ज्वलज्ज्वलनसप्रभ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ज्वलज्ज्वलनसप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८४४॥

अन्धकार से दूर हो, तेजस सूर्य समान।
आदित्यवर्ण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आदित्यवर्ण-जिनाय अर्घ्यं...॥८४५॥

आप सुनहरे से रहे, कंचन कान्तिमान।
भर्माभ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भर्माभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८४६॥

दाता परमानन्द के, सुन्दर कान्तिमान।
सुप्रभ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८४७॥

कंचन सी काया रही, कान्ति कनक समान।
कनकप्रभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कनकप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८४८॥

परमौदारिक देह में, सुवर्ण वर्ण सम जान।
सुवर्णवर्ण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुवर्णवर्ण-जिनाय अर्घ्यं...॥८४९॥

चेतन से उज्ज्वल रहे, स्फटिकमणि समान।
रुक्माभ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री रुक्माभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८५०॥

आप करोड़ों सूर्य सम, उज्ज्वल हो भगवान।
सूर्यकोटिसमप्रभ तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यकोटिसमप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८५१॥

सूर्योदय सम आप हो, उज्ज्वल स्वर्ण समान।
तपनीयनिभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तपनीयनिभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८५२॥

उच्चदेह को धारते, सचमुच मेरु समान।
पूज्य तुंग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तुंग-जिनाय अर्घ्यं...॥८५३॥

बालभानु सम शोभते, स्वामी उदीयमान।
बालार्काभ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री बालार्काभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८५४॥

शीतल सौम्य सुशान्त हो, फिर भी अग्नि समान।
पूज्य अनलप्रभ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनलप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८५५॥

शाम नहीं पर शाम के, तुम हो मेघ समान।
सन्ध्याभ्रबभ्रु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सन्ध्याभ्रबभ्रु-जिनाय अर्घ्यं...॥८५६॥

आप अचेतन हो नहीं, फिर स्वर्ण समान।
हेमाभ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हेमाभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८५७॥

ज्ञानचेतना में रमो, तपते स्वर्ण समान।
तप्तचामीकरच्छवि को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तप्तचामीकरच्छवि-जिनाय अर्घ्यं...॥८५८॥

उज्ज्वल उज्ज्वल देह में, चमको स्वर्ण समान।
निष्टप्तकनकच्छाय को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निष्टप्तकनकच्छाय-जिनाय अर्घ्यं...॥८५९॥

कंचन कान्तिमान हो, श्री जिनवर भगवान।
कनत्कांचनसन्निभ को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कनत्कांचनसन्निभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८६०॥

सोने जैसा रंग है, सोने जैसा ज्ञान।
हिरण्यवर्ण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हिरण्यवर्ण-जिनाय अर्घ्यं...॥८६१॥

तन आभा है सुनहरी, चेतन सिद्ध समान।
स्वर्णाभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वर्णाभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८६२॥

आत्म कुंभ है स्वर्ण सम, नीर भरा सुख ज्ञान।
शातकुंभनिभप्रभ तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शातकुंभनिभप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८६३॥

चेतन सिद्धों से रहे, आभा स्वर्ण समान।
द्युम्नाभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री द्युम्नाभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८६४॥

अभी-अभी उत्पन्न सम, दमको स्वर्ण समान।
जातरूपाभ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जातरूपाभ-जिनाय अर्घ्यं...॥८६५॥

तपता सोना चमकता, जाम्बुनद है नाम।
तप्तजाम्बुनद्युति, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तप्तजाम्बुनद्युति-जिनाय अर्घ्यं...॥८६६॥

तपे हुए धुलते हुए, सुन्दर स्वर्ण समान।
सुधौतकलधौतश्री नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुधौतकलधौतश्री-जिनाय अर्घ्यं...॥८६७॥

दीप्यमान हो दीप सम, स्व-पर प्रकाशक ज्ञान।
प्रदीप्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रदीप्त-जिनाय अर्घ्यं...॥८६८॥

हाटक कहते स्वर्ण को, उसके तेज समान।
हाटकद्युति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हाटकद्युति-जिनाय अर्घ्यं...॥८६९॥

शिष्ट जनों के इष्ट हो, इष्टों के हो प्राण।
शिष्टेष्ट प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शिष्टेष्ट-जिनाय अर्घ्यं...॥८७०॥

पालो पोषो जगत को, हृष्ट-पुष्ट भगवान।
पुष्टिद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्टिद-जिनाय अर्घ्यं...॥८७१॥

पुष्ट हो पोषित करो, आप महा बलवान।
पूज्य पुष्ट प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्ट-जिनाय अर्घ्यं...॥८७२॥

दर्शन दो स्पष्ट तुम, दो स्पष्ट मुकाम।
स्पष्ट प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्पष्ट-जिनाय अर्घ्यं...॥८७३॥

शब्द वाक्य स्पष्ट हैं, स्पष्ट अक्षर ज्ञान।
स्पष्टाक्षर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्पष्टाक्षर-जिनाय अर्घ्यं...॥८७४॥

सबसे आप समर्थ हो, सक्षम हो भगवान।
परम पूज्य क्षम नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री क्षम-जिनाय अर्घ्यं...॥८७५॥

कर्म शत्रु को घातते, हरो विघ्न के काम।
शत्रुघ्न प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुघ्न-जिनाय अर्घ्यं...॥८७६॥

इस दुनियाँ में आपका, कोई न शत्रु समान।
अप्रतिघ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रतिघ-जिनाय अर्घ्यं...॥८७७॥

जग से तुम कृतकृत्य हो, सफल किए हर काम।
अमोघ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघ-जिनाय अर्घ्यं...॥८७८॥

दिए धर्म उपदेश को, जिनशासक भगवान।
प्रशास्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशास्ता-जिनाय अर्घ्यं...॥८७९॥

संरक्षक हो विश्व के, रक्षक हो भगवान।
पूज्य शासिता नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शासिता-जिनाय अर्घ्यं...॥८८०॥

आप स्वयं उत्पन्न हो, दो जीवन का ज्ञान।
पूज्य स्वभू प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्वभू-जिनाय अर्घ्यं...॥८८१॥

कामादिक को नष्ट कर, शान्त हुए भगवान।
शान्तिनिष्ट प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनिष्ट-जिनाय अर्घ्यं...॥८८२॥

ऋषि मुनि यति अनगार के, आप ज्येष्ठ भगवान।
मुनिज्येष्ठ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिज्येष्ठ-जिनाय अर्घ्यं...॥८८३॥

सुख की शाश्वत धार के, आप रहे उत्थान।
शिवताति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शिवताति-जिनाय अर्घ्यं...॥८८४॥

दाता हो कल्याण के, मोक्ष महल दो दान।
शिवप्रद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शिवप्रद-जिनाय अर्घ्यं...॥८८५॥

शान्ति प्रदाता शान्ति दो, शान्तिनाथ भगवान।
शान्तिद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिद-जिनाय अर्घ्यं...॥८८६॥

विघ्न उपद्रव शान्त कर, शान्त करो मन प्राण।
शान्तिकृत प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥८८७॥

कर्मों को क्षय कर हुए, शान्तिमूर्ति भगवान।
शान्तिप्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥८८८॥

निखर रहे चैतन्य से, कान्तियुक्त भगवान।
कान्तिमान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कान्तिमान-जिनाय अर्घ्यं...॥८८९॥

ऋद्धि-सिद्धि दो भक्त को, मनवांछित फलदान ।
कामितप्रद प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कामितप्रद-जिनाय अर्घ्यं...॥८९०॥

श्रेयस के भण्डार हो, सुखसागर कल्याण।
श्रेयोनिधि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयोनिधि-जिनाय अर्घ्यं...॥८९१॥

धर्मवृक्ष की नींव हो, मोक्षमहल के धाम।
अधिष्ठान प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अधिष्ठान-जिनाय अर्घ्यं...॥८९२॥

कौन बनाए आप को, आप स्वयं भगवान।
अप्रतिष्ट प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रतिष्ट-जिनाय अर्घ्यं...॥८९३॥

पूज्य प्रतिष्ठित आप हो, सभी जगह भगवान।
प्रतिष्ठित प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठित-जिनाय अर्घ्यं...॥८९४॥

अतिशय स्थिर आप हो, डिग न सको भगवान।
सुस्थिर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुस्थिर-जिनाय अर्घ्यं...॥८९५॥

पद विहार से हो रहित, जब करते निज ध्यान।
स्थावर प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री स्थावर-जिनाय अर्घ्यं...॥८९६॥

निश्चल हो चारित्र में, श्रद्धालय के धाम।
स्थाणु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री स्थाणु-जिनाय अर्घ्यं...॥८९७॥

लोक व्याप्त विस्तार है, विस्तृत हो भगवान।
प्रथियान् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथियान्-जिनाय अर्घ्यं...॥८९८॥

अतिशय आप प्रसिद्ध हो, सबसे कीर्तिमान।
पूज्य प्रथित प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथित-जिनाय अर्घ्यं...॥८९९॥

बहुत बड़े प्रभु आप हो, कोई न आप समान।
परम पूज्य प्रथु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथु-जिनाय अर्घ्यं...॥९००॥

पूर्णार्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

तुम लोकेश त्रिकालदर्शी हो, लोकधाता तुम दृढव्रत हो।
पूज्य सर्व लोकतिग हो तुम, सर्वलोकैक सारथि हो॥१॥
पुराण पुरुष पूर्व हो तुम तो, तुम कृतपूर्वांग विस्तर हो।
आदिदेव हो पुराणाद्य हो, पुरुदेव अधिदेवता हो॥२॥
तुम युगमुख्य तुम युगज्येष्ठ हो, युगादिस्थिति देशक हो।
कल्याणवर्ग कल्याणकल्य तुम, ही कल्याण लक्षण हो॥३॥
तुम कल्याण प्रकृति विकल्मष, दीप्ति कल्याणआत्मा हो।
विकलंक कलातीत कलिलघ्न हो, तुम्हीं कलाधर भगवन हो॥४॥
देवदेव हो जगन्नाथ हो, जगद्बंधु हो जगद्विभु।
जगत्-हितैषी सर्वग हो तुम, हो लोकज्ञ जगत्-अग्रज॥ ५॥

आप चराचर गूढ़ात्मा हो, गुरुगोप्य गूढ़गोचर हो।
सद्योजात प्रकाशात्मा हो, ज्वलज्ज्वलन सत्प्रभ तुम हो॥६॥
तुम आदित्यवर्ण सुप्रभ हो, तुम धर्माभ कनकप्रभ हो।
सुवर्णवर्ण रुक्माभ तुम्हीं हो, सूर्यकोटि समप्रभ हो॥७॥
निभस्तुंग तपनीय अनलप्रभ, बालार्काभ हेमाभ तुम्हीं।
तप्तचामीकरच्छवि हो, संध्याभ्र वभ्रु नाथ तुम्हीं॥८॥
तुम निष्टप्त कनकच्छाय हो, कनत्कांचन सन्निभ हो।
हिरण्यवर्ण स्वर्णाभ तुम्हीं हो, शातकुम्भ निभप्रभ हो॥९॥
तुम द्युम्नाभ जातरूपाभ हो, तप्त जाम्बुनदद्युति हो।
तुम्हीं सुधौत कलधौत श्री हो, तुम प्रदीप्त हाटकद्युति हो॥१०॥
तुम शिष्टेष्ट पुष्टिद पुष्ट हो, स्पष्ट स्पष्टाक्षर क्षम हो।
तुम शत्रुघ्न अप्रतिघ अमोघ हो, प्रशास्ता शासिता स्वभू हो॥११॥
शान्तिनिष्ट हो मुनि ज्येष्ठ हो, तुम शिवताति शिवप्रद हो।
शान्तिद शान्तिकृत-शान्ति हो, कान्तिमान कामितप्रद हो॥१२॥
तुम श्रेयोनिधि अधिष्ठान हो, अप्रतिष्ठ प्रतिष्ठित हो।
सुस्थिर स्थावर स्थास्नु हो, तुम प्रथियान प्रथितपृथु हो॥१३॥

(जोगीरासा)

श्री त्रिकालदशर्यादि शतक पूजकर, सौ-सौ अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु के सौ-सौ नाम जाप कर, 'सुव्रत' पुण्य कमाए॥
श्री जिनसहस्रनाम मंत्रों से, पाप नशे सुख होवे।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाशदशर्यादि-शतकजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(पुष्पांजलिं...)

===

दशम् अर्घ्यावली (दोहा)

वस्त्र दिशाओं के धरे, रहते शिशु समान।
दिग्वासा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री दिग्वासा-जिनाय अर्घ्यं...॥९०१॥

वायु करधनी धार के, करो वात रसपान।
वातरशन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वातरशन-जिनाय अर्घ्यं...॥९०२॥

निर्ग्रंथों के ईश हो, मुनियों के भगवान।
निर्ग्रन्थेश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रन्थेश-जिनाय अर्घ्यं...॥९०३॥

दिशा वस्त्र भी त्याग के, करो सिद्ध निज ध्यान।
पूज्य निरम्बर नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निरम्बर-जिनाय अर्घ्यं...॥९०४॥

अंतरंग वहिरंग के, तजे काम धन धाम।
निश्किंचन प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निश्किंचन-जिनाय अर्घ्यं...॥९०५॥

मूर्च्छा-आशा से रहित, स्वयं पूर्ण भगवान।
निराशंस प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री निराशंस-जिनाय अर्घ्यं...॥९०६॥

ज्ञान नयन को धारते, वीतराग विज्ञान।
ज्ञानचक्षु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानचक्षु-जिनाय अर्घ्यं...॥९०७॥

पूर्ण रूप निर्मोह हो, मोहो सबको ध्यान।
पूज्य अमोमुह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अमोमुह-जिनाय अर्घ्यं...॥९०८॥

आत्म तेज के पुंज हो, तेजस्वी भगवान।
तेजोराशि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तेजोराशि-जिनाय अर्घ्यं...॥९०९॥

अनन्त ओजस्वी रहे, करो पराक्रम ध्यान।
अनन्तौजा प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तौजा-जिनाय अर्घ्यं...॥९१०॥

सागर हो तुम ज्ञान के, किन्तु न लवण समान।
ज्ञानाब्धि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाब्धि-जिनाय अर्घ्यं...॥९११॥

सागर हो निज शील के, पूर्ण भ्रम विज्ञान।
शीलसागर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शीलसागर-जिनाय अर्घ्यं...॥९१२॥

तेज स्वरूपी आप हो, हरो अन्ध अज्ञान।
तेजोमय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तेजोमय-जिनाय अर्घ्यं...॥९१३॥

अनन्त ज्योति धारण करो, मिट न सके प्रभु ज्ञान।
अमितज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अमितज्योति-जिनाय अर्घ्यं...॥९१४॥

ज्योतिर्मय निर्ग्रन्थ हो, मूर्तिमान भगवान।
ज्योतिमूर्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री ज्योतिमूर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥९१५॥

ज्ञानप्रकाशी आप हो, हरो तिमिर अज्ञान।
पूज्य तमोपह नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तमोपह-जिनाय अर्घ्यं...॥९१६॥

तीन लोक के शीश के, तुम हो मुकुट समान।
जगच्चूड़ामणि नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगच्चूड़ामणि-जिनाय अर्घ्यं...॥९१७॥

तेजस्वी हो ज्ञान से, निज-पर प्रकाशवान।
दीप्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दीप्त-जिनाय अर्घ्यं...॥९१८॥

अनन्तसुखी सम्पन्न हो, शास्वत सुख दो दान।
शंवान् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शंवान्-जिनाय अर्घ्यं...॥९१९॥

विघ्नविनाशक आप हो, अन्तराय के हान।
विघ्नविनायक नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विघ्नविनायक-जिनाय अर्घ्यं...॥९२०॥

कल्मष पाप विनाश के, शुद्ध हुए भगवान।
कलिघ्न प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कलिघ्न-जिनाय अर्घ्यं...॥९२१॥

कर्मशत्रु का हंत कर, हो अरिहन्त महान।
कर्मशत्रुघ्न प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कर्मशत्रुघ्न-जिनाय अर्घ्यं...॥९२२॥

लोकालोक निहार के, देते सबमें ज्ञान।
लोकालोक-प्रकाशक को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकालोकप्रकाशक-जिनाय अर्घ्यं...॥९२३॥

निद्रा विजयी आप हो, मोह नींद ना जान।
अनिद्रालु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनिद्रालु-जिनाय अर्घ्यं...॥९२४॥

सभी प्रमादों से रहित, निज का कर संधान।
अतन्द्रालु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अतन्द्रालु-जिनाय अर्घ्यं...॥९२५॥

निजस्वरूप की सिद्धि को, जाग्रत हो सावधान।
जागरूक प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जागरूक-जिनाय अर्घ्यं...॥९२६॥

ज्ञान स्वरूपी आप हो, आतम के विज्ञान।
पूज्य प्रमामय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रमामय-जिनाय अर्घ्यं...॥९२७॥

मोक्षलक्ष्मी के पति, अविनाशी अभिराम।
लक्ष्मीपति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीपति-जिनाय अर्घ्यं...॥९२८॥

जगत प्रकाशित कर रहे, पाकर आतमज्ञान।
जगज्ज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जगज्ज्योति-जिनाय अर्घ्यं...॥९२९॥

धर्म रूप सम्राज्य के, राजा हो भगवान।
धर्मराज प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मराज-जिनाय अर्घ्यं...॥९३०॥

प्रजा हितैषी आप हो, रखते सबका ध्यान।
पूज्य प्रजाहित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रजाहित-जिनाय अर्घ्यं...॥९३१॥

इच्छा रखते मोक्ष की, रखते रुचि निर्माण।
मुमुक्षु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मुमुक्षु-जिनाय अर्घ्यं...॥९३२॥

बंध मोक्ष जानो तुम्हीं, दिए भेद विज्ञान।
बंधमोक्षज्ञ नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री बन्धमोक्षज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥९३३॥

पंच इन्द्रियों को जय किए, हुए स्वतंत्र भगवान।
जिताक्ष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जिताक्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥९३४॥

कामदेव को जीत कर, हुए ब्रह्म-विज्ञान।
जितमन्मथ प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जितमन्मथ-जिनाय अर्घ्यं...॥९३५॥

शान्त रसिक के नृत्य में, नाच रहे भगवान।
प्रशान्तरसशैलूष को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तरसशैलूष-जिनाय अर्घ्यं...॥९३६॥

भव्यों के नायक तुम्हीं, मूलनायक भगवान।
भव्यपेटकनायक तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री भव्यपेटकनायक-जिनाय अर्घ्यं...॥९३७॥

कर्त्ता हो जिनधर्म के, धर्म प्रकाशक ज्ञान।
मूलकर्त्ता प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मूलकर्त्ता-जिनाय अर्घ्यं...॥९३८॥

अखिलविश्व की ज्योति हो, अनन्त ज्योति भगवान।
अखिलज्योति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अखिलज्योति-जिनाय अर्घ्यं...॥९३९॥

राग-द्वेष भव कर्म का, मल का करके हान।
मलघ्न प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री मलघ्न-जिनाय अर्घ्यं...॥९४०॥

मूल हेतु हो मोक्ष के, मुक्ति के सोपान।
मूलकारण प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मूलकारण-जिनाय अर्घ्यं...॥९४१॥

सम्यक् वक्ता आप हो, देते सम्यग्ज्ञान।
आप्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री आप्त-जिनाय अर्घ्यं...॥९४२॥

वाणी के ईश्वर रहे, हरो वचन संग्राम।
वागीश्वर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वागीश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥९४३॥

प्रभु कल्याण स्वरूप हो, दो क्षायिक श्रद्धान।
श्रेयान् प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयान्-जिनाय अर्घ्यं...॥९४४॥

वाणी कल्याणी रही, देती है सुख दान।
श्रायसोक्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रायसोक्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥९४५॥

वाणी में संदेह ना, सार्थक वचन प्रमाण।
निरुक्तवाक् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निरुक्तवाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥९४६॥

उत्तम वक्ता हो प्रखर, वाणी रही प्रधान।
प्रवक्ता प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रवक्ता-जिनाय अर्घ्यं...॥९४७॥

सभी तरह के जो वचन, उनके हो भगवान।
वचसामीश प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वचसामीश-जिनाय अर्घ्यं...॥९४८॥

कामदेव को जीत कर, किया काम आसान।
मारजित् प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री मारजित्-जिनाय अर्घ्यं...॥९४९॥

विश्व तत्त्व को जानते, जानो ज्ञानाज्ञान।
विश्वभाववित् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वभाववित्-जिनाय अर्घ्यं...॥९५०॥

परमौदारिक तन धरो, चरमोत्तम तन धाम।
सुतनु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुतनु-जिनाय अर्घ्यं...॥९५१॥

ज्ञान शरीरी आप हो, छोड़े तन-मन-प्राण।
तनुनिर्मुक्त प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तनुनिर्मुक्त-जिनाय अर्घ्यं...॥९५२॥

आतम में तल्लीन हो, धारो सम्यग्ज्ञान।
सुगत प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुगत-जिनाय अर्घ्यं...॥९५३॥

दुर्नय के हंता तुम्हीं, नाशो मिथ्याज्ञान।
हतदुर्नय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हतदुर्नय-जिनाय अर्घ्यं...॥९५४॥

अंतरंग बहिरंग की, श्री लक्ष्मी के धाम।
श्रीश प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीश-जिनाय अर्घ्यं...॥९५५॥

नाथ आपके पद कमल, पूजें श्री श्रीमान।
श्री श्रितपादाब्ज नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री श्रितपादाब्ज-जिनाय अर्घ्यं...॥९५६॥

आप नहीं भयवान हो, आप रहे भगवान।
वीतभीर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वीतभीर-जिनाय अर्घ्यं...॥९५७॥

भक्तों के भय दूर कर, अभयदान भगवान।
अभयंकर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अभयंकर-जिनाय अर्घ्यं...॥९५८॥

सारे दोषों को हरो, दोषरहित भगवान।
उत्सन्नदोष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री उत्सन्नदोष-जिनाय अर्घ्यं...॥९५९॥

विघ्नों के हर्त्ता तुम्हीं, विघ्न रहित भगवान।
निर्विघ्न प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निर्विघ्न-जिनाय अर्घ्यं...॥९६०॥

निश्चल हो निश्चल करो, श्री निश्चल भगवान।
निश्चल प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री निश्चल-जिनाय अर्घ्यं...॥९६१॥

सबको प्रिय अत्यंत हो, वात्सल्य के धाम।
लोकवत्सल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकवत्सल-जिनाय अर्घ्यं...॥९६२॥

प्रश्नों के उत्तर रहे, लोकोत्तम भगवान।
लोकोत्तर प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकोत्तर-जिनाय अर्घ्यं...॥९६३॥

लोकों के स्वामी रहे, निज का करके ज्ञान।
पूज्य लोकपति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकपति-जिनाय अर्घ्यं...॥९६४॥

देखो तत्त्व यथार्थ को, खोल ज्ञान के नैन।
लोकचक्षु प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री लोकचक्षु-जिनाय अर्घ्यं...॥९६५॥

अपार बुद्धि धारते, पाके आतम ज्ञान।
अपारधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अपारधी-जिनाय अर्घ्यं...॥९६६॥

इस चंचल संसार में, धारो स्थिर ज्ञान।
धीरधी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धीरधी-जिनाय अर्घ्यं...॥९६७॥

जान रहे सन्मार्ग को, मोक्षमार्ग दे दान।
बुद्धसन्मार्ग नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री बुद्धसन्मार्ग-जिनाय अर्घ्यं...॥९६८॥

शुद्ध स्वरूपी आप हो, शुद्धातम के धाम।
पूज्य शुद्ध प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शुद्ध-जिनाय अर्घ्यं...॥९६९॥

सम्यक् वचन यथार्थ हैं, सत्यरूप भगवान।
सुनृतपूतवाक् नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुनृतपूतवाक्-जिनाय अर्घ्यं...॥९७०॥

बुद्धि पारगामी रहे, प्रज्ञारूप पुराण।
प्रज्ञापारमित नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञापारमित-जिनाय अर्घ्यं...॥९७१॥

प्रज्ञा श्रमण अरिहन्त हो, अतिशय बुद्धिमान।
प्राज्ञ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्राज्ञ-जिनाय अर्घ्यं...॥९७२॥

मन विजय शिवमार्ग का, करते सदा प्रयत्न।
परम पूज्य यति नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री यति-जिनाय अर्घ्यं...॥९७३॥

वस में कर सब इन्द्रियाँ, हरो पाप अज्ञान।
नियमितेन्द्रिय प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नियमितेन्द्रिय-जिनाय अर्घ्यं...॥९७४॥

भद्र पुरुष हो पूज्य हो, अरिहन्ता भगवान।
भदन्त प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भदन्त-जिनाय अर्घ्यं...॥९७५॥

मंगलकारी आप हो, भद्रों के भगवान।
पूज्य भद्रकृत नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भद्रकृत-जिनाय अर्घ्यं...॥९७६॥

कपट रहित प्रभु आप हो, भद्र रूप परिणाम।
भद्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री भद्र-जिनाय अर्घ्यं...॥९७७॥

कल्पलता तरु आप हो, वरद हस्त दो दान।
कल्पवृक्ष प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कल्पवृक्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥९७८॥

दिला रहे हर इष्ट को, इच्छित फल वरदान।
वरप्रद प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री वरप्रद-जिनाय अर्घ्यं...॥९७९॥

उखाड़ फेंके आपने, कर्म शत्रु के धाम।
समुन्मूलित-कर्मारि को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री समुन्मूलितकर्मारि-जिनाय अर्घ्यं...॥९८०॥

कर्म काष्ट सुलगा रहे, तुम तो अग्नि समान।
कर्मकाष्ठाशुशुक्षणि को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कर्मकाष्ठाशुशुक्षणि-जिनाय अर्घ्यं...॥९८१॥

क्रियाकाण्ड में हो कुशल, पाकर सम्यग्ज्ञान।
कर्मण्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कर्मण्य-जिनाय अर्घ्यं...॥९८२॥

कर्मठ हो चारित्र में, शूरवीर भगवान।
कर्मठ प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कर्मठ-जिनाय अर्घ्यं...॥९८३॥

सर्वोत्तम उत्कृष्ट हो, साँचे प्रकाशमान।
प्रांशु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री प्रांशु-जिनाय अर्घ्यं...॥९८४॥

उपादेय वा हेय का, रखते साँचा ज्ञान।
हेयादेय-विचक्षण को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री हेयादेयविचक्षण-जिनाय अर्घ्यं...॥९८५॥

निज की अनन्त शक्तियाँ, प्रकटाए भगवान।
अनन्तशक्ति प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तशक्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥९८६॥

छिन्न-भिन्न के योग्य तो, कभी नहीं भगवान।
अच्छेद्य प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री अच्छेद्य-जिनाय अर्घ्यं...॥९८७॥

जन्म जरा वा मृत्यु के, नाशे तीनों ग्राम।
त्रिपुरारि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिपुरारि-जिनाय अर्घ्यं...॥९८८॥

तीन काल त्रय लोक को, देख रहे भगवान।
त्रिलोचन प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिलोचन-जिनाय अर्घ्यं...॥९८९॥

तीन नेत्र प्रभु धारते, चेतन दर्शन ज्ञान।
त्रिनेत्र प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिनेत्र-जिनाय अर्घ्यं...॥९९०॥

तीन लोक के नाथ हो, जन्मे ले त्रय ज्ञान।
त्रयम्बक प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्रयम्बक-जिनाय अर्घ्यं...॥९९१॥

तीन लोक के तत्त्व को, जान रहे भगवान।
त्र्यक्ष प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री त्र्यक्ष-जिनाय अर्घ्यं...॥९९२॥

चरम चक्षु की बात क्या, नैना केवलज्ञान।
केवलज्ञानवीक्षण तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानवीक्षण-जिनाय अर्घ्यं...॥९९३॥

तेरा मेरा सभी का, हो मंगल कल्याण।
समन्तभद्र प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री समन्तभद्र-जिनाय अर्घ्यं...॥९९४॥

कर्म शत्रु को शान्त कर, जग विजयी भगवान।
शान्तारि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तारि-जिनाय अर्घ्यं...॥९९५॥

श्री धार्मिक आचार्य दो, शिक्षा दीक्षा दान।
धर्माचार्य प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्माचार्य-जिनाय अर्घ्यं...॥९९६॥

सब पर करते हो दया, दयासिन्धु भगवान।
दयानिधि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री दयानिधि-जिनाय अर्घ्यं...॥९९७॥

सूक्ष्म तत्त्व को देखते, सबको दो विज्ञान।
सूक्ष्मदर्शी प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मदर्शी-जिनाय अर्घ्यं...॥९९८॥

अनंग विजेता आप हो, तुमसे हारा काम।
जितानंग प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री जितानंग-जिनाय अर्घ्यं...॥९९९॥

करो सभी पर तुम कृपा, कृपासिन्धु भगवान।
कृपालु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री कृपालु-जिनाय अर्घ्यं...॥१०००॥

उपदेशक हो धर्म के, देते आत्मिक ध्यान।
पूज्य धर्मदेशक तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मदेशक-जिनाय अर्घ्यं...॥१००१॥

मोक्षरूप शुभ लाभ दो, दो चेतन धन दान।
शुभंयु प्रभु के नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री शुभंयु-जिनाय अर्घ्यं...॥१००२॥

सुख को निज आधीन कर, सुख साता दो दान।
सुखसाद्भूत प्रभु नाम ;को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री सुखसाद्भूत-जिनाय अर्घ्यं...॥१००३॥

पुण्यफला अरिहन्त हो, पुण्य कोश भगवान।
पुण्यराशि प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री पुण्यराशि-जिनाय अर्घ्यं...॥१००४॥

आमय कहते रोग को, रोग रहित भगवान।
पूज्य अनामय नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अनामय-जिनाय अर्घ्यं...॥१००५॥

रक्षा करके धर्म की, पालो सकल जहान।
धर्मपाल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मपाल-जिनाय अर्घ्यं...॥१००६॥

जग का पालन कर रहे, मोक्षमार्ग दे दान।
जगत्पाल प्रभु नाम को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री जगत्पाल-जिनाय अर्घ्यं...॥१००७॥

धर्म रूप साम्राज्य के, नायक हैं भगवान।
धर्मसाम्राज्यनायक तुम्हें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मसाम्राज्यनायक-जिनाय अर्घ्यं...॥१००८॥

पूर्णार्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

दिग्वासा हो वातरसन हो, निर्ग्रन्थेश निरम्बर हो।
निष्किंचन हो निराशंस हो, ज्ञानचक्षु अमोमुह हो॥१॥
तेजोराशि अनन्त ओज हो, ज्ञानाब्धि शीलसागर हो।
तेजोमय हो अमितज्योति हो, ज्योतिमूर्ति तमोपह हो॥२॥
आप जगत.चूडामणि दीप्ति, शंवान विघ्न विनायक हो।
कलिघ्न कर्म शत्रुघ्न तुम्हीं हो, लोकालोक प्रकाशक हो॥३॥
अनिद्रालु हो अतन्द्रालु हो, तुम्हीं प्रमामय जागरुक हो।
लक्ष्मीपति हो जगत्-ज्योति हो, धर्मराज प्रजाहित हो॥४॥
मुमुक्षबंध मोक्षज्ञ आप हो, तुम जिताक्ष जितमन्मथ हो।
प्रशान्तरस शैलूष आप हो, भव्य पेटक नायक हो॥५॥

मूलकर्ता अखिलज्योति हो, मलघ्न मूलकारण हो।
निरुक्तवाक् आप्त वागीश्वर, श्रेयान् श्रायस-उक्ति हो॥६॥
वचसामीश प्रवक्ता हो तुम, मारजित्-विश्वभाववित् हो।
सतनुस्तनु निर्मुक्त सुगत हो, हत-दुर्नय जगवंदित हो॥७॥
श्रीश वीत भीर भंयकर, श्री श्रित पादाब्ज निश्चल हो।
उत्सन्न दोष निर्विघ्न आप हो, भगवान लोक वत्सल हो॥८॥
लोकोत्तर हो लोकपति हो, लोकचक्षु हो अपारधी।
शुद्ध बुद्ध सन्मार्ग आप हो, सुनृतपूतवाक् धीरधी॥९॥
प्रज्ञापारमित प्राज्ञ यति हो, नियमितेन्द्रिय भदन्त भद्र हो।
कल्पवृक्ष हो आप भद्रकृत, तुम्हें नमोस्तु तुम तरप्रद हो॥१०॥
समुन्मूलित कर्मारि कर्मठ, कर्मकाष्ठा शु-शुक्षणी हो।
प्रांशु हो कर्मण्य आप हो, हेयादेय विचक्षण हो॥११॥
अनन्त शक्ति अच्छेद्य त्रिलोचन, त्रिपुरारी त्रिनेत्र त्रयम्बक हो।
त्रयक्ष आपको रोज नमोस्तु, केवलज्ञान वीक्षण हो॥१२॥
समन्तभद्र हो शान्तारि हो, धर्माचारि हो दयानिधि हो।
सूक्ष्मदर्शी हो जितानंग हो, कृपालु धर्मदेशक हो॥१३॥
शुभंयू सुखसाद्भूत हो, पुण्यराशि अनामय हो।
धर्मपाल हो जगतपाल हो, धर्म साम्राज्य नायक हो॥१४॥

(जोगीरासा)

श्री दिग्वासादि शतक पूजकर, सौ-वसु अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु के शताष्ट नाम जाप कर, 'सुव्रत' पुण्य कमाए॥
श्री जिनसहस्त्रनाम मंत्रों से, पाप नशे सुख होवे।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे॥

ॐ ह्रीं श्री दिग्वासादि-अष्टोत्तरशतक-जिनाय पूर्णार्घ्यं...।

(पुष्पांजलिं...)

===

जाप्य मंत्र :

ॐ ह्रीं श्री जिनाय नमः। अथवा **ॐ ह्रीं अर्हं नमः।**

जयमाला

(ज्ञानोदय)

आचार्यों ने नाम आपके, एक हजार आठ गाए।
जो इनको गाए ध्यायेगा, स्मरण शक्ति शुद्ध पाए॥
यद्यपि हमने नाम भजे पर, पूर्ण कौन वह कह पाए।
क्योंकि अगोचर तुम वचनों के, फिर भी स्तोता फल पाए॥१॥
अतः आप ही जगत बन्धु हो, जगत वैद्य जग रक्षक हो।
पूज्य आप ही जगत हितैषी, इसीलिए तो नमोऽस्तु हो॥
मुख्य रीति से जगत प्रकाशक, अतः आप ही एक रहे।
दर्शन तथा ज्ञान उपयोगी, नाथ! आप दो रूप रहे॥२॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरितमय, तीन रूप प्रभु आप रहे।
अनन्तचतुष्टयों को धारो, चार रूप सो आप रहे॥
परमेष्ठी या कल्याणक के, पाँच रूप भी आप रहे।
षट् द्रव्यों के ज्ञाता हो सो, नाथ! आप छह रूप रहे॥३॥
सात तत्त्व या नय के ज्ञाता, सात रूप भी आप रहे।
सम्यक्त्वादि आठ गुणी सो, आठ रूप भी आप रहे॥
नव केवललब्धि को धारो, नाथ! आप नौ रूप रहे।
धरो महाबल आदि दसों भव, अतः आप दस रूप रहे॥४॥
जो भी सहस्रनाम स्तोत्र का, पाठ जाप चिन्तन करते।
हर कल्याणक पाकर वे तो, निज को निज पावन करते॥
अतः भक्त जो इन्द्रविभूति, तथा पुण्य पाना चाहें।
वो जन सहस्रनाम को पढ़के, चिन्तन मंथन कर ध्याएँ॥५॥

श्री सहस्रनाम विधान में, सहस्रनाम के आश्रय से।
अरिहन्तों की किए अर्चना, मिले शान्ति इस आशय से॥
करुणाभाव जिनेश्वर हो तुम, करुणाधार बहाओ तो।
'विद्या' गुरु के 'सुव्रत' मुनि को, प्रभु अरिहन्त बनाओ तो॥६॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-श्रीजिनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सहस्रनाम स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, सहस्रनाम जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महासमुच्चय अर्घ्य

(लय–पिच्छी रे पिच्छी...)

(जोगीरासा)

प्रभु तीर्थंकर चरण शरण में, कुछ स्थान जगह दो।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, आशीर्वाद हमें दो॥
जिनवर के चरणों में नमन,
भगवन् के चरणों में नमन।
ईश्वर के चरणों में नमन,
अर्हन् के चरणों में नमन॥१॥
श्री जिन सहस्रनाम नाम से प्रभु के, नाम हजारों पूजें।
तीर्थंकर अरिहन्त प्रभु के, जय जयकारे गूँजे॥
जो जन जिन नामों को ध्याता, बुद्धि शुद्धि उसकी हो।
मनवांछित फल वह पा जाता, ऋद्धि-सिद्धि उसकी हो॥

जिनवर के चरणों में नमन,
भगवन् के चरणों में नमन।
ईश्वर के चरणों में नमन,
अर्हन् के चरणों में नमन॥२॥

सहस्रनाम के भजन हवन कर, हो उत्तीर्ण परीक्षा।
मिटें रोग दुख निर्धनता सब, हो मंगलमय दीक्षा॥

जिनवर के चरणों में नमन,
भगवन् के चरणों में नमन।
ईश्वर के चरणों में नमन,
अर्हन् के चरणों में नमन॥३॥

कभी महामारी ना फैले, सुखी स्वस्थ हों प्राणी।
चित् चैतन्य विलासी होकर, बनें विश्व कल्याणी॥

जिनवर के चरणों में नमन,
भगवन् के चरणों में नमन।
ईश्वर के चरणों में नमन,
अर्हन् के चरणों में नमन॥४॥

(हरिगीतिका)

जो घाति कर्म विनाश करके, हो गये अरिहन्त हैं।
जिनके सहस्त्रों नाम भज के, पूजते सौधर्म हैं॥
हम भी सहस्त्रों अर्घ्य लेकर, नाम भज मंगल करें।
'सुव्रत' तभी 'विद्या' चरण भज, नर जनम उज्ज्वल करें॥

(दोहा)

एक हजार आठ चढ़ाए सहस्रनाम के अर्घ्य।
महा समुच्चय अर्घ्य ले, करें धर्म के पर्व॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्त्र-नामधारी-श्रीजिनाय महासमुच्चय अर्घ्यं...।

महासमुच्चय जयमाला

(ज्ञानोदय)

यह संसार रहा पुद्गलमय, दुख कर्मों का मोहालय।
लेकिन शुद्ध स्वरूपी आतम, रहा सुखों का मोक्षालय॥
सो आतम का नाम न कुछ भी, सिद्ध अवस्था में होता।
पर संसार दशा में कुछ भी, नाम बिना कैसे होता॥१॥
अतः जन्म से मरण काल तक, नाम चलें संसारी के।
मरने पर भी सदियों तक तो, नाम चलें व्यवहारी के॥
शुभ नामों से पुण्य धर्म हों, कर्म कटें संसारी के।
अशुभ नाम से पाप कष्ट हो, लक्षण हैं बीमारी के॥२॥
सो आचार्य महागुरुओं ने, नामकर्म संस्कार कहे।
धर्म लोक व्यवहार चलाने, नामकरण की क्रिया कहे॥
शुभ-शुभ नाम अगर होता तो, बालक सुखी प्रसन्न रहें।
अशुभ नाम से दीन हीन हों, छिन्न-भिन्न वा खिन्न रहें॥३॥
सो अरिहन्त देव की पूजा, करके गुरु पूजा करके।
सार्थक नाम रखो बच्चों के, सहस्रनाम से चुनकर के॥
वंश वृद्धि के योग्य नाम हों, दया धर्म परिचायक हों।
मात-पिता-गुरु के सेवक हों, मोक्षमार्ग के नायक हों॥४॥
इसी भावना से तीर्थंकर, प्रभु के नाम रखे जाते।
धर्म तीर्थ का करें प्रवर्तन, निज चैतन्य दशा पाते॥
वो सहस्रनाम हैं जिनके, नाम मंत्र सौधर्म भजे।
चित्तविरामी अंतर्यामी, समवसरण की सभा सजे॥५॥
अल्प बुद्धि से हमने भी तो, सहस्रनाम को पूजा है।
लगे नाम में कलंक ना कुछ भी, अंतर्मन यूँ गूंजा है॥

प्रभु अरिहन्त सिद्ध के जैसे, प्राणी सार्थक नाम करें।
'विद्या' के 'सुव्रतसागर' की, शिक्षा सुन कल्याण करें॥६॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्र-नामधारी-श्रीजिनाय महासमुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सहस्रनाम स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, सहस्रनाम जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री जिनसहस्रनाम आरती

(लय–छूम छूम छन ना...ना...)

छूम छूम छन ना ना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया, बाबा करूँ आरतिया॥
वृषभनाथ के नाम हजारों, सहस्रनाम के दीप उजारो।
जिनको शीश झुकाएँ–बाबा करूँ आरतिया॥
छूम छूम छन ना ना बाजे...।
इन्द्र जिनेन्द्र देव को पूजें, नाम हजारों के स्वर गूँजे।
करें महोत्सव गाएँ–बाबा करूँ आरतिया॥
छूम छूम छन ना ना बाजे...।
मंदबुद्धि भी होती पैनी, कर्म हरे दे मोक्ष नसैनी।
हम भी पाप नशाएँ–बाबा करूँ आरतिया॥
छूम छूम छन ना ना बाजे...।
रोग शोक दुख जग के टारो, भवसागर से पार उतारो।
'सुव्रत' छाया पाएँ–बाबा करूँ आरतिया॥
छूम छूम छन ना ना बाजे...।

===

आरती

(लय–भक्ति बेकरार है...)

समवशरण सुखकार है, भक्ति अपरम्पार है।
श्री सहस्रनाम विधान की, आरती बारम्बार है॥

णमोकार के प्रथम पूज्य हो, परमेष्ठी अंतर्यामी। परमेष्ठी..
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, समवसरण श्री के स्वामी। समवसरण.
समवसरण सुखकार...
घातिकर्म के परम विजेता, कर्म तिरेसठ नाश किए। कर्म..
प्रभु धारें छ्यालीस मूलगुण, हम दर्शन की आस लिए॥प्रभु..
समवसरण सुखकार...
जो पूजे अरिहन्तचक्र वो, पाप हरे यश–धन पाए। पाप...
दीक्षा ले फिर स्वर्ग भोगकर, मुनि अरिहन्त दशा पाए। मुनि...
समवसरण सुखकार...
गंधकुटी में सिंहासन पर, कमलासन के ऊपर हो। कमलासन.
मुक्तिवधू से करें स्वयंवर, पहुँचे लोक शिखर पर हो॥ पहुँचे...
समवसरण सुखकार...
'सुव्रत' चरण शरण में आए, पूजा करें प्रार्थनाएँ। पूजा...
पाप हरो सुख शान्ति करो, प्रभु मंगल करें भावना में॥
प्रभु... समवसरण सुखकार...

❑ ❑ ❑

श्रीजिनसहस्त्रनाम-स्तोत्र

(प्रस्तावना)

स्वयं-भुवे नमस्तुभ्य-मुत्पाद्यात्मान-मात्मनि।
स्वात्म-नैव तथोद्भूत - वृत्तयेऽचिन्त्य-वृत्तये॥ १॥
नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मी-भर्त्रे नमोऽस्तु ते।
विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर॥ २॥
काम - शत्रुहणं देव-मामनन्ति मनीषिणः।
त्वामान-मत्सुरेण्मौलि-भा-मालाभ्यर्चित-क्रमम्॥ ३॥
ध्यान - दुर्घण-निर्भिन्न-घन- घाति - महातरुः।
अनंत-भव-सन्तान, जयादासी-रनन्तजित्॥ ४॥
त्रैलोक्य - निर्जया-वाप्त - दुर्दर्प-मति-दुर्जयम्।
मृत्युराजं विजित्यासीज्-जिन! मृत्युञ्जयो भवान्॥ ५॥
विधूताशेष - संसार - बन्धनो भव्य-बान्धवः।
त्रिपुरारिस्-त्वमीशाऽसि जन्म-मृत्यु-जरान्तकृत्॥ ६॥
त्रिकाल-विषयाशेष - तत्त्व - भेदात् त्रिधोत्थितम्।
केवलाख्यं दधच्चक्षुस्-त्रिनेत्रोऽसि त्वमीशितः॥ ७॥
त्वामन्ध-कान्तकं प्राहु-र्मोहान्धासुर-मर्दनात्।
अर्द्धं ते नारयो यस्मा-दर्ध-नारीश्वरोऽस्यतः॥ ८॥
शिवः शिव-पदाध्यासाद् दुरितारि - हरो हरः।
शङ्करः कृतशं लोके शम्भवस्त्वं भवन्सुखे॥ ९॥
वृषभोऽसि जगज्ज्येष्ठः पुरुः पुरु-गुणोदयैः।
नाभेयो नाभि - संभूते-रिक्ष्वाकु-कुल-नन्दनः॥ १०।
त्वमेकः पुरुष-स्कन्धस्-त्वं द्वे लोकस्य लोचने।
त्वं त्रिधा बुद्ध-सन्मार्गस्-त्रिज्ञस्-त्रिज्ञान-धारकः॥११॥

चतुःशरण-माङ्गल्य-मूर्तिस्त्वं चतुरस्रधीः।
पञ्च-ब्रह्ममयो देव! पावनस्त्वं पुनीहि माम्॥१२॥
स्वर्गा-वतरणे तुभ्यं सद्यो-जातात्मने नमः।
जन्माभिषेक-वामाय वामदेव नमोऽस्तु ते॥१३॥
सन्निष्क्रान्ता-वघोराय परं प्रशम-मीयुषे।
केवल-ज्ञान-संसिद्धा-वीशानाय नमोऽस्तु ते॥१४॥
पुरस्-तत्पुरुषत्वेन विमुक्ति-पद-भाजिने।
नमस्-तत्पुरुषावस्थां भाविनीं तेऽद्य बिभ्रते॥१५॥
ज्ञानावरण-निर्ह्रासान्-नमस्तेऽनन्त - चक्षुषे।
दर्शना-वरणोच्छेदान्-नमस्ते विश्व-दृश्वने॥१६॥
नमो दर्शन - मोहघ्ने क्षायिकामल-दृष्टये।
नमश्चारित्र - मोहघ्ने विरागाय महौजसे॥१७॥
नमस्तेऽनन्त - वीर्याय नमोऽनन्त - सुखात्मने।
नमस्तेऽनन्त-लोकाय लोका-लोकावलोकिने॥ १८॥
नमस्तेऽनन्त - दानाय नमस्तेऽनन्त-लब्धये।
नमस्तेऽनन्त - भोगाय नमोऽनन्तो-पभोगिने॥१९॥
नमः परमयोगाय- नमस्तुभ्य-मयोनये।
नमः परम-पूताय नमस्ते परमर्षये॥२०॥
नमः परम-विद्याय नमः पर-मतच्छिदे।
नमः परम-तत्त्वाय नमस्ते परमात्मने॥ २१॥
नमः परम-रूपाय नमः परम-तेजसे।
नमः परम-मार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने॥ २२॥
परमर्द्धिजुषे धाम्ने परमज्योतिषे नमः।
नमः पारेतमः-प्राप्त - धाम्ने परतरात्मने ॥ २३॥

नमः क्षीण-कलङ्काय क्षीण-बन्ध! नमोऽस्तु ते।
नमस्ते क्षीण-मोहाय क्षीण-दोषाय ते नमः॥२४॥
नमः सुगतये तुभ्यं शोभनां गतिमीयुषे।
नमस्तेऽ-तीन्द्रियज्ञान-सुखाया-निन्द्रियात्मने ॥ २५॥
काय-बन्धन-निर्मोक्षा-दकायाय नमोऽस्तु ते।
नमस्तुभ्य-मयोगाय योगिनामधियोगिने॥२६॥
अवेदाय नमस्तुभ्य-मकषायाय ते नमः।
नमः परम - योगीन्द्र -वन्दिताङ्घ्र-द्वयाय ते ॥२७॥
नमः परम-विज्ञान! नमः परम-संयम!
नमः परम - दृग्दृष्ट, परमार्थाय ते नमः॥२८॥
नमस्तुभ्य-मलेश्याय शुक्ललेश्यांश-क-स्पृशे।
नमो भव्ये-तरावस्था, व्यतीताय विमोक्षिणे॥२९॥
संज्ञ्यसंज्ञि-द्वयावस्था, व्यतिरिक्ता-मलात्मने।
नमस्ते वीतसंज्ञाय, नमः क्षायिक-दृष्टये॥ ३०॥
अनाहाराय तृप्ताय, नमः परम-भाजुषे।
व्यतीता-शेषदोषाय, भवाब्धेः पारमीयुषे॥ ३१॥
अजराय नमस्तुभ्यं, नमस्तेस्ता-दजन्मने।
अमृत्यवे नमस्तुभ्य-मचलाया-क्षरात्मने॥३२॥
अलमास्तां गुणस्तोत्र, मनन्तास्-तावका गुणाः।
त्वां नामस्मृति-मात्रेण, पर्युपासि-सिषामहे॥ ३३॥
एवं स्तुत्वा जिनं देवं, भक्त्या परमया सुधीः।
पठे-दष्टोत्तरं नाम्नां, सहस्रं पाप-शान्तये॥३४॥

इति जिनसहस्रनामस्तोत्रप्रस्तावना

प्रथमशतकम्

प्रसिद्धाष्ट–सहस्रेद्ध–लक्षणं त्वां गिरां पतिम्।
नाम्ना–मष्ट –सहस्रेण तोष्टुमोऽ–भीष्ट – सिद्धये॥ १॥
श्रीमान् स्वयंभू–र्वृषभः शंभवः शंभु–रात्मभूः।
स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभू–रपुनर्भवः॥ २॥
विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्–चक्षु–रक्षरः।
विश्वविद् विश्वविद्येशो विश्वयोनि–रनश्वरः॥ ३॥
विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः॥ ४॥
विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्ति–र्जिनेश्वरः।
विश्वदृग्–विश्वभूतेशो विश्वज्योति–रनीश्वरः॥ ५॥
जिनो जिष्णु–रमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पतिः।
अनन्तजिद–चिन्त्यात्मा भव्य–बन्धु–रबन्धनः॥ ६॥
युगादि–पुरुषो ब्रह्मा पञ्च – ब्रह्ममयः शिवः।
परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः॥ ७॥
स्वयंज्योति–रजोऽजन्मा ब्रह्म–योनि–रयोनिजः।
मोहारि–विजयी जेता धर्म–चक्री दयाध्वजः॥ ८॥
प्रशान्तारि–रनन्तात्मा योगी योगी–श्वरार्चितः।
ब्रह्मविद् ब्रह्म–तत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्या–विद्यतीश्वरः॥ ९॥
शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः।
सिद्धः सिद्धान्त–विद्ध्येयः सिद्धसाध्यो–जगद्धितः॥ १०॥
सहिष्णु–रच्युतोऽनन्तः प्रभविष्णु–र्भवोद्भवः।
प्रभूष्णु–रजरोऽजर्यो भ्राजिष्णु–र्धीश्वरोऽव्ययः॥ ११॥
विभाव–सुर–सम्भूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः।
परमात्मा परंज्योतिस्–त्रिजगत्–परमेश्वरः ॥ १२॥

॥ इति श्रीमदादिशतम् ॥ १॥

द्वितीयशतकम्

दिव्यभाषा-पतिर्दिव्यः पूतवाक्-पूतशासनः।
पूतात्मा परम-ज्योति-र्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः॥ १॥
श्रीपति-र्भगवा-नर्हन्-नरजा विरजाः शुचिः।
तीर्थकृत्-केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोऽमलः॥ २॥
अनंत-दीप्ति-र्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्धः प्रजापतिः।
मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः॥ ३॥
निरञ्जनो जगज्ज्योति-र्निरुक्तोक्ति-रनामयः।
अचल-स्थिति-रक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणु-रक्षयः॥ ४॥
अग्रणी-र्ग्रामणी-र्नेता प्रणेता न्याय-शास्त्रकृत्।
शास्ता धर्मपति-र्धर्म्यो धर्मात्मा धर्म-तीर्थकृत्॥ ५॥
वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतु-र्वृषायुधः।
वृषो वृषपति-र्भर्ता वृषभाङ्को वृषोद्भवः॥ ६॥
हिरण्य-नाभि-र्भूतात्मा भूतभृद् भूतभावनः।
प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तकः॥ ७॥
हिरण्यगर्भः श्रीगर्भः प्रभूत-विभवोऽभवः।
स्वयंप्रभुः प्रभ-ूतात्मा भूतनाथो जगत्प्रभुः॥ ८॥
सर्वादिः सर्वदृक्-सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः।
सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्ववित् सर्वलोकजित्॥ ९॥
सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुत्, सुवाक् सूरि-र्बहुश्रुतः।
विश्रुतो विश्वतः पादो विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः॥ १०॥
सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
भूत-भव्य-भवद्भर्ता विश्व- विद्या-महेश्वरः॥११॥

॥ इति दिव्यादिशतम् ॥ २॥

तृतीयशतकम्

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः प्रष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठ-धीः।
स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः श्रेष्ठोऽणिष्ठो गरिष्ठ-गीः॥ १॥
विश्वभृद् विश्वसृड् विश्वेड्, विश्वभुग-विश्व-नायकः।
विश्वासी-र्विश्वरूपात्मा, विश्वजिद्-विजितान्तकः॥ २॥
विभवो विभयो वीरो, विशोको विजरो जरन्।
विरागो विरतोऽसङ्गो, विविक्तो वीत-मत्सरः॥ ३॥
विनेय-जनता- बन्धु-र्विलीना-शेष-कल्मषः।
वियोगो योगविद्-विद्वान् विधाता सुविधिः सुधीः॥ ४॥
क्षान्तिभाक् पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक् सलिलात्मकः।
वायुमूर्ति-रसङ्गात्मा वह्निमूर्ति-रधर्मधक्॥५॥
सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्राम-पूजितः।
ऋत्विग-यज्ञपति-र्याज्यो यज्ञाङ्ग-ममृतं हविः॥ ६॥
व्योम-मूर्ति-रमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः।
सोम-मूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्य-मूर्ति-र्महाप्रभः॥ ७॥
मन्त्रविन् -मन्त्रकृन् -मन्त्री मन्त्र-मूर्ति-रनन्तगः।
स्वतन्त्रस्-तन्त्रकृत्-स्वन्तः कृतान्तान्तः कृतान्तकृत्॥ ८॥
कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्यः कृत-क्रतुः।
नित्यो मृत्युञ्जयोऽमृत्यु-रमृतात्मा-मृतोद्भवः॥ ९॥
ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्मा ब्रह्मात्मा ब्रह्म-संभवः।
महाब्रह्म-पतिर्ब्रह्मेड् महाब्रह्म-पदेश्वरः॥१॥
सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञान - धर्म - दम - प्रभुः।
प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा पुराण-पुरुषोत्तमः॥ ११॥

॥ इति स्थविष्ठादिशतम्॥ ३॥

चतुर्थ-शतकम्

महाशोक - ध्वजोऽशोकः कः स्रष्टा पद्म-विष्टरः।
पद्मेशः पद्म-सम्भूतिः पद्मनाभि-रनुत्तरः॥ १॥
पद्मयोनि-र्जगद्योनि-रित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः।
स्तवनार्हो हृषीकेशो जित-जेयः कृत-क्रियः॥ २॥
गणाधिपो गण-ज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः।
गुणाकरो गुणाम्भोधि-र्गुणज्ञो गुणनायकः॥ ३॥
गुणादरी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगी-र्गुणः।
शरण्यः पुण्य-वाक्पूतो वरेण्यः पुण्य-नायकः॥ ४॥
अगण्यः पुण्यधी-र्गुण्यः पुण्यकृत्-पुण्यशासनः।
धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्य-निरोधकः॥५॥
पापापेतो विपापात्मा विपाप्मा वीत-कल्मषः।
निर्द्वन्द्वो निर्मदः शान्तो निर्मोहो निरु-पद्रवः॥ ६॥
निर्निमेषो निराहारो निष्क्रियो निरु-पप्लवः।
निष्कलङ्को निरस्तैना निर्धूतागा निरास्रवः॥ ७॥
विशालो विपुलज्योति-रतुलोऽचिन्त्य-वैभवः।
सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुभृत्-सुनय-तत्त्ववित्॥ ८॥
एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विह-तान्तकः॥ ९॥
पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान्॥ १०॥
कविः पुराण-पुरुषो वर्षीयान्-वृषभः परुः।
प्रतिष्ठा-प्रसवो हेतु-र्भुवनैक-पितामहः॥ ११॥

॥ इति महाशोकध्वजादिशतम् ॥ ४॥

पञ्चमशतकम्

श्रीवृक्ष-लक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः।
निरक्षः पुण्डरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः॥ १॥
सिद्धिदः सिद्ध-संकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः।
बुद्ध-बोध्यो महाबोधि-र्वर्धमानो महर्धिकः॥ २॥
वेदाङ्गो वेदविद्-वेद्यो जातरूपो विदांवरः।
वेद-वेद्यः स्व-संवेद्यो विवेदो वदतांवरः॥ ३॥
अनादि-निधनो व्यक्तो व्यक्तवाग् व्यक्त-शासनः।
युगादिकृत् युगाधारो युगादि-र्जगदादिजः॥ ४॥
अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोऽ-तीन्द्रियार्थदृक्।
अनिन्द्रियोऽ-हमिन्द्रार्च्यो महेन्द्र-महितो महान्॥ ५॥
उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भव-तारकः।
अगाह्यो गहनं गुह्यं पराघ्र्यः परमेश्वरः॥ ६॥
अनन्तर्द्धि-रमेयर्द्धि-रचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः।
प्राग्र्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्रः प्रत्यग्रोऽग्र्योऽ-ग्रिमोऽग्रजः॥ ७॥
महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः।
महायशा महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः॥८॥
महाधैर्यो महावीर्यो महासम्पन्- -महाबलः।
महाशक्ति-र्महाज्योति-र्महाभूति-र्महाद्युतिः ॥९॥
महामति-र्महानीति-र्महाक्षान्ति - र्महादयः।
महाप्राज्ञो महाभागो महानन्दो महाकविः ॥ १०॥
महामहा महाकीर्ति-र्महाकान्ति-र्महावपुः।
महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः॥११॥
महामहपतिः प्राप्त- महाकल्याण-पञ्चकः।
महाप्रभु-र्महाप्राति-हार्याधीशो महेश्वरः॥१२॥

॥ इति श्रीवृक्षादिशतम्॥ ५॥

षष्ठशतकम्

महामुनि-र्महामौनी महाध्यानो महादमः।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः॥ १॥
महाव्रत-पतिर्महो महाकान्ति-धरोऽधिपः।
महामैत्री - मयोऽमेयो महोपायो महोमयः॥ २॥
महाकारुणिको मन्ता महामन्त्रो महायतिः।
महानादो महाघोषो महेज्यो महसांपतिः॥ ३॥
महाध्वर-धरो धुर्यो महौदार्यो महिष्ठवाक्।
महात्मा महसांधाम महर्षि-र्महितोदयः॥ ४॥
महाक्लेशाङ्कुशः शूरो महाभूत-पतिर्गुरुः।
महापराक्रमोऽ-नन्तो महाक्रोध-रिपुर्वशी ॥५॥
महाभवाब्धि-संतारी महामोहाद्रि-सूदनः।
महागुणाकरः क्षान्तो महायोगीश्वरः शमी॥ ६॥
महाध्यानपति-र्ध्याता-महाधर्मा महाव्रतः।
महाकर्मा-रिहात्मज्ञो महादेवो महेशिता॥ ७॥
सर्वक्लेशा-पहः साधुः सर्वदोषहरो हरः।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः॥ ८॥
सर्व-योगीश्वरोऽचिन्त्यः श्रुतात्मा विष्ट-रश्रवाः।
दान्तात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः॥ ९॥
प्रधान-मात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः।
प्रक्षीण-बन्धः कामारिः क्षेमकृत् क्षेमशासनः॥ १०॥
प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः।
प्रमाणं प्रणिधि-र्दक्षो दक्षिणोऽध्वर्यु-रध्वरः॥ ११॥
आनन्दो नन्दनो नन्दो वन्द्योऽनिन्द्योऽभिनन्दनः।
कामहा कामदः काम्यः काम-धेनु-रिरिञ्जयः॥१२॥

॥ इति महामुन्यादिशतम्॥ ६॥

सप्तमशतकम्

असंस्कृत-सुसंस्कारः प्राकृतो वैकृतान्त-कृत्।
अन्तकृत्-कान्तगुः कान्तश्-चिन्तामणि-रभीष्टदः॥ १॥
अजितोऽजित-कामारि-रमितोऽमित-शासनः।
जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितान्तकः॥ २॥
जिनेन्द्रः परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभि-स्वनः।
महेन्द्र-वन्द्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दनः॥३॥
नाभेयो नाभिजोऽजातः सुव्रतो मनुरुत्तमः।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वा-नधिकोऽधिगुरुः सुगीः॥ ४॥
सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः।
विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः॥ ५॥
क्षेमी क्षेमङ्करोऽक्षय्यः क्षेम-धर्म-पतिः क्षमी।
अग्राह्यो ज्ञान-निग्राह्यो ध्यान-गम्यो निरूत्तरः॥ ६॥
सुकृती धातु-रिज्यार्हः सुनयश्-चतुराननः।
श्रीनिवासश्-चतुर्वक्त्रश्-चतुरास्यश्-चतुर्मुखः ॥ ७॥
सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्-सत्यशासनः।
सत्याशीः सत्य-सन्धानः सत्यः सत्य-परायणः॥ ८॥
स्थेयान्-स्थवीयान्-नेदीयान्-दवीयान्-दूरदर्शनः।
अणो-रणीयान-नणु-र्गुरु-राद्यो गरीयसाम् ॥९॥
सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः।
सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदयः॥ १०॥
सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत्।
सुगुप्तो गुप्तिभृद् गोप्ता लोकाध्यक्षो दमेश्वरः॥ ११॥

॥ इति असंस्कृतादिशतम्॥ ७॥

अष्टमशतकम्

बृहद्-बृहस्पति-र्वाग्मी वाचस्पति-रुदारधीः।
मनीषी धिषणो धीमाञ्-छेमुषीशो गिरांपतिः॥ १॥
नैक-रूपो नयोत्तुङ्गो नैकात्मा-नैक-धर्मकृत्।
अविज्ञेयोऽप्रत-र्क्यात्मा कृतज्ञः कृत-लक्षणः॥ २॥
ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः॥३॥
लक्ष्मीवांस्-त्रिदशाध्यक्षो दृढीयानिन ईशिता।
मनोहरो मनोज्ञाङ्गो धीरो गम्भीर-शासनः॥ ४॥
धर्मयूपो दयायागो धर्म-नेमि-र्मुनीश्वरः।
धर्म-चक्रायुधो देवः कर्महा धर्म-घोषणः॥ ५॥
अमोघवाग-मोघाज्ञो निर्मलोऽमोघ-शासनः।
सुरूपः सुभगस्-त्यागी समयज्ञः समाहितः॥ ६॥
सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्-स्वस्थो नीरजस्को-निरुद्धवः।
अलेपो निष्कलङ्कात्मा वीतरागो गतस्पृहः॥ ७॥
वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा निःसपत्नो जितेन्द्रियः।
प्रशान्तोऽनन्त-धामर्षि-र्मङ्गलं मलहानयः॥८॥
अनीदृगु-पमाभूतो दिष्टि-र्दैव-मगोचरः।
अमूर्तो मूर्ति-मानेको नैको नानैक-तत्त्वदृक्॥ ९॥
अध्यात्म-गम्योऽगम्यात्मा योगविद्योगि-वन्दितः।
सर्वत्रगः सदाभावी त्रिकाल-विषयार्थदृक्॥ १०॥
शङ्करः शंवदो दान्तो दमी क्षान्ति-परायणः।
अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञः परात्परः॥११॥
त्रिजगद्-वल्लभोऽभ्यर्च्यस्-त्रिजगन्-मङ्गलोऽदयः।
त्रिजगत्पति-पूज्यांघ्रिस्-त्रिलोकाग्र-शिखामणिः॥ १२॥

॥ इति बृहदादिशतम्॥ ८॥

नवमशतकम्

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढ़व्रतः।
सर्व-लोकातिगः पूज्यः सर्व-लोकैक-सारथिः॥ १॥
पुराणः पुरुषः पूर्वः कृत-पूर्वाङ्ग-विस्तरः।
आदिदेवः पुराणाद्यः पुरु-देवोऽधिदेवता॥२॥
युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादि-स्थिति-देशकः।
कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याण-लक्षणः॥ ३॥
कल्याण-प्रकृति-र्दीप्त - कल्याणात्मा विकल्मषः।
विकलङ्कः कलातीतः कलिलघ्नः कलाधरः॥ ४॥
देव-देवो जगन्नाथो जगद्बन्धु-र्जगद्विभुः।
जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जग-दग्रजः॥ ५॥
चराचर-गुरुर्गोप्यो गूढ़ात्मा गूढ़-गोचरः।
सद्योजातः प्रकाशात्मा ज्वलज्-ज्वलन-सत्प्रभः॥ ६॥
आदित्य-वर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः।
सुवर्णवर्णो रुक्माभः सूर्यकोटि-समप्रभः॥७॥
तपनीय-निभस्तुङ्गो बालार्का-भोऽनल-प्रभः।
संध्याभ्र-बभ्रु-र्हेमाभस्-तप्त-चामीकरच्छविः॥ ८॥
निष्टप्त-कनकच्छायः कनत्काञ्चन-सन्निभः।
हिरण्य-वर्णः स्वर्णाभः शातकुम्भ-निभ-प्रभः॥ ९॥
द्युम्नाभो जात-रूपाभस्-तप्त-जाम्बू-नदद्युतिः।
सुधौत-कलधौत-श्रीः प्रदीप्तो हाटक-द्युतिः॥ १०॥
शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरः क्षमः।

शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः॥ ११॥
शान्तिनिष्ठो मुनिज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः।
शान्तिदः शान्तिकृच्छान्तिः कान्तिमान् कामितप्रदः॥ १२॥
श्रेयोनिधि-रधिष्ठान-मप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः।
सुस्थिरः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्-प्रथितः पृथुः॥ १३॥

॥ इति त्रिकालदर्श्यादिशतम्॥ ९॥

दशमाष्टोत्तरशतम्

दिग्वासा वात-रसनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः।
निष्किञ्चनो निराशंसो ज्ञानचक्षु-रमोमुहः॥ १॥
तेजोराशि-रनन्तौजा ज्ञानाब्धिः शील-सागरः।
तेजोमयोऽमितज्योति-र्ज्योतिर्मूर्तिस्-तमोऽपहः॥ २॥
जगच्चूड़ामणि-र्दीप्तः शंवान्विघ्न-विनायकः।
कलिघ्नः कर्म-शत्रुघ्नो लोकालोक-प्रकाशकः॥ ३॥
अनिद्रालु-रतन्द्रालु-र्जागरुकः प्रमामयः।
लक्ष्मी-पति-र्जगज्ज्योति-र्धर्मराजः प्रजा-हितः॥ ४॥
मुमुक्षु-र्बन्ध-मोक्षज्ञो जिताक्षो जित-मन्मथः।
प्रशान्त-रस-शैलूषो भव्य-पेटक-नायकः॥ ५॥
मूलकर्त्ता-खिलज्योति-र्मलघ्नो मूल-कारणः।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्-छ्रायसोक्ति-र्निरुक्तवाक्॥६॥
प्रवक्ता वचसा-मीशो मारजिद्-विश्व-भाववित्।
सुतनुस्-तनुनिर्मुक्तः सुगतो हत-दुर्नयः॥ ७॥
श्रीशः श्रीश्रित-पादाब्जो वीत-भीर-भयङ्करः।
उत्सन्न-दोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोक-वत्सलः॥ ८॥

लोकोत्तरो लोकपति-र्लोकचक्षु-रपारधीः।
धीर-धीर्बुद्ध- सन्मार्गः शुद्धः सूनृत-पूतवाक्॥ ९॥
प्रज्ञा-पारमितः प्राज्ञो यति-र्निय-मितेन्द्रियः।
भदन्तो भद्रकृद् भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः॥ १०॥
समुन्मूलित-कर्मारिः कर्म-काष्ठा-शुशुक्षणिः।
कर्मण्यः कर्मठः प्रांशु-र्हेयादेय-विचक्षणः॥ ११॥
अनंत-शक्ति-रच्छेद्यस्-त्रिपुरारिस्-त्रिलोचनः।
त्रिनेत्रस्-त्र्यम्बकस्-त्र्यक्षः केवलज्ञान-वीक्षणः॥ १२॥
समन्तभद्रः शान्तारि-र्धर्माचार्यो दयानिधिः।
सूक्ष्मदर्शी जितानङ्गः कृपालु-र्धर्मदेशकः॥ १३॥
शुभंयुः सुखसाद्भूतः पुण्यराशि-रनामयः।
धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्य-नायकः॥ १४॥

॥ इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ॥ १०॥

उपसंहार

धाम्नांपते! तवामूनि नामान्यागम-कोविदैः।
समुच्चितान्-यनुध्यायन्-पुमान्-पूतस्मृति-र्भवेत्॥ १॥
गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्-गोचरो मतः।
स्तोता तथाप्य-संदिग्धं त्वत्तोऽभीष्ट-फलं भजेत्॥ २॥
त्वमतोऽसि जगद्बन्धुस्-त्वमतोऽसि जगद्भिषक्।
त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः॥ ३॥
त्वमेकं जगतां ज्योतिस्-त्वं द्विरूपो-पयोगभाक्।
त्वं त्रिरूपैक-मुक्त्यङ्गं स्वोत्थानन्त-चतुष्टयः॥ ४॥
त्वं पञ्च-ब्रह्म-तत्त्वात्मा पञ्चकल्याण-नायकः।

षड्भेद-भाव-तत्त्वज्ञस्-त्वं सप्त-नय-संग्रहः॥ ५॥
दिव्याष्ट- गुण-मूर्तिस्त्वं नव-केवल-लब्धिकः।
दशावतार-निर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर!॥६॥
युष्मन्नामावली - दृब्ध - विलसत्-स्तोत्र-मालया।
भवन्तं वरिवस्यामः प्रसीदा-नुगृहाण नः॥७॥
इदं स्तोत्र-मनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः।
यः संपाठं पठत्येनं स स्यात्कल्याण-भाजनम्॥ ८॥
ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान् पठतु पुण्यधीः।
पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं परमा-मभिलाषुकः॥ ९॥
स्तुत्वेति मघवा देवं चराचर-जगद्गुरुम्।
ततस्तीर्थ-विहारस्य व्यधात्-प्रस्तावना-मिमाम्॥ १०॥
स्तुतिः पुण्यगुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्ठितार्थो भवान् स्तुत्यः फलं नैःश्रेयसं सुखम्॥ ११॥

(शार्दूलविक्रीडितम्)

यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित्,
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नतरां ध्याता स्वयं कस्यचित्।
योनन्तॄन् नयते नमस्कृतिमलं नन्तव्य-पक्षेक्षणः,
स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरुर्देवः पुरुः पावनः॥ १२॥
तं देवं त्रिदशाधि-पार्चित-पदं घाति-क्षया-नन्तरम्,
प्रोत्थानन्त-चतुष्टयं जिनमिनं भव्याब्जि-नीनामिनम्।
मानस्तम्भ-विलोकना-नतजगन्-मान्यं त्रिलोकी-पतिम्,
प्राप्ताचिन्त्य-बहिर्विभूति-मनघं भक्त्या प्रवन्दामहे॥ १३॥

॥ इति श्रीभगवज्जिनाष्टोतर सहस्रनामस्तोत्रम् समाप्तम्॥